नित्यकर्म विधि ।

तथा

देवपूजा पद्धति ।

संग्रहकर्त्ता :-

वेदान्त-तीर्थ पं० मायारामजी, शास्त्री ।

तथा

पं० रघुवरदयालुजी शर्म्मा, आयुर्वेदाचार्य्य ।

संशोधक :-

पं० रघुनाथजी त्रिवेदी, धर्मशास्त्री ।

तथा

पं० ताराचन्द्रजी शास्त्री, ज्यौतिषाचार्य्य ।

प्रकाशक :-

ठाकुरदास सुरेका ।

सलकिया ।

पञ्चम वार २५०००] हवड़ा । [वि० संवत १९९७

मूल्यः—प्रेमसे पढ़ना तथा कर्म करना ।

विषय सूची।

बड़े टाईपके कण्ठस्थ करने योग्य विषयोंको कण्ठकर लाभ उठाना चाहिये।

देवपूजन मन्त्रः ।

मंगलाचरणम्।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्। वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम्॥१॥ खर्व्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम्। प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्॥ दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम्। वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कर्मसु॥२॥ विघ्नध्वान्तनिवारणैकतरणि र्विघ्नाटवीहव्यवाट्। विघ्नव्यालकुलाभिमानगरुड़ो विघ्नेभपञ्चाननः॥ विघ्नोत्तुङ्गगिरिप्रभेदनपवि र्विघ्नाम्बुधे र्वाड़वो। विघ्नाघौघघनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः॥३॥ दधानं भृङ्गालीमनिशममले गण्डयुगले। ददानं सर्वार्थान्निजचरणसेवासुकृतिने॥ दयाधारं सारं निखिलनिगमानामनुदिनं। गजास्यं स्मेरास्यं तमिह कलये चित्तनिलये॥४॥ मुदा करात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकम्। कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्॥ अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम्। नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥५॥ यजामो गणेशं भजामो गणेशं जपामोगणेशंवदामोगणेशम्। स्मरामो गणेशं स्मरामो गणेशं नमामो गणेशं नमामो गणेशम्॥६॥ मदनदहनके पुत्रको सुमरूं बारम्बार। विघ्न मिटै सङ्कट कटै मंगल होय अपार॥७॥ लम्बोदर भुज चार हैं नेत्र तीन रंगलाल।

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं, पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् ।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्ज्वलकान्तिकान्तं, विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ॥

[illegible]
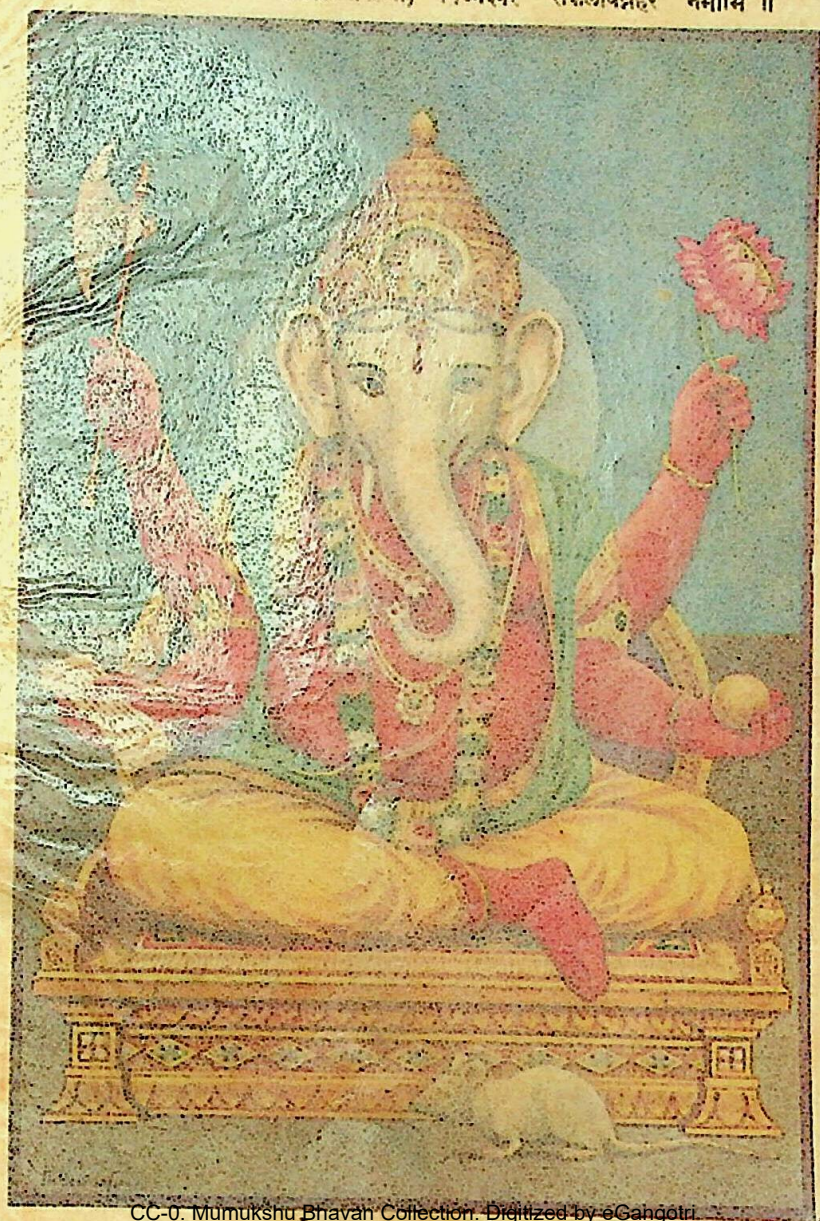
मंगलाचरणम् ।

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् ।१।
खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम् । प्र-
स्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ॥ द-
न्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम् ।
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम् ॥२॥
विघ्नध्वान्तनिवारणैकतरणि विघ्नाटवीहव्यवाट् ।
विघ्नव्यालकुलाभिमानगरुडो विघ्नेभपञ्चाननः ॥
विघ्नोत्तुङ्गगिरिप्रभेदनपवि विघ्नाम्बुधेर्वाडवो ।
विघ्नाघौघघनप्रचण्डपवनो विघ्नेश्वरः पातु नः ॥३॥
दधानं भृङ्गालीमविरामनमले गण्डयुगले । दधानं
सर्वार्थं निजचरणसेवासुकृतिने ॥ दधानं सारं
निखिलनिगमानामनुदिनं । गजास्यं स्मेरास्यं तमिह
कलये चित्तनिलये ॥४॥ मुदा करात्तमोदकं सदा
विमुक्तिसाधकम् । कलाधरावतंसकं विलासिलोक-
रक्षकम् ॥ अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम् ।
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥५॥ यजामो
गणेशं भजामो गणेशं जपामो गणेशं वदामो गणेशम् ।
स्मरामो गणेशं स्मरामो गणेशं नमामो गणेशं न-
मामो गणेशम् ॥६॥ मदनदहनके पुत्रको सुमरु
बारम्बार । विघ्न मिटै सङ्कट कटै मंगल होय अ-
पार ॥७॥ लम्बोदर भुज चार हैं नेत्र तीन रंगलाल ।

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं, पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम्।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्ज्वलकान्तिकान्तं, विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ॥

सेवक—ठाकुरदास सरेका।

नानावर्ण सुवेश है मुख प्रसन्न शशिभाल ॥८॥ विघ्ननिवारण सब सुखकारण भक्त उधारण ज्ञान-घनम् । दैत्यविदारण परशूधारण ऋद्धिकारण देव-वरम् ॥९॥ गिरिजा माता षण्मुखभ्राता शङ्कर ताता सौख्यकरम् । भूसुररक्षक मोदकभक्षक ज्ञानीलक्ष-क कीर्तिकरम् ॥१०॥ काटत बंधन सब दुखखण्डन गिरिजानन्दन पाशधरम् । दुःखविदारण मंगलका-रण करिबर धारण शीसवरम् ॥११॥ शुण्डादण्डम् तेजप्रचण्डं इन्दुखण्डं भालधरम् । मंगलकारण दु-र्जनमारण विपतिविदारण ऋद्धिकरम् ॥१२॥ करि-वदनविमण्डित ओज अखण्डित पूरणपण्डित ज्ञान परम् । गिरिनन्दिनिनन्दन असुरनिकन्दन सुर उर चन्दन कीर्तिकरम् ॥१३॥ भूषण मृगलक्षण वीर विचक्षण जनप्रणरक्षण पाशधरम् । जय जय गण-नायक खलगणघालक दाससहायक विघ्नहरम्॥१४॥ मनाऊँ एकदन्त महाराज, सुधारो सभी हमारा काज । रूप थारो कनकवरण राजै, देखकर महा-काल भाजै ॥१५॥ मूरति अतिसुन्दर साजै, दुःख सब दर्शनसे भागै । विघ्नहरण गणनाथजी, कृपा करो महाराज ॥१६॥ मैं तुम्हारो अब लियो आ-सरो, रखियो मेरी लाज । विनती सुण लीजो गण-राज, सुधारो सभी हमारा काज ॥१७॥

समर्पणम् ।

अनाद्यनन्त ऐश्वर्य-विशिष्ट ! अपरिमित-कोटि ब्रह्माण्डनायक ! वेदैकप्रतिपाद्य ! अगणितभक्ताभीष्ट-फलप्रद ! दीनबन्धो ! दीननाथ ! भक्तवत्सल ! भगवन् !

श्री श्री सत्यनारायण प्रभो !

यह

नित्यकर्म विधि तथा देवपूजा पद्धति !

पुस्तक रूपी

पुष्प

आपके चरण कमलों

में

समर्पण करता

हूँ ।

आपके चरण कमलों का

सेवक :—

ठाकुरदास सुरेका ।

सत्यनारायणं देवं वन्देऽहं कामदं प्रभुम् ।
लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमो नमः ॥

सेवक—ठाकुरदास सुरेका।
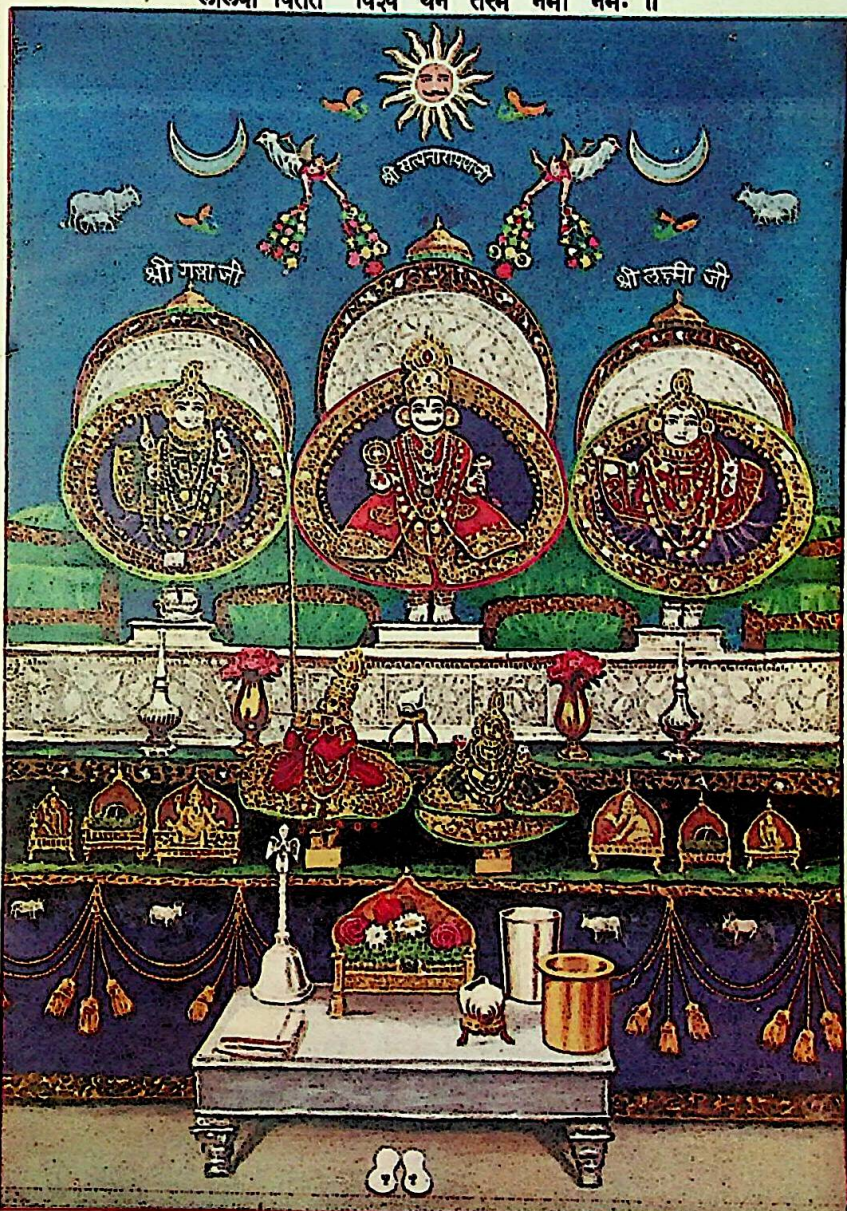
श्रीसत्यनारायणजी की स्तुति ।

सत्यदेव भगवानकी, शरण सदा सुख खान । सकल मनोरथ देत प्रभु, जो चाहे कल्याण ॥१॥ दीनबन्धु श्रीनाथजो, निजजन तारक ईश । द्रवहु सदा मम दास पैं, करुणामय जगदीश ॥२॥ परम पिता परमेश हे !, मैं पतितन सिरताज । बेगि उबारहु जानि निज, करहु सकल शुभकाज ॥३॥ तुम सम हे करुणानिधे, करत कौन उपकार । अगणित गणिकादिक तरै, साखि वेद हैं चार ॥४॥ दयासिन्धु नहिं देखते, भक्तनके दुःखभार । त्रिविध ताप दुख दूरकरि, भवसें करते पार ॥५॥ सत्यदेव तुमरी कथा, जगमें परम उदार । शरणागत तेहिं जो लहे, ताहि होत उद्धार ॥६॥ द्विजवर लक्कड़ीहार औ, साधु वैश्य परिवार । तुङ्गध्वज नृपकी कथा, जगप्रसिद्ध यह चार ॥७॥ इन भक्तनके काज प्रभु, प्रकटे बारंबार । सकल मनोरथ सिद्धिकरि, दिये परमपद सार ॥८॥ रटें निरन्तर नाम तव, कीरति गावें सार । घुमत फिरत आठों पहर, रचें चित्रपद सार ॥९॥ नारायण मम दास यह, चहि "ठाकुर" पहिचान । थकित शरण है आगिरा, नाथ रखो अब मान ॥१०॥ स्तुति प्रभुकी जो प्रेमसे, पढ़े कपट तजि नित्त । चार पदारथ देत तेहिं, प्रभु मनचाहा वित्त ॥११॥

भूमिका।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छत ँ समाः।

एवं त्वयि नान्यथतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥

भगवानके प्रपञ्चस्वरूप इस चराचर जगतमें मनुष्ययोनि ही सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि विहित कर्मके अनुष्ठान और निषिद्धकर्मके त्यागनेकी क्षमता मानव शरीरमें ही है। इसीलिये देवता भी इसकी कामना करते हैं। मनुष्य शरीरकी उपादेयता धर्माचरण के द्वारा ही है। जिस प्रकार प्राणवायुके बिना शरीरका रहना असम्भव है उसी प्रकार नित्य नैमित्तिक कर्मों के बिना मानव जीवनकी सफलता भी असम्भव है। इन कर्मों के न करनेसे मनुष्य पापका भागी होता है। यद्यपि इन आवश्यक आचार विचारके विषय तथा सन्ध्या, तर्पण और बलिवैश्यदेव आदि कर्मोंके अनुष्ठानकी विधिके लिये देववाणी संस्कृतमें अनेकानेक ग्रन्थरत्न भरे पड़े हैं किन्तु आजकल संस्कृत भाषाके पठन पाठनकी व्यवस्था जिस प्रकार शिथिल पड़ गयी है उससे इच्छा रहते हुए भी संस्कृत न जाननेके कारण कर्मोंके न करनेसे आचार विचारविहीन होकर मनुश्य नित्य पाप भागी बनते हैं। इन्हीं बातोंको ध्यानमें रखकर साधारण पढ़े लिखे मनुष्योंके उपकारार्थ धर्मप्राण सेठ ठाकुरदासजी सुरेकाने अपने तन, मन तथा-धनको यथायोग्य लगाकर बड़े अनुभवी विद्वानों द्वारा

स्मृतियों तथा गृह्यसूत्रों आदिके अन्वेषणसे संग्रह कराकर इस पुस्तकको प्रकाशित किया है। इस पुस्तकमें जीवनके सभी उपयोगी तथा आवश्यक सदाचार सम्बन्धी नित्य तथा नैमित्तिक कर्मोंका क्रमसे समावेश किया गया है। इसके सभी संस्करण उत्तरोत्तर आकार तथा प्रकारमें बढ़ते गये हैं। यथा प्रथम ५०००, द्वितीय १००००, तृतीय १००००, चतुर्थ २५००० तथा अबकी पञ्चमबार भी २५००० प्रतियां छपी हैं।
जपके पूर्वकी २४ तथा बादकी ८ मुद्राओंके करनेकी विधि तथा चित्र दिये गये हैं। जपभेदके अनुसार करमालाके भी ४ चित्र दिये हैं तथा सन्ध्यामें त्रिकाल गायत्री ध्यानके चित्र भी दिये हैं जिससे ध्येयके स्वरूपका यथावत् बोध होता है। देवपूजाविधि पहले संस्करणमें भी थी परन्तु पुण्याहवाचन, दुर्गा तथा लक्ष्मी पूजा आदि देकर इसमें भी विशेषताकी गयी है। प्रामाणिक शांकरभाष्यके अनुसार विष्णुसहस्रनाम पूरे १००० नामका दिया गया है। पुस्तकके प्रारम्भके "गृहस्थधर्म" तथा "स्त्रीधर्म" प्रकरण भी अतिउत्तम हैं। उन्हें आद्यन्त पढ़नेसे प्रतीत होता है कि जीवन सुखमय बनानेके लिये जितने अत्यावश्यक नियम हैं उन्हें यथासम्भव बतलानेकी चेष्टा की गयी है। पुस्तककी छपाई तथा कागज भी सुन्दर हैं। प्रति दिन पाठ करने योग्य विषयोंको मोटे अक्षरोंमें और ध्यानमें रखकर कर्म करनेके श्लोक उससे छोटे अक्षरोंमें दिये गये हैं। इसको आद्यन्त पढ़कर उसके अनुसार कर्म करके जीवनको सार्थक बनानेकी चेष्टा

करनी चाहिये, जिससे प्रकाशकका परिश्रम और अर्थव्यय सार्थक हो। इस भूमिकाके प्रसङ्गमें ही प्रकाशकका कुछ साधारण परिचय देनेका लोभ मैं सम्वरण नहीं कर सकता।

श्रीमान् सेठ विष्णुदयालजी सुरेका अपने पुत्र सेठ हरदयालजी सुरेकाको व्यापार तथा गृहस्थीका भार सौंपकर स्वयं काशीपुरीमें रहने लगे और वहां मणिकर्णिकाके समीप ब्रह्मनालमें शिवमन्दिर बनवाया। सेठजीके काशीवास होनेके पश्चात् उनके सुयोग्य पुत्र श्रीमान् सेठ हरदयालजी सुरेकाने भी सलकियामें श्रीसत्यनारायणजीका मन्दिर तथा धर्मशाला बनवाई। और भी अन्यान्य स्थानोंमें कई धर्मार्थ कार्य किये, उनके खर्चके लिये श्रीसत्यनारायणजीके नामसे स्थायी स्टेट कर दिया, जिससे भविष्यमें उनके खर्च चलनेमें कोई त्रुटि न हो। अपने जीवनकालमें सेठजी स्वयं सेवाकार्यका प्रबन्ध करते रहे। उनके काशीवास होनेके बाद उनके सात पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ तीन पुत्र उत्तरोत्तर सेवाकार्य करते रहे। वतमानमें सेठजीके कनिष्ठ पुत्र श्रीमान् सेठ ठाकुरदासजी और पौत्रोंमें ज्येष्ठ सेठ राधाकृष्णजी तथा सेठ युगलकिशोरजी सुरेका समस्त परिवारको सहानुभूतिके साथ सेवाकार्य कर रहे हैं। इस मन्दिरमें श्रीसत्यनारायणजीकी मूर्ति स्थापित है, उनके वाम भागमें श्रीलक्ष्मीजी तथा दाहिने भागमें श्रीगङ्गाजीकी मूर्ति और राधाकृष्णजी तथा अन्यान्य मूर्तियां स्थापित हैं। मूर्तियां इतनी भव्य हैं कि दर्शन करनेसे साक्षात् बात करती हुईसी प्रतीत होती हैं। मन्दि-

रमें भगवानके दशों अवतार, चारोंधाम, श्रीकृष्णलीला और महादेवजीके मण्डपमें उनकी लीलाओंके सुनहरे रंगके चित्र जयपुरके कारीगरों द्वारा बहुत ही उत्तम रीतिसे बनवाये गये हैं, तथा मीनेकारीका काम भी किया गया है। जिससे मन्दिर-का सौन्दर्य और भी बढ़ गया है। यों तो मन्दिरमें प्रायः सभी उत्सव मनाये जाते हैं किन्तु श्रावणमें झूलनोत्सव बड़े समारोह के साथ होता है। जिसमें दर्शन करनेके लिये दूर दूरसे दर्शनार्थी आते हैं और साक्षात् वृन्दावनका सा दृश्य प्रतीत होता है। दर्शनार्थियोंकी खूब भीड़ होती है, दर्शन करनेपर भी दर्शनोंकी लालसा बनी ही रहती हैं। मन्दिरसे सटी हुई धर्मशालामें एक कमरा बराबर सजाया हुआ रहता है। जिसमें अन्यान्य दर्श-नीय चीजोंके अतिरिक्त सत्यनारायणजी तथा उनके सेवक सेठ हरदयालजी सुरेका और उनके सातों पुत्र-दुर्गाप्रसादजी, मथुरा-प्रसादजी, रामप्रसादजी, मुरलीधरजी, नन्दरामजी, लक्ष्मीनारा-यणजी और ठाकुरदासजीके तैल-चित्र हैं; और चारदर्पण हैं जिनमें देखनेसे आकृतिमें विचित्र परिवर्तन होता नज़र आता हैं। श्रीसत्यनारायणजीके नामसे जो स्थायी सम्पत्ति है उसकी आयसे सलकियाके मन्दिर तथा धर्मशाला और अन्नक्षेत्र; श्रीकाशीजीके शिवालय, श्रीमथुराजीकी धर्मशाला, संस्कृत पाठशाला और अन्नक्षेत्र तथा महाबन, रामगढ़, फतेहपुर आदि स्थानोंकी धर्मशालाओंका खर्च चलता है। मेरी प्रार्थना है कि—जो सज्जन धर्मार्थ कार्य करें वे उसके खर्चके लिये स्थायी प्रबन्ध कर दें जिस प्रकार सेठ विष्णुदयालजी हरदयालजीने किया है।

रामनाथ शर्म्मा पुजारी

गृहस्थ धर्म ।

प्राचीन कालमें ऋषियोंने जीवनयात्राको सुखमय बनानेके लिये वर्ण तथा आश्रम व्यवस्थाके अनुसार जीवनको चार भागोंमें विभक्त किया यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तथा शूद्र और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। इन सबोंकी समुचित व्यवस्थाके लिये इनके नियम और कार्य भी अलग २ विभक्त किये। इन आश्रमोंमें सबसे अधिक उत्तरदायित्व गृहस्थपर है। जिस प्रकार सभी नदियां समुद्रका आश्रय लेती हैं उसी प्रकार सभी आश्रमी गृहस्थका आश्रय लेते हैं। भगवान मनुने कहा है—"यथा नदी नदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्। तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्॥ समाज रूपी बृक्षकी जड़ गृहस्थ ही है। जड़की मज़बूती पर ही बृक्षकी स्थिति है। अतः समाजको सत्पथपर चलानेके लिये गृहस्थको अपने नियमोंका समुचित रूपसे पालन करना चाहिये। गृहस्थोंके साधारण नियम इस प्रकार हैं। भगवानका स्मरण, वेद, पुराण तथा धर्मशास्त्रका पाठ करे या सुने और उनके अनुसार अपना आचरण बनावे। इसके लिये प्रातः काल देवालयमें जाकर एक प्रहर भगवत्पूजन, पुराणादि श्रवण तथा भगवत् भजनादिमें लगावे। अतिथि सत्कार करना गृहस्थ मात्रका परम धर्म है। जैसे प्राचीन कालमें अतिथिकी इच्छानुसार कामना पूरी की जाती थी वैसे ही वर्तमान कालमें भी गो, ब्राह्मण, साधु, महात्मा आदि अतिथियोंकी यथा शक्ति सेवा अवश्य करे। सबसे मधुर बचन बोले, ऐसा कोई भी कार्य न करे जिससे किसीकी

आत्माको कष्ट पहुंचे। अपने कल्याणके लिये यथा संभव सत्य पालन और भगवन्नाम कीर्तन करे। सत्ययुग, त्रेता, द्वापरमें हजारों वर्ष तप करनेसे जो फल मिलता था वही फल इस कलियुगमें प्रेमपूर्वक भगवन्नाम स्मरणसे मिलता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्यको अपनी सुविधाके अनुसार दिन रातमें किसी भी समय भगवत ध्यान और नाम कीर्तन करना चाहिये।

किसी भी बातके लिये शपथ कराना अनुचित है। क्योंकि ऐसा करनेसे उस मनुष्यका विश्वास उठ जाता है। याचकको अपनी शक्तिके अनुसार ईर्षा रहित होकर कुछ अवश्य देना चाहिये क्योंकि इस प्रकार देनेवालेको समयपर ऐसा भी सत्पात्र मिल जाता है जो नरकमें डालनेवाले पापोंसे छुड़ा दे। इस विषयमें मनुने कहा है—"यत्किञ्चिदपि दातव्यं याचितेनानसूयया। उत्पत्स्यते हि तत्पात्रं यत्तारयति सर्वतः॥" गरमीके दिनोंमें प्याऊका प्रबन्ध करना चाहिये प्यासोंको जल पिलानेवाला देवलोकमें जाता है बृहत्पाराशरस्मृतिमें लिखा है—"छिन्नान् पयः पाययेत अन्यानपि पिपासुकान्। प्रपाश्च कारयेद् ग्रीष्मे प्राप्नोति देवलोकताम्॥" परोपकारके काम यथा शक्ति स्वयं करे और जो काम पैसे विना स्वयं न कर सके उसे अपनी शारीरिक शक्ति लगाकर धनवानोंसे करवावे, ऐसा करनेसे भी बहुत धर्म होता है। धम साधनके लिये शरीरकी सदैव रक्षा करे कहा भी है—"शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्॥" शरीर ही धर्मपालनका पहला साधन है इसलिये यदि किसी

समय शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट आवे तो उसे धैर्य पूर्वक सहन करते हुए अपने शरीरकी रक्षा करे। उत्कट रूपसे किये हुए पाप अथवा पुण्यका फल इस जन्ममें ही तीनवर्ष, तीन महीना, तीन पक्ष या तीन दिनमें अवश्य मिल जाता है कहा भी है—"त्रिभिर्वर्षे स्त्रिभिर्मासै स्त्रिभिः पक्षै स्त्रिभिर्दिनैः। अत्युत्कटैः पाप पुण्यैरिहैव फलमश्नुते॥" इसलिये मनुष्यको प्रत्येक कार्य खूब सोच समझकर करना चाहिये। अपने मनको सदैव बुद्धि और विवेककी सहायतासे वशमें रखना चाहिये। क्योंकि जैसा मन सोचता है बाह्य इन्द्रियां भी वैसा ही कार्य करती हैं इसलिये सदा अच्छा विचार रखे।

अपनी स्त्रीके सिवाय अन्य किसी भी स्त्रीसे एकान्तमें भाषण न करे। पर स्त्रीसे एकान्तमें सम्भाषण करनेसे निन्दा और पापका भागी बनना पड़ता है। स्वार्थ और परार्थ दोनोंका ध्यान रखकर आजीविकाके अनुसार कार्य करे और सदैव आयके अनुसार खर्च करे। श्रीमद्भागवतमें आयके खर्च करनेकी विधि इस प्रकार बताई है—"धर्माय यशसेऽर्थाय कामाय स्वजनाय च। पञ्चधा विभजन् वित्तमिहामुत्र च मोदते॥" व्यापारादिकी आयसे जो धन प्राप्त होता है उसका पांच भाग करना चाहिये। जिसमें प्रथम भागसे साधु, महात्मा तथा ब्राह्मणोंकी सेवा, यज्ञ, जीर्णोद्धार और यथा शक्ति तीर्थ करे। दूसरेसे मन्दिर, धर्मशाला, पाठशाला, औषधालय आदि बनवाकर उनके खर्च चलानेका स्थायी प्रबन्ध करे। यदि इस प्रकार न कर सके तो इन कार्योंमें सहायता दे। तीसरेसे स्थायी स्टेट तथा व्यापारकी उन्नति करे। चौथेसे अपनी गृहस्थीका खर्च चलावे। और पांचवें भागसे अपने कुटुम्बियों, स्वजाति तथा अन्य इष्ट-मित्रोंका पालन पोषण करे।

स्त्री धर्म ।

नियम पूर्वक ब्रह्मचर्यका पालनकर धर्माचरणके लिये सहाय रूपसे स्त्रीका पाणिग्रहणकर विवाह करने पर ही गृहस्थ संज्ञा होती है। इसलिये स्त्रीको अर्द्धाङ्गिनी कहते हैं। गृहस्थाश्रममें जितना दायित्व पुरुषोंपर है उतना ही स्त्रियोंपर भी है। गृहस्थाश्रम रूपी गाड़ीके स्त्री और पुरुष दो पहिये हैं। एक पहियेसे गाड़ी नहीं चलती इसलिये स्त्रियोंको भी अपने कर्तव्यका ज्ञान करके तदनुसार व्यवहार करना चाहिये, जिससे गृहस्थाश्रम सुखी तथा सम्पन्न हो और समाजकी व्यवस्था समुचित रहे। पुरुषसमाजका भी कर्तव्य है कि स्त्रियोंका आदर करे। भगवान मनुने कहा है-"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ॥" जिस घरमें स्त्रीका आदर होता है वहां देवता प्रसन्न होते हैं और जहां इनका निरादर होता है वहां देवताओंकी प्रसन्नता न होनेसे सभी क्रियायें निष्फल होती हैं। किन्तु साथ ही स्त्रियोंको भी संयत चित्त हो ऋषियोंके बताये मार्गपर चलना चाहिये। स्त्रियां शुद्धचित्त होती हैं शीघ्र ही विपथ गामिनी हो सकती हैं इसलिये भगवान मनुने कहा है—'बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत् पाणिग्राहस्य यौवने। पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत् स्त्री स्वतन्त्रताम् ॥" बालकपनमें पिताके, विवाहके बाद पतिके, पतिके न होने पर पुत्रके और यदि पुत्र न हो तो अपने कुटुम्बियोंके अधीन रहना चाहिये स्त्रीको कभी भी स्वतन्त्र नहीं रहना चाहिये। अन्यान्य कर्तव्योंमें स्त्रीका प्रधान कर्तव्य पतिसेवा है इस विषयमें माता

अनुसूयाजीने सीताजीको इस प्रकार उद्देपश दिया है। "कह ऋषिवधू सरल मृदु बानी । नारिधर्म कछु व्याज बखानी ॥ मातु पिता भ्राता हितकारी। मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी ॥ अमित दानि भर्ता वैदेही। अधम नारि जो सेव न तेही ॥ धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपति काल परिखिये चारी ॥ वृद्ध रोगवश जड़ धन हीना। अन्ध बधिर क्रोधी अति दीना ॥ ऐसेहु पति कर किय अपमाना। नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥ एकै धर्म एक व्रत नेमा। काय वचन मन पति पद प्रेमा ॥" माता, पिता, भाई आदि स्त्रीको परिमित सुख ही पहुंचा सकते हैं किन्तु पतिसे स्त्रीको जो सुख मिलता है वह अपरिमित है। पति चाहे वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अन्धा, बहरा, क्रोधी तथा दीन भी हो तो भी उसकी सेवा करनी चाहिये, यदि इस तरह-के पतिका भी जो स्त्री अपमान करती है वह नरक गामिनी होती है। स्त्रियोंके लिये पातीव्रत धर्म ही सर्व श्रेष्ठ है। पति-व्रता स्त्रीसे देवता भी डरते हैं। पतिकी सेवाके अलावे अपने गुरुजनोंकी भी सेवा करे और गृहस्थीका भार पूर्णरूपसे संभाले रहे। अपनी आयके अनुसार सोच समझकर खर्च करे। पति-सेवा परायणा सुशिक्षित स्त्री ही योग्य सन्तानकी जननी होकर समाजका कल्याण कर सकती है। इस प्रकार स्त्रियोंके अपने कर्तव्यका उचितरूपसे पालन करनेसे घरमें सुख शान्ति रहती है जिससे सभी बातोंका आनन्द रहता है।
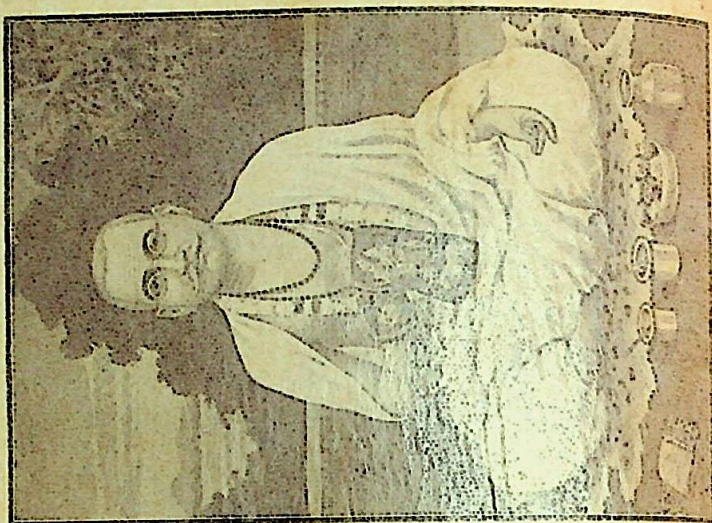
स्वर्गः पिता धर्म्मः पिता हि परमं तपः।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः ॥

नित्यकर्म-विधिः ।

तथा

देवपूजा-पद्धतिः ।

अथोच्यते गृहस्थस्य नित्यकर्म यथाविधि ।
यत्कृत्वाऽनृण्यमाप्नोति दैवात्पैत्र्याच्च मानुषात् ॥ आश्वलायन ॥

गृहस्थका नित्यकर्म यथाविधि लिखा जाता है । जिसके करनेसे देव, ऋषि और पितृऋणसे छुटकारा होता है । इसलिये नित्यकर्म अवश्य करे ।

सन्ध्या स्नानं जपश्चैव देवतानाञ्च पूजनम् ।
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट्कर्माणि दिने दिने ॥ वृ०पा०स्मृ० ॥

स्नान, सन्ध्या, जप, देवताओंका पूजन, वैश्वदेव और अतिथिसत्कार ये ६ कर्म नित्य करने चाहियें ।

प्रातः कृत्यम् ।

पञ्च पञ्च उषः कालः सप्तपञ्चाऽरुणोदयः । अष्ट पञ्च भवेत्प्रातस्ततः सूर्योदयः स्मृतः ॥ रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः । स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने ॥ विष्णु पु० ॥

सूर्योदयसे ५५ घड़ी गत होनेसे उषाकाल, ५७ घड़ी गत होनेसे अरुणोदय और ५८ घड़ी गत होनेसे प्रातःकाल इसके बाद सूर्योदय समझा जाता है । रात्रिके पिछले पहरका तीसरा हिस्सा (५६ से ५८ घड़ी तक) ब्राह्म मुहूर्त्त है । इसलिये ब्राह्म मुहूर्त्तमें उठना चाहिये ।

प्रातः स्मरणम्।

मनुष्य निद्रासे उठते ही नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए दोनों हाथोंकी हथेली देखे। हाथोंको मसलकर नहीं देखे।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

हाथोंके अग्रभागमें लक्ष्मी, मध्यमें सरस्वती और मूलमें ब्रह्मा हैं। इसलिये प्रातःकाल हाथोंका दर्शन करे। पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना कर पृथ्वीपर पैर रखे।

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

हे विष्णुपत्नि! हे समुद्ररूपी वस्त्रोंको धारण करनेवाली तथा पर्वतरूप स्तनोंसे युक्त पृथ्वि देवि! तेरे लिये नमस्कार है। मेरे पादस्पर्शको क्षमा करो। पश्चात् मुख धोकर कुल्ला करके नीचे लिखा प्रातः स्मरण तथा भजनादि करके गणेशजी, लक्ष्मीजी, सूर्य, तुलसी, गो, गुरु, माता, पिता और वृद्धोंको प्रणाम करे।

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम्। उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम्॥ १॥

गणपति विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः। द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः॥ विना-

यकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः । द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् । विश्वं तस्य भवेद् वश्यं न च विघ्नं भवेत् क्वचित् ॥२॥ सत्यरूपं सत्यसन्धं सत्यनारायणं हरिम् । यत्सत्यत्वेन जगतस्तं सत्यं त्वां नमाम्यहम् ॥३॥ त्रैलोक्य चैतन्यमयादि देव ! श्रीनाथ ! विष्णो ! भवदाज्ञयैव । प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥४॥ सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् । उज्जयिन्यां महाकाल मोंकारे ममलेश्वरम् ॥ केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम् । वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ॥ वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने । सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये ॥ द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् । सर्वपापविनिर्मुक्तः सर्वसिद्धिफलं लभेत् ॥५॥ आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयन्तु दिवाकरः । तृतीयं भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः ॥ पञ्चमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः । सप्तमं हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः ॥ नवमं दिनकृत्प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः । एकादशं त्रयीमूर्ति द्वादशं सूर्य एव च ॥ द्वादशैतानि ना-

मानि प्रातः काले पठेन्नरः । दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥६॥ ब्रह्मामुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥७॥ भृगु र्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः । रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु स० ॥८॥ सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च । सप्तस्वराः सप्तरसातलानि कुर्वन्तु स० ॥९॥ सप्तार्णवाः सप्तकुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त । भूरादि कृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु स० ॥१०॥ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाँश्च विभीषणः । कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः ॥११॥ सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् । जीवेद् वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः ॥१२॥ पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः । पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ॥१३॥ हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनुमन्तं हलायुधम् । पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम् ॥१४॥ महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि । हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥१५॥ उमा उषा च

वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम् । प्रातरेव स्मरेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा ॥१६॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥१७॥ अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा । पञ्चकं ना (नरः) स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥१८॥ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका । पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥१९॥ कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च । ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ॥२०॥ अनिरुद्धं गजं ग्राहं वासुदेवं महाद्युतिम् । संकर्षणं महात्मानं प्रद्युम्नं च तथैव च॥ मत्स्यं कूर्मं च वाराहं वामनं तार्क्ष्यमेव च । नारसिंहञ्च नागेन्द्रं सृष्टिसंहारकारकम् ॥ विश्वरूपं हृषीकेशं गोविन्दं मधुसूदनम् । त्रिदशैर्वन्दितं देवं दृढभक्तिमनूपमम् ॥ एतानि प्रातरुत्थाय संस्मरिष्यन्ति ये नराः । सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते स्वर्गलोकमवाप्नुयुः ॥२१॥ श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितिं तथा । प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स विमुच्यते ॥२२॥ हे जिह्वे रससारज्ञे सर्वदा मधुरप्रिये । नारायणाख्यपीयूषं पिब जिह्वे निरन्तरम् ॥२३॥

शौच-विधिः।

यज्ञोपवीतको कण्ठी करके दाहिने कानमें लपेट कर वस्त्रसे शिर ढक ले। वस्त्रके अभावमें जनेऊको शिर परसे बायें कानमें भी लपेटे। मौन होकर दिनमें उत्तर तथा रात्रिमें दक्षिणकी ओर मुख करे किन्तु गो, ब्राह्मण, अग्नि, सूर्य, चन्द्रादिकी ओर मुख न करे। मल-मूत्र त्यागनेके पहिले नीचे लिखा मन्त्र बोले।

गच्छन्तु ऋषयो देवाः पिशाचा ये च गुह्यकाः। पितृभूतगणाः सर्वे करिष्ये मलमोचनम्॥ ॥नारदपुराण॥

मल त्यागते समय जलपात्र स्पर्श न करे। पात्रसे बायें हाथमें जल लेकर गुदा धोकर लिङ्गमें एक बार तथा गुदामें तीन बार मिट्टी लगाकर जलसे शुद्ध करे जिससे दुर्गन्ध नहीं रहे। बायें हाथको अलग रखते हुए दाहिने हाथसे लांग टांग कर उसी हाथमें पात्र लेवे। मिट्टीका तीन भाग करके दाहिने हाथसे मिट्टी गिराकर प्रथम भागसे बायें हाथको दस बार,दूसरेसे दोनों हाथों-को सात बार और तीसरेसे पात्रको तीन बार शुद्ध करे तथा प्रथम बायें पैरको तीन बार,पीछे दाहिने पैरको भी तीन बार धोवे। फिर पात्रको धोकर सूर्योदय के पहले पूर्व और उदयके बादमें उत्तरकी ओर मुख करके अपनी बायीं ओर बारह कुल्ला करे। बची हुई मिट्टीको धो देवे, नहीं धोनेसे दोष होता है।

दशहस्तान् परित्यज्य मूत्रं कुर्याज्जलाशये। शतहस्तान् पुरीषार्थे तीर्थे नद्यां चतुर्गुणम्॥ धाराशौचं न कुर्वीत शौचशुद्धिमभीप्सता। चुलुकैरेव कर्तव्या हस्तशुद्धिर्विधानतः॥ ॥बौधायन॥

जलाशयसे मूत्र दस हाथ, मल सौ हाथ और नदी तथा तीर्थोंसे मूत्र चालीस हाथ और मल चारसौ हाथकी दूरी पर त्यागे। जलकी धारामें मल-मूत्रका त्याग नहीं करे। चुल्लूमें जल लेकर जलके बाहर हाथ धोवे।

एका लिङ्गे गुदे त्रीणि दश वामकरे मृदः ।
हस्तद्वये च सप्तान्याश्चरणौ च त्रिभिस्त्रिभिः ॥ विष्णुपुराण ॥

लिङ्ग एक बार, गुदा तीन बार, बायां हाथ दस बार, दोनों हाथ सात बार तथा पैर तीन बार मिट्टी और जलसे धोवे ।

एतच्छौचं गृहस्थानां द्विगुणं ब्रह्मचारिणाम् ।
त्रिगुणं वानप्रस्थानां यतीनां तु चतुर्गुणम् ॥ मनुस्मृति ॥

ऊपर लिखा हुआ नियम गृहस्थके लिये है, ब्रह्मचारीको इससे दूना, वानप्रस्थोंको तीन गुना और संन्यासियोंको चार गुना करना चाहिये ।

दिवा शौचस्य निश्यर्धं पथि पादो विधीयते ।
आर्तः कुर्याद् यथाशक्ति शक्तः कुर्याद् यथोदितम् ॥ आदित्य पु० ॥

ऊपर लिखी हुई विधि दिनके लिये है । रात्रिमें आधा, मार्गमें उससे भी आधा और आतुर कालमें यथाशक्ति करे । किन्तु शक्ति रहते हुए सम्पूर्ण करे ।

मौनम् ।

उच्चारे मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने ।
श्राद्धे भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत् ॥ हारितस्मृति ॥

मल, मूत्र, मैथुन, दन्तधावन, श्राद्ध और भोजनके समय मौन रहे ।

उवासी, छींक, थूकना ।

छिक्कापतनजृम्भासु जीवोत्तिष्ठ करध्वनिः ।
कर्त्ता स्वर्गमवाप्नोति ह्यकर्ता ब्रह्महा भवेत् ॥समयोचितपद्यमालिका॥

छींक आनेसे "शतंजीवेम शरदः" कहे । गिरं जानेसे "उत्तिष्ठ, उत्तिष्ठ" कहे और उवासी आनेसे 'चुटकी बजावे'। ऐसा करनेसे स्वर्ग प्राप्त होता है । नहीं करनेसे दोष होता है ।

क्षुते निष्ठीविते सुप्ते परिधानेऽश्रुपातने ।
एषु कर्मसु नाचामेद्दक्षिणं श्रवणं स्पृशेत् ।। सांख्यायन ॥

छींक, थूक, निद्रा, कपड़ा पहिरने और नेत्रोंमें जल आ जानेसे आचमन नहीं करे केवल दाहिने कानको अंगूठेसे स्पर्श करे ।

क्षौरम् ।

एकादशी, अमावास्या, चतुर्दशी, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत, श्राद्धके दिन, रवि, मंगल तथा शनिवारको और प्रातः सन्ध्या करनेके पहले क्षौर नहीं कराना चाहिये ।

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तण्डसूनुः । भौमश्चाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पंचमासान् ।। सप्तैवेन्दुर्दश सुरगुरुः शुक्र एकादशेति । प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ॥वाराही॥

गर्गादि मुनियोंने कहा है कि रविवारको क्षौर करानेसे १, मंगलको ८ और शनिवारको ७ मास आयु क्षीण होती है । बुधवारको ५, सोमवारको ७, गुरुवारको १० और शुक्रवारको ११ मास आयु बढ़ती है । (गृहस्थको सोम और गुरुवारको भी क्षौर नहीं कराना चाहिये) ।

तैलम् ।

रवि, मंगल, गुरु, शुक्रवार, षष्ठी, एकादशी, द्वादशी, अमावास्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत और श्राद्धके दिन तेल न लगावे । किन्तु कार्तिक कृष्णपक्षकी १४ को अवश्य लगावे ।

तैलाभ्यङ्गे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः । बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ।। रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौम-

वारे च मृत्तिका। गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यङ्गो न दोषभाक्॥
नित्यमभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥ ज्योतिः सार॥

रविवारको तेल लगानेसे ताप, मंगलवारको मृत्यु, गुरुवारको हानि तथा शुक्रवारको दुःख होता है। सोमवारको शोभा,बुधवारको धन और शनिवारको सुख होता है। यदि निषिद्ध वारोंमें तेल लगाना हो तो रविवारको तेलमें पुष्प, गुरुवारको दूर्वा, मंगलवारको मृत्तिका और शुक्रवारको गोबर छोड़कर लगानेसे दोष नहीं लगता। सुगन्धित तथा प्रतिदिन लगानेवालोंको भी नहीं लगता।

दन्तधावनम्।

सूर्योदयसे पहले पूर्व और बादमें उत्तर मुख होकर दतुअन करे। किन्तु पूर्व और उत्तरके कोण (ईशान) में दोनों समय कर सकता है। संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत, श्राद्धदिन, प्रतिपद, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पूर्णिमा और रविवारको तथा अपने जन्मकी तिथि,वार और नक्षत्रको दतुअन नहीं करे। उसके निमित्त तथा दतुअनके अभावमें १२ कुल्ला अधिक करे।

मुखशुद्धिविहीनस्य न मन्त्राः फलदाः स्मृताः।
दन्तजिह्वाविशुद्धिश्च ततः कुर्यात्प्रयत्नतः॥ पद्म पुराण॥

मुखशुद्धिके विना मन्त्र फलदायक नहीं होते। इसलिये यत्न पूर्वक जिह्वा और दांतोंकी शुद्धि करे।

दशांगुलन्तु विप्राणां क्षत्रियाणां नवांगुलम्। अष्टांगुलन्तु वैश्यानां शूद्राणां सप्त सस्मितम्॥ चतुरंगुलमात्रन्तु नारीणां नात्र संशयः॥ नागदेव॥

ब्राह्मणको दश, क्षत्रियको नौ, वैश्यको आठ, शूद्रको सात और स्त्रीको चार अंगुलकी दतुअन करनी चाहिये। (ब्राह्मण १२ की भी कर सकता है)।

मध्यमानामिकाभ्यांच वृद्धांगुष्ठेन च द्विजः ।
दन्तस्य धावनं कुर्यान्न तर्जन्या कदाचन ॥ पद्मपुराण ॥

मध्यमा, अनामिका तथा अंगुष्ठसे दांत साफ करे । तर्जनी अंगुलीसे न करे।

दतुअन-प्रार्थना ।

दतुअन धोकर प्रार्थना करके करे । पश्चात् चीरकर जीभी करके धोकर बायीं ओर फेंक दे ।

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च । ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते ॥ विश्वामित्र कल्प ॥

सङ्कल्पः ।

महर्षियोंने कहा है कि स्नान, दान, व्रत, देवपूजन आदिके आरम्भमें सङ्कल्प करना चाहिये । नीचे लिखे सङ्कल्प वाक्यमें (अमुक) के स्थान पर उसके बाद जो शब्द है उसका विशेष नाम पंचांग आदि से देख कर उच्चारण करे । शास्त्राज्ञानुसार ब्राह्मण अपने नामके अन्तमें "शर्मा" क्षत्रिय "वर्मा" वैश्य "गुप्त" और शूद्र "दास" कहे । तर्पण तथा श्राद्धादिमें पितरोंके नामके अन्तमें भी इसी प्रकार कहे ।

अयनम्—मकर संक्रान्तिसे मिथुन (माघसे आषाढ़) तक "उत्तरायण सूर्य"। और कर्कसे धन (श्रावणसे पौष) तक "दक्षिणायन सूर्य" रहता है ।

ऋतु—वसन्त—मीन और मेषकी संक्रान्ति (चैत्र, वैशाख)। ग्रीष्म—वृष और मिथुन (ज्येष्ठ, आषाढ़)। वर्षा कर्क और सिंह (श्रावण, भाद्र)। शरद्—कन्या और तुला (आश्विन, कार्तिक)। हेमन्त—वृश्चिक और धन (अगहन, पौष)। शिशिर—मकर और कुम्भ (माघ, फाल्गुन)। इस प्रकार ६ ऋतु हैं।

ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते (अमुक) देशे, पुण्य (अमुक) क्षेत्रे, (अमुक) ग्रामे, बौद्धावतारे, विक्रमसम्वत्सरे (अमुक) संख्यके, शालिवाहनशाके (अमुक) संख्यके, (अमुक) नाम्नि सम्वत्सरे, (अमुक) अयने, (अमुक) ऋतौ, (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, (अमुक) तिथौ, (अमुक) वासरे, (अमुक) नक्षत्रे, (अमुक गोत्रोत्पन्नः, (अमुक) नामाहं मम कायिक वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञातसकलदोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं (अमुक) काले, (अमुक) सम्मुखे, (अमुक) कर्म करिष्ये

(यजमानके लिये करे तो "करिष्ये" की जगह "करिष्यामि" कहे)

मृत्तिका-ग्रहण-मन्त्रः ।

नीचे लिखे मन्त्रसे मिट्टी लगावे । किन्तु कटिके नीचे मन्त्र तथा दाहिने हाथसे नहीं लगावे ।

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे ।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥पद्म पु०॥

स्नानम् ।

मनुष्योंके शरीरमें नौ छिद्र हैं। वे रात्रिमें अपवित्र हो जाते हैं। इसलिये स्नान अवश्य करे। शौचका वस्त्र बदल कर गंगादि तीर्थोंमें जाकर प्रथम वरुणकी प्रार्थना करे पश्चात् उस जलसे पवित्र होकर हाथमें जल लेकर संकल्प वाक्यके अन्तमें 'स्नानङ्करिष्ये' कहकर संकल्प छोड़े। मृत्तिकाके मन्त्रसे मृत्तिका लगाकर नाभि पर्यन्त जलमें जाकर तीर्थोंका आवाहन करे। किन्तु भागीरथी गङ्गामें आवाहन नहीं करे। केवल गङ्गाजीकी प्रार्थना करे। जलके ऊपर ब्रह्म-हत्या रहा करती है। इसलिये हाथोंसे जलको हिलाकर प्रवाह अथवा सूर्यकी ओर मुख करके तीन गोता लगाकर स्नान करे। पश्चात् स्नानांग तर्पण करे। सूखी धोती बांधकर जलमें खड़ा होकर तथा गीली धोतीसे जलके बाहर सन्ध्यादि नहीं करे। घरमें स्नान करे तो पूर्वाभिमुख होकर पात्रमें जल लेकर तीर्थोंका आवाहन और सङ्कल्प करके स्नान करे। शूद्रके हाथसे शरीरपर जल गिरवाना और स्नानके बाद अग्निसे पैर तापना निषिद्ध है।

निपानादुद्धृतं पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्। ततोऽपिसारसं पुण्यं ततो नादेय मुच्यते। तीर्थतोयं ततः पुण्यं गंगातोयं ततोऽधिकम्॥

कूंवाके जलसे झरनेका, झरनेसे सरोवरका, सरोवरसे नदीका, नदीसे तीर्थका और तीर्थसे गंगाजीका जल पवित्र है।

संक्रान्त्यां रविवारे च सप्तम्यां राहुदर्शने। आरोग्ये पुत्रमित्रार्थे न स्नायादुष्णवारिणा॥ मृते जन्मनि संक्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा। अस्पृश्यस्पर्शने चैव न स्नायादुष्णवारिणा॥ वृद्धमनु०॥

संक्रान्ति, रविवार, सप्तमी, ग्रहण, सन्तानोत्पत्ति, मृतकाशौच, श्राद्ध, जन्मतिथिके दिन और अस्पृश्यको छूलिया हो तो गरम जलसे स्नान नहीं करे।

परिधेयाम्बराम्बूनि गङ्गास्रोतसि न त्यजेत्। न दन्तधावनं कुर्याद्‌ गंगागर्भे विचक्षणः॥ पद्म पु०॥

गंगाजीमें दतुअन नहीं करे। स्नानके पश्चात् गंगाजीमें भीगी धोती नहीं बदले और न निचोड़े।

वासांसि धावतो यत्र पतन्ति जलविन्दवः। तदपुण्यं जलस्थानं रजकस्य शिलाङ्कितम्॥ वृ० पा० स्मृ०॥

धोबीका कपड़ा धोनेका पत्थर तथा जितनी दूरी तक उस वस्त्रका छींटा पड़ता है उतना जल अपवित्र है।

अनुद्धृत्य तु यः कुर्यात्परकीयजलाशये। वृथा स्नानफलं तस्य कर्तुः पापेन लिप्यते॥ आचारमयूख॥

दूसरेके बनवाये हुए जलाशयमेंसे मिट्टी बिना निकाले हुए जो स्नान करता है, उसको स्नानका फल प्राप्त नहीं होता। वह जलाशय बनवाने वालेके पापका भागी होता है। इसलिये मिट्टी निकाल कर स्नान करे।

आ मणेर्बन्धनाद्धस्तौ पादौ चाजानुतः शुची। प्रक्षाल्य चाचामे
द्विद्वानन्तर्जानु करो द्विजः ॥ वृ० पा० स्मृ० ॥

मणि-बन्ध (पहुँचे) तक हाथ तथा घुटनों तक पैर धोकर पवित्र होकर दोनों घुटनोंके भीतर हाथ करके आचमन करनेसे स्नान होता है।

वरुणकी प्रार्थना।

अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव।
वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे ॥

गङ्गाजीकी प्रार्थना।

विष्णुपादाब्जसम्भूते गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्म्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि ॥

तीर्थों का आवाहन।

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥१॥
त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोऽस्तुते ॥२॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥३॥
गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकञ्च, गच्छति ॥४॥

जलके बाहर एक अञ्जलि स्नानदोष निवारण मन्त्रसे देनी चाहिये।

स्नानाङ्ग-तर्पणम् । (घरमें नहीं करे)।

"पूर्वाभिमुख" होकर हाथोंके अग्रभागसे एक एक अञ्जलि देवे ।

ॐ ब्रह्मादयो देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्देवास्तृ०। ॐ भुवर्देवास्तृ० । ॐ स्वर्देवास्तृ० । ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृ० । ॐ मरीच्यादिऋषयस्तृ० ॥ ततः कण्ठी कृत्वा उत्तराभिमुखः ॥

"उत्तराभिमुख" होकर जनेऊ तथा अंगोछेको कण्ठी करके कनिष्ठाके मूलसे दो दो अञ्जलि देवे ।

ॐ सनकादि मनुष्यास्तृप्यन्ताम् २। ॐ भूर्ऋषयस्तृ०२। ॐ भुवः ऋषयस्तृ०२। ॐ स्वः ऋषयस्तृ०२। ॐ भूर्भुवः स्वः ऋषयस्तृ०२॥ ततोऽपसव्यं दक्षिणाभिमुखः ॥

"दक्षिणाभिमुख" होकर अपसव्य अर्थात् जनेऊ और गमछेको दाहिने कन्धेपर रखकर अंगुष्ठ और तर्जनीके मध्यसे तीन तीन अञ्जलि दक्षिणमें देवे ।

ॐ कव्यवाड़ादयो देवपितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भूः पितरस्तृ० ३। ॐ भुवः पितरस्तृ० ३। ॐ स्वः पितरस्तृ० ३। ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृ० ३। ॐ अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहास्तृ० ३। ॐ अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहास्तृ० ३। ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं जगत्तृप्यताम् ३ ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे जलके बाहर एक अञ्जलि देवे।

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुलेमम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परांगतिम् ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे जलके बाहर दाहिनी ओर शिखा निचोड़े।

लता गुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सृष्टैः शिखोदकैः ॥

स्नानदोष-निवारण-मन्त्रः।

"सव्य" होकर आचमन करके जलके बाहर एक अञ्जलि देवे।

यन्मया दूषितं तोयं मलैः शारीरसम्भवैः।
तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम् ॥

वस्त्रम्।

सदा दो वस्त्रसे देवपूजन तथा श्राद्धादि करे। दूसरा वस्त्र बायें कन्धेपर रखना चाहिये। अभावमें आधी धोती भी ओढ़ सकता है। धोबीके धोये तथा कोरे वस्त्रसे देवपूजन तथा श्राद्धादि नहीं करे। उस वस्त्रको पवित्र कर लेना चाहिये।

नूतन-वस्त्र-धारण-मन्त्रः।

नीचे लिखा मन्त्र बोलकर नया वस्त्र धारण करना चाहिये।

परिधास्ये यशोधास्ये दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि शतञ्च जीवामि शरदः सुवर्चा रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ॥ नित्या० प्रदीप ॥

शिखा-बन्धन-मन्त्रः ।

शिखा बांधकर सभी कर्म करने चाहिये । इसलिये नीचे लिखे मन्त्रसे या गायत्री मन्त्रसे शिखा बांधे । यदि शिखा नहीं हो तो चोटीके स्थानका स्पर्श करे ।

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥

आसनम् ।

मोक्ष तथा लक्ष्मीके लिये व्याघ्रछाला, ज्ञानके लिये काली मृगछाला तथा सब कार्य्योंमें ऊन, कुशासन तथा मृगछाला पवित्र हैं ।

वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधि-संभवः । धरण्यां दुःख संभूति दौर्भाग्यं छिद्रिदारुजे । तृणेधनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः पञ्चरात्र

बांसपर दरिद्रता, पत्थरपर व्याधि, जमीनपर दुःख, छेदवाली लकड़ीपर अभाग्य, तृणपर धन तथा यशका नाश और पत्तोंपर बैठनेसे चित्त भ्रम होता है ।

तिलकम् ।

तिलक किये बिना सन्ध्या, पितृकर्म और देवपूजा आदि निष्फल होते हैं । इसलिये भस्म तथा चन्दनादिके अभावमें जलसे भी करे ।(चकले परसे चन्दन लगाना निषिद्ध है) ।

अनामिका शान्तिदोक्ता मध्यमायुष्करी भवेत् ।
अङ्गुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तः तर्जनी मोक्षदायिनी ॥ स्क० पु० ॥

अनामिकासे शान्ति, मध्यमासे आयुवृद्धि, तर्जनीसे मोक्ष और अंगुष्ठसे तिलक करने से पुष्टि होती है ।

चन्दन-धारण-मन्त्रः ।

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम् ।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा ॥

द्वादश-तिलक-धारण–विधिः ।

ललाटे केशवं ध्यायेत् कण्ठे श्रीपुरुषोत्तमम् । नाभौ नारा- यणं देवं वैकुण्ठं हृदये तथा ॥ दामोदरं वामपार्श्वे दक्षिणे च त्रिविक्रमम् । मूर्ध्नि चैव हृषीकेशं पद्मनाभं च पृष्ठतः ॥ कर्णयो- र्यमुनां गङ्गां बाह्वोः कृष्णं हरिन्तथा । यथास्थानेषु तुष्यन्ति दे- वताः द्वादश स्मृताः ॥ पद्म पु० ॥

ललाटमें केशव, कण्ठमें पुरुषोत्तम, नाभिमें नारायण, हृदयमें वैकुण्ठ, बायें पार्श्वमें (पसवाड़ेमें) दामोदर, दाहिनेमें वामन, मस्तकमें हृषीकेश, पीठमें पद्मनाभ, बायें कानमें यमुना, दाहिनेमें गंगा, बायीं भुजामें कृष्ण और दाहिनीमें हरि इनका स्मरण करते हुए यथा स्थान तिलक करे । (ब्रह्माण्ड पुराणके अनु- सार गर्दनमें भी दामोदर हैं) ।

भस्म-धारण-विधिः ।

प्रातः कालमें जलमिश्रित, मध्याह्नमें चन्दनमिश्रित और सायंकालमें जल रहित लगावे । बायें हाथमें भस्म लेकर दाहिने हाथसे मर्दन करते हुए नीचे लिखे मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके भस्म धारण मन्त्रसे लगावे ।

ॐ अग्निरिति भस्म । ॐ वायुरिति भस्म ।

ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म । ॐ व्योमेति भस्म । ॐ सर्वंᳬंहवा इदं भस्म । ॐ मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति ॥

भस्म-धारण-मन्त्रः ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—ललाटमें । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—कण्ठमें । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—भुजाओंमें । ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्—हृदयमें ।

कुशाः ।

भाद्र मासकी अमावास्याकी ग्रहण की हुई कुशा बारहमास, प्रत्येक अमावास्याकी एकमास, पूर्णिमाकी १५ दिन और प्रत्येक दिनकी उसी दिन पवित्र रहती है । सन्ध्या, पितृकार्य और देवपूजनमें अत्रि ऋषिके मतानुसार अग्र और मूल सहित दो कुशाओंकी पवित्री दाहिने और तीनकी बायें हाथकी अनामिका अंगुलीकी जड़में धारण करे । तीन कुशाओंका मोटक पितृकार्यमें दाहिनी और देवकार्यमें बायीं कटिमें धारण करे ।

कुशा-ग्रहण-मन्त्रः ।

पूर्व या उत्तर मुख होकर नीचे लिखे मन्त्रसे कुशाकी प्रार्थना करे । पश्चात् प्रत्येक बार "हूं फट्" बोलकर जड़ सहित उखाड़े ।

विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठिनिसर्गज ।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव ॥ मार्कण्डेय ॥

प्रादेशमात्रं दर्भः स्याद्‌द्विगुणं कुशमुच्यते।
कृतरत्निर्भवेद्‌बर्हिस्तदूर्ध्वं तृणमुच्यते॥ कर्मकाण्ड॥

एक प्रादेश (अंगूठा और तर्जनी फैलाना) का दर्भ, दो का कुशा कै
हाथकी कुहनीसे कनिष्ठा अंगुलीकी जड़ पर्यन्तका बर्हि कहा जाता है। इ
लम्बा तृणके बराबर है।

मल-मूत्रे धृता ये च तर्पणे चैव ये धृताः।
चितौ दर्भाः पथि दर्भास्तेषां त्यागो विधीयते॥रुद्र कल्पद्रु

मल-मूत्रके समयकी, चिता स्थानकी, मार्गमें पड़ी हुई और तर्पणके स
यकी कुशाओंको त्याग देना चाहिये। किन्तु तर्पणके समयकी पवित्री त
कटिका मोटक पवित्र रहता है।

यज्ञोपवीतम्।

'गर्भाष्टमेऽष्टमे वाब्दे ब्राह्मणस्योपनायनम्।
राज्ञामेकादशे सैके विशामेके यथा कुलम्॥ याज्ञ० स्

ब्राह्मण गर्भसे या जन्मसे आठवें, क्षत्रिय ग्यारहवें और वैश्य बारहवें व
यज्ञोपवीत लेवे। अथवा कुल परम्पराके अनुसार भी ले सकते हैं।

मलमूत्रं त्यजेद्विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्।
उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यन्नवं तदा॥ सायण॥

मल मूत्र त्यागते समय यदि जनेऊ कानपर चढ़ाना भूल जाय तो बदल ले
आचमन-प्राणायाम करके संकल्प वाक्यके अन्तमें "यज्ञोपवीत ध
करिष्ये" कहकर संकल्प छोड़े। यदि श्रावण शु० १५.को श्रावणी कर्ममें
किया हुआ न हो तो नूतन यज्ञोपवीतको जलसे शुद्धकर गायत्री मन्त्रसे अ
मन्त्रित करके नीचे लिखे मन्त्रोंसे प्रत्येक सूत्रमें देवताओंका आवाहन क

प्रथमतन्तौ—ॐकारमावाहयामि। द्वितीयतन्तौ–ॐ अग्निमावाहयामि। तृतीयतन्तौ--ॐ सर्पानावाहयामि। चतुर्थ तन्तौ--ॐ सोममावाहयामि। पञ्चमतन्तौ--ॐ पितॄनावाहयामि। षष्ठ तन्तौ--ॐ प्रजापतिमावाहयामि। सप्तम तन्तौ—ॐ अनिलमावाहयामि। अष्टमतन्तौ--ॐ सूर्यमावाहयामि। नवम तन्तौ--ॐ विश्वान्देवानावाहयामि। ग्रन्थिमें ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि। ॐ रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि॥

यज्ञोपवीत-धारण-मन्त्रः।

ॐ यज्ञोपवीतमितिमन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिःलिङ्गोक्ता देवता त्रिष्टुप्छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः॥

प्रत्येक बार नीचे लिखा मन्त्र बोलकर एक एक धारण करे।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतंबलमस्तु तेजः।

जीर्ण-यज्ञोपवीत-त्याग-मन्त्रः।

यज्ञोपवीतको कण्ठी करके गलेमें पहनकर निकाले। सीधा निकालना निषिद्ध है। पश्चात् गायत्रीका जप करे।

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया ।
जीर्णत्वात्त्वत् परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥

जपः ।

जप करते समय शिरपर वस्त्र तथा हाथ नहीं रखे। दाहिने हाथको गोमुखीमें डालकर अथवा वस्त्रसे ढक कर जप करे। जपते समय कांपनेसे हानि, ऊंघनेसे दुःख, बोलनेसे रोग, माला गिरनेसे नाश और मालाका सूत्र टूटनेसे मृत्यु होती है। इसलिये सावधान होकर जप करे। जप करते समय बोलनेसे पुण्यका छठा हिस्सा चला जाता है। यदि बोल लेवे तो विष्णुका स्मरणकर फिर जप आरम्भ करे।

गृहेचैक गुणः प्रोक्तो गोष्ठे शतगुणः स्मृतः। पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्रगुणमुच्यते ॥ अयुतं पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपः। कोटिर्देवालये प्राप्ते अनन्तं शिव सन्निधौ ॥

घरमें जप करनेसे एक गुना, गौओंके समीपमें सौगुना, पवित्र बन तथा बगीचा और तीर्थमें हजार गुना, पर्वतपर दश हजार गुना, नदी तीरपर लाख-गुना, देवालयमें करोड़ गुना और शिवके समीपमें अनन्त गुना फल होता है।

विधियज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः ।
उपांशुः स्याच्छत गुणः साहस्रोमानसः स्मृतः ॥ म०स्मृ० ॥

विधियज्ञ (अमावास्या तथा पूर्णिमादिको किये हुए उत्तम कर्म) से जपयज्ञ दसगुना, जिस जपको कोई सुन न सके वह सौगुना और मनमें किया हुआ जिसमें जीभ तथा ओठ वगैरह न हिलें, हजार गुना अधिक है।

सकृज्जपश्च गायत्र्या पापं दिनभवं हरेत् । दशवारं जपेनैव नश्येत्पापं दिवानिशम् ॥ शतवारं जपश्चैव पापं मासार्जितं हरेत् । सहस्रधा जपश्चैव कल्मषं वत्सरार्जितम् ॥ लक्षो जन्मकृतं पापं दशलक्षोऽन्यजन्मजम् । सर्वजन्मकृतं पापं शतलक्षाद्विनश्यति ॥ देवी० भा० ॥

गायत्रीके एक मन्त्रका जप करनेसे दिनका, दससे रातदिनका, एकसौसे एक मासका, एक हजारसे एक वर्षका, एक लाखसे जन्म भरका, दसलाखसे अन्य जन्मका और एक करोड़से सब जन्मोंका पाप नष्ट होता है ।

जले च शुष्कवस्त्रेण स्थले चैवार्द्रवाससा ।
जपो होमस्तथा दानं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥वशिष्ठ०स्मृ०॥

जलमें सूखे वस्त्रसे तथा स्थलपर गीले वस्त्रसे किये हुए जप, होम तथा दान आदि निष्फल होते हैं ।

प्रातर्नाभौ करं धृत्वा मध्याह्ने हृदिसंस्थितम् ।
सायं जपति नासाग्रे जपस्तु त्रिविधः स्मृतः ॥ धर्मप्र० ॥

प्रातःकालमें हाथको नाभिके समीप, मध्याह्नमें हृदयके समीप और सायंकालमें नासिकाके समीप करके जप करना चाहिये ।

कृत्वोत्तानौ करौ प्रातः सायं न्युब्जौ करौ तथा ।
मध्याह्ने हृदयस्थौ तु कृत्वा जपमुदीरयेत् ॥

प्रातःकालमें हाथको सीधा रखकर अंगुलियोंको ऊपरकी ओर करके, सायंकालमें हाथको उलटा करके तथा मध्याह्नमें हृदयके समीप करके जप करे ।

वस्त्रेणाच्छादयेद्धस्तं दक्षिणं यः सदा जपेत् । तस्य स्यात्स-

फलं जाप्यं तद्धीनमफलं स्मृतम् । अतएव जपार्थं सा गोमुखी ध्रियते जनैः ॥ वृद्धमनु० ॥

सदा दाहिने हाथको गौमुखीमें डालकर अथवा कपड़ेसे ढककर जप करना चाहिये । नहीं तो जप निष्फल होता है ।

यस्मिन्स्थाने जपं कृत्वा शक्रो हरति तज्जपम् ।
तन्मृदा लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृति ॥

जिस आसन पर बैठकर जप किया है उसके नीचेकी मृत्तिका मस्तकमें लगावे । ऐसा नहीं करनेसे जपके फलको इन्द्र ले लेता है ।

माला-विधिः ।

सुमेरुको छोड़कर १०८ मणियोंकी माला सबसे उत्तम है। मालाको अनामिका अङ्गुलीपर रखकर अंगूठेसे स्पर्श करते हुए मध्यमासे फेरे । सुमेरुका उल्लङ्घन नहीं करे । दुबारा फेरते समय सुमेरुके पाससे माला घुमाकर जप करे ।

शतंस्याच्छंखमणिभिः प्रवालैस्तु सहस्रकम् । स्फाटिकैर्दशसाहस्रं मौक्तिकैर्लक्षमुच्यते ॥ पद्माक्षैर्दशलक्षन्तु सौवर्णैः कोटिरुच्यते । कुशग्रन्थ्या च रुद्राक्षैरनन्तगुणितं भवेत् ॥ शिव पु० ॥

शंखमणिकी मालासे सौगुना, मूंगासे हजार, स्फटिकमणिसे दस हजार, मोतीसे लाख, कमलगट्टेसे दसलाख, सुवर्णसे करोड़ तथा कुशग्रन्थि और रुद्राक्षसे अनन्तगुना फल होता है ।

माला-प्रार्थना ।

मालाका पूजन तथा प्रार्थना करके फेरनेसे विशेष फल होता है।

ॐ महामाये महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि । चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ अविघ्नं कुरुमाले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे । जपकालेच सिद्ध्यर्थंप्रसीद मम सिद्धये ॥

करमाला-विधिः ।

पर्वभिस्तु जपेद्देवीं माला काम्यजपे स्मृता ।
गायत्र्या वेदमूलत्वाद्वेदः पर्वसु गीयते ॥ गायत्री कल्प ॥

गायत्रीका मूल, वेद है और वेदगान पर्वोंपर होता है इसलिये गायत्रीका जप पर्वोंप [illegible]भी करे । काम्यजप मालापर अवश्य करना चाहिये ।

अङ्गुलीर्न वियुञ्जीत किञ्चिदाकुञ्चिते तले ।
अङ्गुलीनां वियोगाच्च छिद्रे च स्रवते जपः ॥

अंगुलियोंको मिलाकर हथेलीकी ओर कुछ टेढ़ी करके जप करे। अंगुलियोंके अलग २ रहनेसे जपकी हानि होती है।

अङ्गुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घनात् ।
पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥

अंगुलीके अग्रभाग (नखके पास) तथा पर्वकी लकीर पर और सुमेरुका उल्लङ्घन कर किया हुआ जप निष्फल होता है ।

देवमन्त्र-जपनेकी-करमाला ।
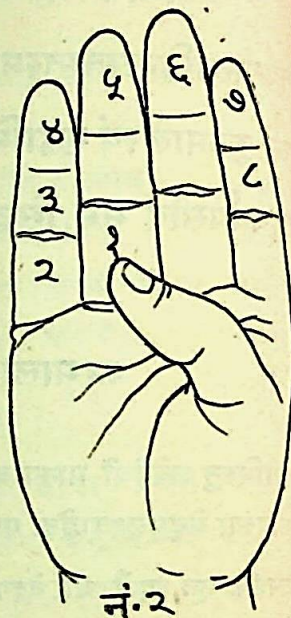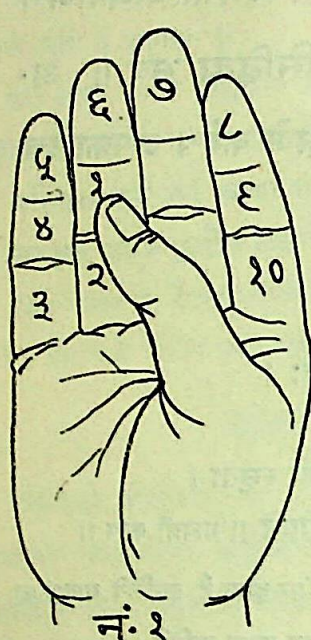
नीचे लिखी विधिसे चित्र नं० १ के अनुसार अङ्क १ से आरम्भ करके १० अङ्क तक जप करनेसे एक करमाला होती है। इसी प्रकार दश करमाला जप करके चित्र नं०२ के अनुसार अङ्क १से आरम्भकर ८ अङ्कतक जप करनेसे १०८की माला होती है।

आरभ्यानामिका मध्यं पर्वाण्युक्तान्यनुक्रमात्। तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु ॥ मध्यमाङ्गुलिमूले तु यत्पर्वद्वितयं भवेत्। तं वै मेरुं विजानीयाज्जाप्येतं नातिलङ्घयेत् ॥गायत्रीकल्प॥

अनामिका अंगुलीके बीचके पर्वसे आरम्भ करके अनुक्रमसे कनिष्ठके

मूल पर्वसे होता हुआ तर्जनीके मूल पर्वतक १० पर्वों पर अंगूठेसे जप करे। मध्यमाका मूल तथा बीचका पर्व सुमेरु है। उसका उल्लङ्घन नहीं करे। दुवारा जपते समय सुमेरुके नीचेसे अंगूठा ले जाना चाहिये।

अनामा मूलमारभ्य कनिष्ठादित एव च।
तर्जनीमध्यपर्यन्तमष्ट पर्वसु संजपेत्॥

अनामिकाके मूल पर्वसे आरम्भ करके अनुक्रमसे कनिष्ठाके मूल पर्वसे होता हुआ तर्जनीके मध्य पर्वतक ८ पर्वों पर अंगूठेसे जप करे। अनामिकाका मध्य, मध्यमाका मूल तथा मध्य और तर्जनीका मूल इन ४ पर्वों पर जप नहीं करे।

शक्तिमन्त्र-जपनेकी-करमाला।
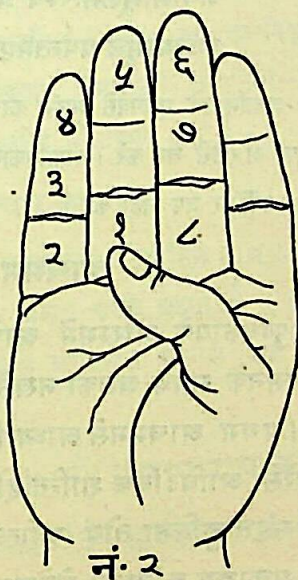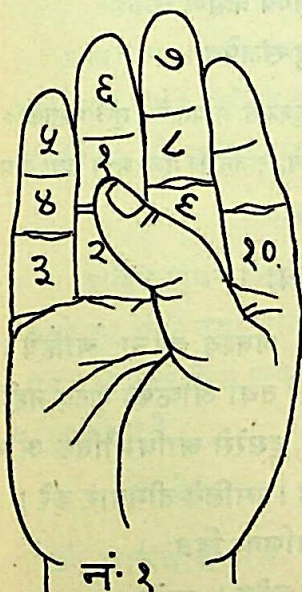
नीचे लिखी विधिसे चित्र नं० १ के अनुसार अङ्क १ से आरम्भ करके १० अङ्क तक जप करनेसे एक करमाला होती है। इसी प्रकार दश करमाला जप करके चित्र नं०२ के अनुसार अङ्क १से आरम्भकर ८ अंक तक जप करनेसे १०८ की माला होती है।

अनामिकात्रयं पर्व कनिष्ठा च त्रिपर्विका । मध्यमायाश्च त्रितयं तर्जनीमूलपर्वणि । तर्जन्यग्रे तथा मध्ये यो जपेत् स तु पापकृत्।

अनामिका अंगुलीके मध्य पर्वसे आरम्भ करके अनुक्रमसे कनिष्ठाके मूल तथा मध्यमाके मूल पर्वसे होता हुआ तर्जनीके मूल पर्व तक १० पर्वों पर अंगूठेसे जप करे। तर्जनींका मध्य तथा अग्रपर्व सुमेरु है। इनपर जप न करे।

अनामामूलमारभ्य प्रादक्षिण्य क्रमेण च।
मध्यमामूल पर्यन्तमष्टपर्वसु संजपेत् ॥

अनामिकाके मूलपर्वसे आरंभ करके अनुक्रमसे मध्यमाके मूल पर्वतक ८ पर्वों पर अंगूठेसे जप करे। अनामिकाका मध्य, तर्जनीका मूल, मध्य तथा अग्र इन ४ पर्वों पर जप नहीं करे।

आचमन-विधिः ।

पुण्यकार्यके आरम्भमें आचमन अवश्य करना चाहिये। आचमनके समय जलका नखसे स्पर्श तथा ओष्ठका शब्द नहीं करे। प्रथम आचमनसे आध्यात्मिक, दूसरेसे आधिभौतिक और तीसरेसे आधिदैविक शान्ति होती है। इसलिये तीनवार करे।

संहताङ्गुलिना तोयं गृहीत्वा पाणिना द्विजः ।
मुक्ताङ्गुष्ठ कनिष्ठेन शेषेणाचमनं चरेत् ॥ नागदेव ॥

अंगुलियोंको मिलाकर दाहिने हाथकी हथेलीमें जल लेकर अंगूठा तथा कनिष्ठा को अलग करके आचमन करना चाहिये।

हृत्कण्ठतालुगाभिस्तु यथासंख्यं द्विजातयः।
शुद्ध्येरन् स्त्री च शूद्रश्च सकृत्स्पृष्टाभिरन्ततः॥ याज्ञ०स्मृ०॥

ब्राह्मण हृदयमें, क्षत्रिय कण्ठमें और वैश्य तालुमें आचमनका जल जानेसे शुद्ध होता है। स्त्री और शूद्र केवल होठोंके जल-स्पर्शसे शुद्ध होते हैं।

श्रौताचमनम्।

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य सावित्रीं तदनन्तरम्।
तथैव व्याहृतीस्तिस्रः श्रौताचमनमुच्यते॥ आह्निक॥

प्रथम प्रणव—"ॐ" पश्चात् गायत्री —"भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्" फिर तीनों व्याहृतियों—"ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः" का उच्चारण करनेसे श्रौताचमन होता है।

स्मार्ताचमनम्।

दाहिने हाथमें जल लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए अंगूठे तथा कनिष्ठाको अलग करके ब्रह्मतीर्थ (अंगूठेके मूल) से नीचे लिखे प्रत्येक नामसे आचमन करनेसे एक आचमन होता है।

ॐ केशवाय नमः॥ ॐ नारायणाय नमः॥
ॐ माधवाय नमः॥ पश्चात् **"ॐ हृषीकेशाय नमः"॥**

बोलकर दूसरे पात्रके जलसे हाथकी शुद्धि करे।

कर्ण-नासिका-स्पर्शशुद्धिः।

गङ्गा च दक्षिणे श्रोत्रे नासिकायां हुताशनः।
उभयोः स्पर्शनेचैव तत्क्षणादेव शुद्धयति ॥ पा० स्मृ० ॥

दाहिने कानमें गङ्गाजी और नासिकामें अग्निका बास है इसलिये क[illegible]
और नासिकाके स्पर्श करनेसे शुद्धि होती है।

अर्घ्य-विधिः।

मुक्त हस्तेन दातव्यं मुद्रां तत्र न कारयेत्।
तर्जन्यंगुष्ठयोगे तु राक्षसी मुद्रिका स्मृता ॥ आह्निक ॥

तर्जनीके मूलसे अंगूठा मिलनेसे राक्षसी मुद्रा होती है। इसलिये त[illegible]
-नीसे अंगूठा अलग रखकर सीधे हाथोंसे अर्घ्य देवे।

अर्घ्यः

जल, चन्दन, अक्षत और पुष्पसे नीचे लिखे प्रत्येक नामसे अर्घ्य दे[illegible]

ॐश्रीगणेशाय नमः। ॐसत्यनारायणाय नमः
ॐब्रह्मणे नमः। ॐविष्णवे नमः। ॐरुद्राय नमः
ॐदेव्यै नमः। ॐ नवग्रहेभ्यो नमः। ॐइष्ट देवता
भ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐग्रामदेवता
भ्यो नमः। ॐ पञ्चलोकपालेभ्यो नमः। ॐदशदि
क्पालेभ्यो नमः। ॐअष्टकुलनागेभ्यो नमः। [illegible]
अष्टवसुदेवताभ्यो नमः। ॐ पञ्चभूतेभ्यो नमः
ॐभूरादिलोकेभ्यो नमः। ॐसाक्षी भूताय नमः

ॐधर्मराजाय नमः। ॐचित्राय नमः। ॐचित्रगुप्ताय नमः। ॐ श्रवणदेवताभ्यो नमः। ॐमित्राय नमः। ॐवरुणाय नमः। ॐकुबेराय नमः।

पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रसे सूर्यनारायणको अर्घ्य देवे।

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

सन्ध्या–विधिः।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यको त्रिकाल सन्ध्या करनी चाहिये। जो सन्ध्या नहीं करते उनको शुभकर्म करनेका पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता। इसलिये धर्म की रक्षा, यश, कीर्ति, तेज और धनकी वृद्धि चाहनेवालोंको प्रातः और सायं सन्ध्या तो अवश्य नित्य करनी चाहिये। जलमें सूखा वस्त्र और जलके बाहर गीला वस्त्र पहनकर सन्ध्यादि नहीं करे।

उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका।
कनिष्ठा सूर्यसहिता प्रातः सन्ध्या त्रिधा स्मृता॥ देवी भा०॥

प्रातः सन्ध्या तारोंके रहते हुए करना उत्तम, तारे लुप्त होनेपर मध्यम और सूर्योदय होनेपर कनिष्ठ होता है।

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा लुप्तसूर्यका।
कनिष्ठा तारकोपेता सायं सन्ध्या त्रिधा स्मृता॥देवी भा०॥

सायं सन्ध्या सूर्यास्तके (तीन घड़ी) पहिले श्रेष्ठ, ताराओंके न निकलने तक मध्यम और ताराओंके निकलने पर कनिष्ठ कही है।

उदयास्तमयादूर्ध्वं यावत् स्याद् घटिकात्रयम्॥
तावत्सन्ध्यामुपासीत प्रायश्चित्तमतः परम्॥ प्रयोग पा०॥

सूर्योदय और सूर्यास्तके तीन घड़ी पीछे तक सन्ध्या करनी चाहिये इसके उपरान्त करनेवाला प्रायश्चित्तका भागी होता है।

गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यामिमां जपेत्।
अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ वृद्धिमवाप्नुयात्॥ आह्निक॥

गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी गायत्रीकें आदिमें ॐ का उच्चारण करके जप करें अन्तमें ॐ का उच्चारण करनेसे वृद्धि नहीं होती है।

चतुष्षष्टिकलाविद्या सकलैश्वर्यसिद्धिदम्।
जपारम्भे च हृदयं जपान्ते कवचं पठेत्॥

जपके आदिमें चौसठ कलायुक्त विद्या तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्योंकी सिद्धि देने वाले गायत्री हृदयका तथा अन्तमें कवचका पाठ करे।

गृहेषु प्राकृती सन्ध्या गोष्ठे शतगुणा स्मृता।
नदीषु शतसाहस्री अनन्ता शिवसन्निधौ॥ शातातप स्मृ०॥

घरमें सन्ध्या करनेसे साधारण, गोशालामें सौगुना, नदीके किनारे लाख गुना और शिवालयमें अनन्त गुना फल होता है।

दानमाचमनं होमं भोजनं देवतार्चनम्।
प्रौढ़पादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्॥ आचार मयूख॥

एक जंघेपर एक पैर रखकर और दोनों घुटनोंको खड़ा करके दान, आचमन, होम, भोजन, देवपूजन, ब्रह्मयज्ञ और पितृतर्पण नहीं करे।

मध्याह्ने सकृदेव स्यात् सन्ध्ययोस्तु त्रिवारतः। ईषन्नम्रः प्रभाते तु मध्याह्ने ऋजु संस्थितः। द्विजोर्घ्यं प्रक्षिपेद्देव्या सायन्तूपविशन् भुवि॥ शौनक॥

प्रातःकालमें खड़े हुए थोड़ा झुककर तथा मध्याह्नमें सीधे खड़े और सायं-कालमें बैठे हुए, प्रातः तथा सायंकालमें तीन और मध्याह्नमें एक अर्घ्य देवे।

हस्ताभ्यां स्वस्तिकं कृत्वा प्रातस्तिष्ठेद्दिवाकरम्।
मध्याह्ने तु ऋजू बाहू सायं मुकुलितौ करौ ॥

प्रातःकालमें खड़ा होकर दोनों हाथोंको सीधा रखते हुए, मध्याह्नमें ऊर्ध्व-बाहु (दोनों हाथ ऊपर) होकर और सायंकालमें बन्द कमलके सदृश हाथों को जोड़कर उपस्थान करे।

पीड़येद्दक्षिणां नाड़ीमङ्गुष्ठेन तथोत्तराम्।
कनिष्ठानामिकाभ्यान्तु मध्यमां तर्जनीं त्यजेत् ॥ देवी०भा०॥

नासिकाके दक्षिण छिद्रको अंगुष्ठसे दबाकर श्वास चढ़ावे और बायें छिद्रको कनिष्ठा तथा अनामिकासे दबावे। मध्यमा तथा तर्जनी अंगुली अलग रखे।

पञ्चांगुलीभिर्नासाग्रं पीड़येत् प्रणवेन तु।
मुद्रेयं सर्वपापघ्नी वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ आचारार्के ॥

पांचों अंगुलियोंसे नासिकाके अग्र भागको दबाकर प्राणायाम करे। यह प्राणायाम मुद्रा वानप्रस्थ और गृहस्थके सभी पापोंको दूर करनेवाली है।

प्रातः सन्ध्या।

गमछा आदि दूसरा वस्त्र (अभावमें आधी धोती ओढ़े) लेकर, आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर और मन्त्रसे शिखा बाँध-कर, तिलक करके, दाहिनी अनामिका अंगुलीकी जड़में दो कुशाकी और बायींमें तीनकी पवित्री धारण करे। बायें हाथमें बहुतसी कुशाओंकी तथा दाहिनेमें तीन कुशाओंकी गुच्छी ले-कर, ईशान कोणमें मुख करके स्मार्त आचमन करे। पश्चात्

अंगूठेकी जड़से होठोंको पोंछकर हाथ धोवे ।

पवित्र-करण-मन्त्रः ।

ॐ अपवित्रः पवित्रोवेत्यस्य वामदेव ऋषिः विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्रसे अपने शरीर पर जल छिड़के ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

आसन-पवित्र-करण-मन्त्रः ।

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ॥

आसन पर जल छोड़े ।

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

हे पृथ्वि ! विष्णुने तुमको धारण किया । तुमने लोकोंको धारण किया है । अब तुम मुझे धारण करो और मेरे आसनको पवित्र करो ।

दाहिने हाथमें जल लेकर संकल्प वाक्यके अन्तमें "प्रातः सन्ध्योपासनकर्म करिष्ये" कहकर संकल्प छोड़े ।

विनियोगः ।

ॐ ऋतंचेत्यघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता आचमने विनियोगः ॥

आचमनम् ।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् । दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

भावार्थ—महाप्रलयके अन्धकारमें केवल परब्रह्म रहे । सृष्टिके आदिमें जलमय समुद्र हुआ, पश्चात् ब्रह्मा हुए, उन्होंने दिन और रात्रि करने वाले सूर्य-चन्द्रमा को रचा । पश्चात् रात्रि,दिन, संवत्सर और स्वर्ग लोकादिकी रचना की ।

ततो वारिणात्मानं वेष्टयित्वा सप्रणवगायत्र्या रक्षां कुर्यात् ॥

अपनी रक्षाके लिये दाहिने हाथमें जल लेकर वायें हाथसे ढककर गायत्री मन्त्र बोलकर उस जलको दक्षिणावर्तसे अपने चारों ओर छोड़े ।

विनियोगाः ।

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः ॥ ॐसप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि । अग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवताः अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः ॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री

छन्दः सविता देवताऽग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः ॥ ॐ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता प्राणायामे विनियोगः ॥

प्राणायाम-विधिः ।

इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा बद्धासनः सम्मीलितनयनो मौनी प्राणायामत्रयं कुर्यात् । तत्र वायोरादानकाले पूरकनामा प्राणायामस्तत्र नीलोत्पलदलश्यामं चतुर्भुजं विष्णुं नाभौ ध्यायेत् । धारणकाले कुम्भकस्तत्र कमलासनं रक्तवर्णं चतुर्मुखब्रह्माणं हृदि ध्यायेत् । त्यागकाले रेचकस्तत्र श्वेतवर्णं त्रिनयनं शिवं ललाटे ध्यायेत् । त्रिष्वप्येतेषु प्रत्येकं त्रिर्मन्त्राभ्यासः । प्रत्येकमोंकारादिसप्तव्याहृतयः ॐकारादि सावित्री ॐकारद्वयमध्यस्थः शिरश्चेति मन्त्रस्तस्य स्वरूपम् ।

पद्मासन करके ऋषियोंका स्मरणकर मौन होकर नेत्रोंको मूंदकर तीन प्राणायाम करे । **पूरक प्राणायाम**—नासिकाके दाहिने छिद्रको अंगूठेसे दबाकर बायें छिद्रसे श्वास खींचता हुआ नीलकमलके सदृश श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुका अपनी नाभिमें ध्यान करे । **कुम्भक प्राणायाम**—उस छिद्रको दबाये हुए नासिकाके बायें छिद्रको कनिष्ठा और अनामिका अंगुलियोंसे बन्द करके श्वासको रोककर कमलके आसनपर बैठे हुए रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्माका अपने हृदयमें ध्यान करे । **रेचक प्राणायाम**—श्वेतवर्ण त्रिनेत्र शिवजीका अपने ललाटमें ध्यान करता हुआ नासिकाके दाहिने छिद्रको खोलकर धीरे धीरे

श्वास छोड़े । (गृहस्थ तथा वानप्रस्थी पाँचों अंगुलियोंसे नासिकाको दबाकर भी प्राणायाम कर सकता है)।

प्राणायाम-मन्त्रः ।

नीचे लिखे मन्त्रको प्रत्येक प्राणायामके समय तीन या एकबार जपे ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

विनियोगः ।

ॐ सूर्यश्चमेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

आचमनम् ।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

सूर्यनारायण, यक्षपति और देवताओंसे मेरी प्रार्थना है कि, यक्ष विषयक तथा क्रोधसे किये हुए पापोंसे मेरी रक्षा करें । दिन या रात्रिमें मन, वाणी, हाथ, पैर, उदर और इन्द्रियसे जो पाप हुए हों, उन पापोंको अमृत योनि

सूर्यमें होम करता हू । इसलिये उन पापोंको नष्ट करो ।

विनियोगः ।

ॐ आपोहिष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः ॥

बायें हाथमें जल लेकर दाहिने हाथसे नीचे लिखे मन्त्र बोलते हुए एकसे सात तक अपने शरीरपर, आठवेंसे पृथ्वीपर और नवेंसे मस्तकपर जल छोड़े।

ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः १। ॐ ता न ऊर्जे दधातन २। ॐ महेरणाय चक्षसे ३। ॐ यो वः शिवतमो रसः ४। ॐ तस्य भाजयते ह नः ५। ॐ उशतीरिव मातरः ६। ॐ तस्मा ऽअरङ्गमामवः ७। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ ८। ॐ आपो जनयथा च नः ९ ॥

हे जल ! जैसे माता अपने पुत्रका दूध आदिसे कल्याण करती है, वैसेही मुझे उत्तम गरिष्ठभोजन और सन्तान उत्पन्न तथा सुखादि भोगनेकी शक्ति दो।

विनियोगः ।

ॐ द्रुपदादिवेति कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्रसे तीन बार या एक बार मस्तक पर जल छोड़े।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥

वृक्षकी जड़ अलग हो जानेके बाद फिर नहीं जुड़ती, उसी प्रकार मुझसे

पापोंसे दूर करो। जिस प्रकार स्नान करनेसे शरीर तथा तपानेसे घृत शुद्ध होता है उसी प्रकार हे जल! मुझे पापोंसे शुद्ध करो।

विनियोगः।

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः॥

दाहिने हाथमें जल लेकर नासिकासे स्पर्श करके नीचे लिखा मन्त्र तीन बार या एक बार पढ़े और ध्यान करे कि यह जल श्वासके साथ नासिकाके दाहिने छिद्रसे भीतर जाकर अन्तःकरणको शुद्ध करके वायें छिद्रसे बाहर आया है। पश्चात् उस जलको विना देखे वायीं ओर फेंक देवे।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥ समुद्राद-र्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदध-द्विश्वस्य मिषतो वशी॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा-पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥

इस मन्त्रका भावार्थ पहिले लिखा गया है।

विनियोगः।

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः॥

आचमनम्।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योतीरसोऽमृतम् ॥

हे जल ! आप जीव मात्रके मध्यमेंसे विचरते हो । इस ब्रह्माण्डरूप गुहामें सब ओर आपकी गति है । तुम्ही यज्ञ हो, वषट्कार हो, जलरूप हो, ज्योतिस्वरूप हो, रसरूप हो और अमृत भी तुम्ही हो ।

विनियोगः ।

ॐ भूर्भुवः स्वरिति महाव्याहृतीनां परमेष्ठीप्रजापतिर्ऋषिः अग्निवायुसूर्या देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि । ॐ तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्रऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः अर्घ्यदाने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मन्त्रको प्रत्येक बार बोलकर प्रातःकालमें खड़े हुए थोड़ा झुककर जलको उछालते हुए सूर्यको तीन बार अर्घ्य देवे । प्रथम अर्घ्यसे राक्षसोंकी सवारी,दूसरेसे हथियार और तीसरेसे राक्षसोंका नाश होता है । मध्याह्नमें सीधा खड़ा होकर एकबार और सायंकालमें बैठे हुए तीनबार देवे ।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः ॥

सूर्योदयके तीन घड़ी बाद प्रातः सन्ध्या करनेसे प्रायश्चित्तके निमित्त नीचे लिखे मन्त्रसे एक अर्घ्य और देवे । सायं सन्ध्या भी यदि सूर्यास्तके तीन घड़ी बाद करे तो भी एक अर्घ्य और देवे ।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

उपस्थानम्।

दाहिना पैर या एड़ी उठाकर प्रातःकालमें दोनों हाथोंको सीधा रखते हुए, मध्याह्नमें दोनों हाथोंको ऊपर करके और सायंकालमें बैठे हुए हाथ जोड़कर दोनों हाथोंकी हथेली फुलाकर उपस्थान करे। उपर्युक्त विधिसे प्रत्येक विनियोगके साथ एक-एक मन्त्र बोलकर भी कर सकता है।

विनियोगाः।

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥१॥ ॐ उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥२॥ ॐ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥३॥ ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ४ ॥ मन्त्राः ॥ ॐ उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवन्देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥ ॐ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥ ॐ चित्रन्देवानामु-

दगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा द्यावा-पृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥३॥ ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳश्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाःस्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥

षडङ्गन्यासः ।

बैठकर नीचे लिखे मन्त्र बोलकर दाहिने हाथसे मन्त्रके सामने लिखे अनुसार अंगोंका स्पर्श करनेसे एक षडङ्गन्यास होता है । इसे तीनबार करे। ॐ हृदयाय नमः (हृदयमें दाहिनी हथेली) १ । ॐ भूः शिरसे स्वाहा (मस्तकमें चारों अंगुल्योंका अगला पर्व) २। ॐ भुवः शिखायै वषट् (शिखामें मुठ्ठी बाँधकर अंगूठेका अग्र भाग) ३ । ॐ स्वः कवचाय हुम् (दोनों हाथोंको कुछ ऊँचा तथा सीधा रखकर दाहिनी कनिष्ठाके मूलसे बायीं भुजाके ऊपरी भागका तथा बायीं कनिष्ठाके मूलसे दाहिनी भुजाके ऊपरी भागका स्पर्श करे) ४। ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् (कनिष्ठा तथा अनामिका को अंगूठेसे दबाकर मध्यमाके अग्रभागसे बायें और तर्जनीके अग्रभागसे दाहिने नेत्रका स्पर्श करे) ५ । ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् (कनिष्ठा तथा अनामिकाको अंगूठेसे दबाकर मध्यमा और तर्जनीसे बायें हाथकी हथेलीपर ताली बजावे) ६ । पश्चात् अपने चारों ओर चुटकी बजावे।

नीचे लिखे मन्त्रोंसे अंगोंका स्पर्श करे या केवल मन्त्र बोले।

ॐ तत्पदं पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम्। वरेण्यं कटिदेशन्तु नाभिं भर्गस्तथैव च। देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति गलं तथा। धियो मे पातु जिह्वायां यः पदं पातु लोचने। ललाटे नः पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात्॥

"तत्"—मेरे पैरोंकी "सवितुः"—जंघाकी "वरेण्यं"—कटिकी "भर्गः"—नाभिकी "देवस्य"—हृदयकी "धीमहि"—गलेकी "धियः"—जिह्वाकी "यः"—नेत्रोंकी "नः"—ललाटकी और "प्रचोदयात्"—मस्तककी रक्षा करे।

विनियोगाः।

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः जपे विनियोगः॥ ॐ त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः॥ ॐ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने जपे विनियोगः॥

ध्यानम्।

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता॥

आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥

श्वेतवर्ण वाली, कौशेय वस्त्र, श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, आभूषणोंसे शोभित, सूर्यमण्डलमें तथा ब्रह्मलोकमें रहने वाली, रुद्राक्षकी माला हाथमें ली हुई, पद्मासनमें स्थित शुभको देने वाली गायत्रीका ध्यान करे ।

विनियोगः ।

ॐ तेजोसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्री छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः ॥

आवाहनमन्त्रः ।

ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥

हे गायत्री ! आपका तेज प्रकाशमान है, आप विनाश रहित हो, मनको लगाने वाली और देवताओंके पूजने योग्य हो, देवता आपका निरन्तर ध्यान करते हैं । आप अमृतमय हो, इसलिये मैं आपका आवाहन करता हूँ ।

विनियोगः ।

ॐ तुरीयस्य विमलऋषिः परमात्मा देवता गायत्री छन्दः गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ॥

उपस्थानमन्त्रः ।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय

परोरजसे सावदोम् ॥

हे गायत्री ! त्रिलोकीरूप एक चरणसे एक पदी हो, त्रयी विद्यारूप करके द्विपदी हो, प्राण आदि तीसरे पदसे त्रिपदी हो, सूर्यमण्डलमें विराजमान पुरुष करके चतुष्पदी हो, इन्हीं चार उपासक पदोंसे जानी जाती हो। अपद हो, ध्यानसे दर्शन योग्य हो और रजोगुणसे परे हो अर्थात् शुद्ध स्वरूप हो, ब्रह्मा, विष्णु और शिव इनसे भिन्न आपके ब्रह्म स्वरूपको नमस्कार है। ब्रह्मपदकी प्राप्तिमें मेरेको पाप विघ्न न करें अर्थात् ब्रह्मरूप प्राप्त होवे।

गायत्रीशापविमोचनम् ।

ब्रह्मा, वसिष्ठ और विश्वामित्रने गायत्री मन्त्रको शाप दिया, उस शाप निवृत्तिके लिये शाप-विमोचन अवश्य करे।

ब्रह्मशापविमोचनम् ।।

ॐ अस्य श्री ब्रह्मशापविमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः भुक्तिमुक्तिप्रदा ब्रह्मशापविमोचनी गायत्री शक्तिर्देवता गायत्री छन्दः ब्रह्मशापविमोचने विनियोगः॥ मन्त्रः॥ ॐ गायत्रीं ब्रह्मेत्युपासीत यद्रूपं ब्रह्मविदो विदुः तां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः।ॐ वेदान्तनाथाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥ ॐ देवी गायत्री त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥

वसिष्ठशापविमोचनम्।

ॐ अस्य श्री वसिष्ठशापविमोचनमन्त्रस्य निग्रहा-

नुग्रहकर्त्ता वसिष्ठ ऋषिः वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वसिष्ठशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ॥ मन्त्रः ॥ ॐ सोऽहमर्कमयं ज्योतिरहं शिवः आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसोऽस्म्यहम्। इत्युक्त्वा योनिमुद्रां प्रदर्श्य गायत्रीत्रयं पठित्वा ॥(योनिमुद्रा दिखाकर तीनवार गायत्री जपे।) ॐ देवी गायत्री त्वं वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ॥

विश्वामित्रशापविमोचनम्।

ॐ अस्य श्री विश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य नूतनसृष्टिकर्त्ता विश्वामित्रऋषिः विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता वाग्देहा गायत्री छन्दः विश्वामित्रशापविमोचनार्थं जपे विनियोगः ॥मन्त्रः॥ ॐ गायत्रीं भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भां यदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये। यन्मुखान्निःसृतोऽखिलवेदगर्भः ॥ शापयुक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन। शापादुत्तारिता सा तु भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ॥ प्रार्थना ॥ ॐ अहो देवि महादेवि सन्ध्ये विद्ये सरस्वति। अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तु ते ॥ ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव ॥

वसिष्ठशापाद्विमुक्ता भव ॥ विश्वामित्रशापाद्विमुक्ता भव ॥

प्रातःकाले ब्रह्मरूपगायत्रीध्यानम् ।

ॐ बालां विद्यान्तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम् । रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रकरां तथा ॥ कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम् । ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् । मन्त्रेणावाहयेद्देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात् ॥

ब्रह्मलोकमें वसने वाली, कन्याके सदृश, हंस पर बैठी हुई, लाल रंग, चार मुख, और चार हाथवाली, दो लाल वस्त्र (धोती और चोली) धारण किये, हाथोंमें रुद्राक्षकी माला, दण्ड, पुस्तक और कमण्डलु लिये सूर्य मण्डलसे आती हुई गायत्री देवीका ध्यान करे ।

मध्याह्नकाले विष्णुरूप-गायत्री-ध्यानम् ।

श्री भारत धर्म महामण्डल द्वारा प्रकाशित 'नित्यकर्म चन्द्रिका' तथा 'कल्याण' पत्रके देवी अङ्कमें मध्याह्नमें विष्णुरूपाका ध्यान लिखा है । और मध्याह्न सन्ध्याके विनियोगमें भी विष्णु ऋषि हैं । अतः विष्णुरूपागायत्रीका ध्यान करे ।

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससम् । युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम् ॥

सूर्यमण्डलमें स्थित, युवावस्थावाली, गरुड़पर बैठी हुई, पीले वस्त्र धारण किये हुए, हाथोंमें शंख, चक्र, गदा और पद्म लिये यजुर्वेदसे युक्त गायत्री देवीका ध्यान करे ।

सायंकाले शिवरूप-गायत्रीध्यानम् ।

ॐ सायाह्ने शिवरूपाञ्च वृद्धां वृषभवाहिनीम् ।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम् ॥

सूर्यमण्डलमें स्थित, वृद्धावस्थावाली, बैल पर बैठी हुई, हाथोंमें त्रिशूल, डमरू, पाश तथा पात्र लिये हुए, सामवेदसे युक्त गायत्री देवीका ध्यान करे।

गायत्री-हृदयम् ।

ॐ अस्य श्री गायत्रीहृदयस्य नारायण ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः परमेश्वरी गायत्री देवता गायत्रीहृदय जपे विनियोगः ॥ अथार्थन्यासः ॥ द्यौर्मूर्ध्नि दैवतम् । दन्तपंक्तावश्विनौ । उभे सन्ध्ये चोष्ठौ मुखमग्निः । जिह्वा सरस्वती । ग्रीवायां तु बृहस्पतिः । स्तनयोर्वसवोऽष्टौ । बाह्वोर्मरुतः । हृदये पर्जन्यः । आकाशमुदरम् । नाभावन्तरिक्षम् । कट्योरिन्द्राग्नी । जघने विज्ञानघनः प्रजापतिः । कैलासमलये ऊरू । विश्वेदेवा जान्वोः । जंघायां कौशिकः । गुह्यमयने । ऊरू पितरः । पादौ पृथ्वी । वनस्पतयोऽङ्गुलीषु । ऋषयो रोमाणि । नखानि मुहूर्तानि । अस्थिषु ग्रहाः । असृङ्मांसं ऋतवः । संवत्सरा वै निमिषम् । अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमाः। प्रवरां दिव्यां गायत्रीं सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ॥

सेवक—ठाकुरदास सुरेका।
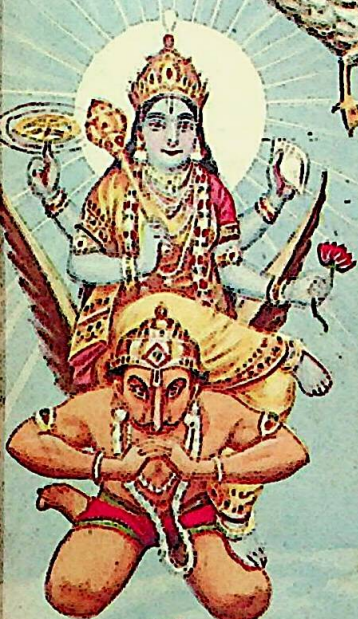
ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः । ॐ तत्पूर्वाजयाय नमः । तत्प्रातरादित्याय नमः । तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायै नमः । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातरधीयानो अपापो भवति । सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति । सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति । अवाच्यवचनात्पूतो भवति । अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति । अभोज्यभोजनात्पूतो भवति । अचोष्यचोषणात्पूतो भवति । असाध्यसाधनात्पूतो भवति । दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतो भवति । सर्वप्रतिग्रहात्पूतो भवति । पंक्तिदूषणात्पूतो भवति । अनृतवचनात्पूतो भवति । अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति । अनेन हृदयेनाधीतेन क्रतुसहस्रेणेष्टं भवति । षष्टिशतसहस्रगायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयेत् । तस्य सिद्धिर्भवति । य इदं नित्यमधीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यत इति ॥ ब्रह्मलोके महीयते ॥ इत्याह भगवान् श्रीनारायणः ॥

जपके आदिमें गायत्रीहृदयका तथा अन्तमें कवचका पाठ करके प्रातःसन्ध्यामें जप करनेसे रात्रिके और सायं सन्ध्यामें दिनके किये हुए पाप नष्ट होते हैं । इसलिये गायत्रीहृदय और कवचका पाठ अवश्य करे ।

जपके पूर्वकी २४ मुद्रायें (चित्र देखो) ।

सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतं तथा । द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुष्पंचमुखं तथा ॥ षण्मुखाऽधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा । शकटं यमपाशं च ग्रन्थितं चोन्मुखोन्मुखम् ॥ प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम् । सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा । एता मुद्राश्चतुर्विंशज्जपादौ परिकीर्तिताः ॥

जपके पूर्वकी २४ मुद्रायें करने की विधि ।

आकुञ्चितांगुलिकरौ संयुतौ सुमुखं भवेत् १ । कोषाकारं संपुटं स्याद् २ विततं ३ विस्तृतं भवेत् ॥ विस्तीर्णौ विततौ हस्तावन्योऽन्यांगुलिसंयुतौ ४ । कनिष्ठानामिकायुक्तौ हस्तौ द्वौ द्विमुखं भवेत् ५॥ तदेव मध्यमायुक्तं त्रिमुखं परिकीर्तितम् ६ । तदेव तर्जनीयुक्तं चतुर्मुखमुदीरितम् ७॥ तदेव स्यात् पञ्चमुखं मिलितांगुष्ठकं यदि ८। तदेव षण्मुखं प्रोक्तं यद्यश्लिष्टकनिष्ठकम् ९। आकुञ्चिताग्रौ संयुक्तौ न्युब्जौ हस्तावधोमुखम् १०। उत्तानौ ता दृशावेव व्यापकाञ्जलिकं करौ ११॥ अंगुष्ठद्वयसंयुक्तं मुष्टिद्वयमधोमुखम् । भवेद्यदि तदेवाहुः शकटं मुनिसत्तमाः १२॥ मुष्टिं कृत्वा करौ योज्यौ तर्जन्यौ सम्प्रसार्य च । आकुञ्चिताग्रौ ह योज्य यमपाशं विदुर्बुधाः १३॥ अन्योन्यायतसंश्लिष्टदशांगुलि करावुभौ । अन्योन्यमभिबध्नीयात् ग्रन्थितं परिकीर्तितम् १४

कृत्वा करौ सम्पुटकौ पूर्वं वामकरं सुधीः। अधोमुखेन दक्षेण योजयेत् चोन्मुखोन्मुखम् १५॥ अधः कोषाकृतिकरौ प्रलम्बं कोविदो विदुः १६। युतं मुष्टिद्वयं चैव सम्यङ् मुष्टिकमीरितम् १७। दक्षपाणिपृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत्। अङ्गुष्ठौ चालयेत् सम्यङ् मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी १८॥ वामहस्ते च तर्जन्यां दक्षिणस्य कनिष्ठिका। तथा दक्षिणतर्जन्यां वामांगुष्ठं नियोजयेत्॥ उन्नतं दक्षिणांगुष्ठं वामस्य मध्यमादिकाः। अंगुलीर्योजयेत् पृष्ठे दक्षिणस्य करस्य च॥ वामस्य पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा। अधोमुखे च ते कुर्याद्दक्षिणस्य करस्य च॥ कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद्दक्षपाणिं च सर्वतः। कूर्ममुद्रेयमाख्याता देवताध्यानकर्मणि १९॥ तर्जनीं दक्षहस्तस्य वामांगुष्ठे निवेश्य च। हस्तेन हस्तं बध्नीयात् कोलमुद्रा समीरिता २०॥ प्रसारितांगुलिकरौ समीपं कर्णयोर्नयेत्। सिंहाक्रान्तं समुदितं गायत्रीजपतत्परैः २१॥ दर्शयेच्छ्रोत्रयोर्मध्ये हस्तावंगुलिपञ्चकौ। महाक्रान्ता भवेन्मुद्रा गायत्रीहृदयं गता २२॥ मुष्टिं कृत्वा करं दक्षं वामे करतले न्यसेत्। उच्छ्रितञ्च करं कृत्वा मुद्गरं समुदाहृतम् २३॥ दक्षिणेन करेणैव चलितांगुलिना करः। वदनाभिमुखं चैव पल्लवं मुनिभिः स्मृतम्॥२४॥

गायत्री-मन्त्रः।

नीचे लिखे गायत्री मन्त्रका करमाला पर जप करनेसे अधिक फल होता है। इसलिये करमाला पर भी अवश्य जप करें। गायत्री मन्त्रके २४ लक्ष जपके एक पुरश्चरणका अनुष्ठान करनेसे

जपके पूर्वकी २४ मुद्राओंके चित्र।
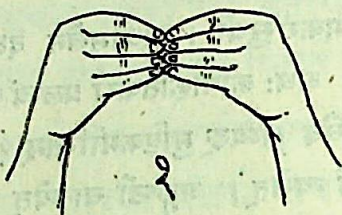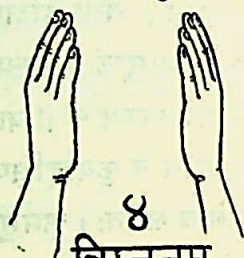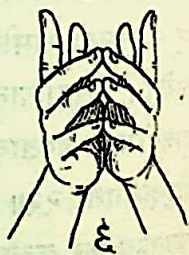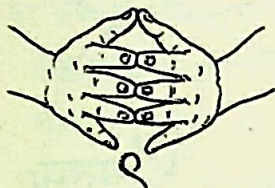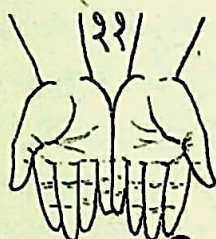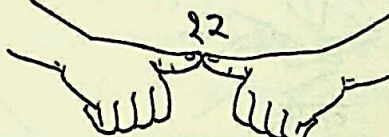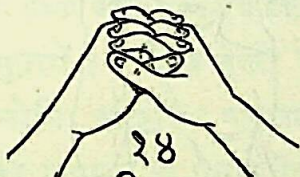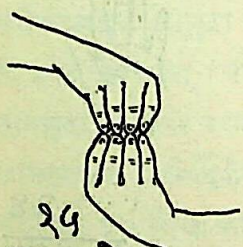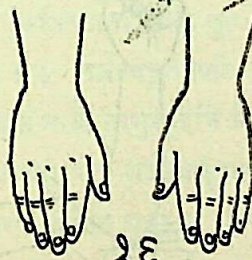
जपके पूर्वकी २४ मुद्राओंके चित्र ।

जपके पूर्वकी २४ मुद्राओंके चित्र।
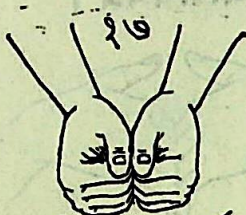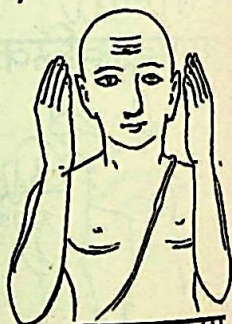
विपुल ऐश्वर्य, स्वर्ग तथा मोक्ष प्राप्त होता है। यदि स्वयं नहीं कर सके तो ब्राह्मणों द्वारा अवश्य कराना चाहिये।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

ॐ—परब्रह्म, भूः—सत्, भुवः—चित्, स्वः—आनन्द-स्वरूप, तत्—उस, सवितुः—जगतके उत्पत्तिस्थितिप्रलयकर्ता, देवस्य—स्वयं प्रकाश देवताके, वरेण्यं—सबके भजने योग्य, भर्गः—कल्याणकारी तेजका, धीमहि—ध्यान करते हैं, यः—जो (वह), नः—हमारी, धियः—बुद्धिको धर्मादि शुभकर्मों में, प्रचोदयात्—प्रेरित करे। अर्थात्—हम उस परब्रह्म सच्चिदानन्दस्वरूप जगतके उत्पत्तिस्थितिप्रलयकर्ता स्वयं प्रकाश देवताके सबके भजने योग्य कल्याणकारी तेजका ध्यान करते हैं। वह हमारी बुद्धिको धर्मादि शुभकर्मों में प्रेरित करे।

जपके बादकी ८ मुद्रायें। (चित्र देखो)।

सुरभिर्ज्ञानवैराग्ये योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्गं निर्वाणमुद्राष्टौ जपान्ते च प्रदर्शयेत्॥

जपके बादकी ८ मुद्रायें करने की विधि।

अन्योन्याभिमुखी श्लिष्टा कनिष्ठानामिका पुनः। तथैव तर्जनीमध्या धेनुमुद्रा समीरिता १॥ तर्जन्यङ्गुष्ठकौ सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत्। वामहस्ताम्बुजं वामे जानुमूर्द्धनि विन्यसेत्। ज्ञानमुद्रा भवेदेषा रामचन्द्रस्य प्रेयसी २॥ तर्जन्यङ्गुष्ठकौ सक्तौ जान्वन्ते च विनिर्दिशेत्। वैराग्या ह्यस्ति मुद्रा च मुक्तिसाधनकारिका ३॥ मिथः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके। अना-

जपके बादकी ८ मुद्राओंके चित्र ।
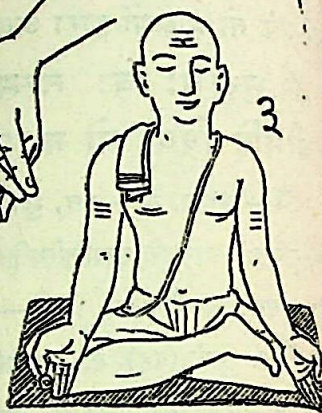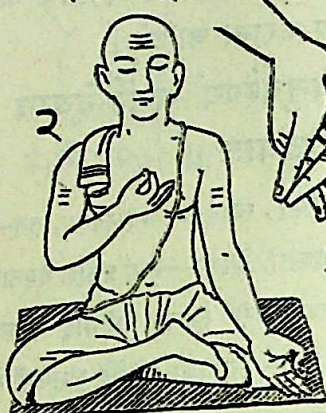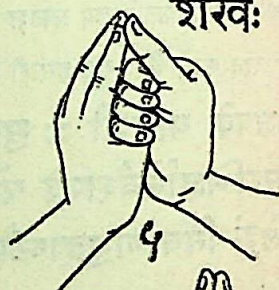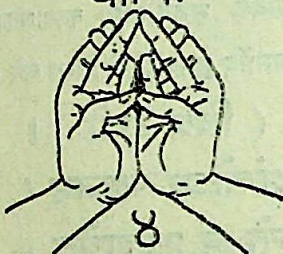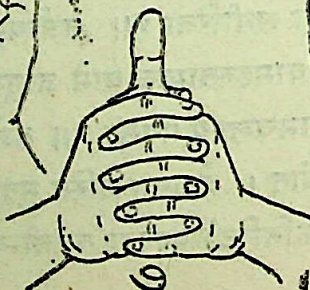
मिकोर्द्ध्वसंश्लिष्टे दीर्घमध्यमयोरथ। अङ्गुष्ठाग्रद्वये न्यस्य योनिमुद्रेयमीरिता ४॥ वामाङ्गुष्ठन्तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना। कृत्वोत्तानां ततो मुष्टिमङ्गुष्ठन्तु प्रसारयेत्॥ वामाङ्गुल्यस्तथा श्लिष्टा संयुक्ताः स्युः प्रसारिताः। दक्षिणांगुष्ठसंस्पृष्टा मुद्रैषा शंखमुद्रिका ५॥ हस्तौ तु सम्मुखौ कृत्वा संहतप्रोन्नतांगुली। तलान्तमिलितांगुष्ठौ कृत्वैषा पद्ममुद्रिका ६॥ उच्छ्रितं दक्षिणांगुष्ठं वामांगुष्ठेन बन्धयेत्। वामांगुलीर्दक्षिणाभिरंगुलीभिश्च बन्धयेत्। लिङ्गमुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यकारिणी ७॥ अधोमुखं वामकरं तदूर्ध्वं दक्षिणन्तथा। उत्तानं स्थापयित्वा च संयुक्तांगुलिकौ तदा॥ हस्तौ तु मुष्टिकौ कृत्वा श्रोत्रपार्श्वे च कारयेत्। तर्जन्यौ दर्शयेदूर्ध्वमेषां निर्वाण संस्मृता ॥८॥

गायत्री-कवचम्।

ॐ अस्य श्री गायत्रीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री च्छन्दो गायत्री देवता ॐ भूः बीजम् भुवः शक्तिः स्वः कीलकम् गायत्रीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥ अथ ध्यानम्॥ पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटिसमप्रभाम्। सावित्रीं ब्रह्मवरदां चन्द्रकोटिसुशीतलाम्॥ त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहारविराजिताम्। वराभयाङ्कुशकशाहेमपात्राक्षमालिकाः॥ शङ्खचक्राब्जयुगलं कराभ्यां दधतीं पराम्। सितपङ्कजसंस्थां च हंसारूढां सुखस्मिताम्। ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गा-

यत्रीकवचं जपेत् ॥ ॐ ब्रह्मोवाच ॥ विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्रीकवचं शृणु । यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत्क्षणात् ॥ १ ॥ सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी । ललाटं ब्रह्मदैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी ॥ २ ॥ कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रिकाऽम्बके । गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ ॥ ३ ॥ द्विजान् यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती । सांख्यायनी नासिकां मे कपोलौ चन्द्रहासिनी ॥ ४ ॥ चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी । स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी ॥ ५ ॥ उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया । जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी ॥६॥ पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु । ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः सन्ध्यात्मिकाऽवतु ॥ ७ ॥ जंघयोः पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्मशीर्षका । सूर्या पदद्वयं पातु चन्द्रा पादांगुलीषु च ॥८ ॥ सर्वाङ्गं वेदजननी पातु मे सर्वदाऽनघा । इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्याः सर्वपावनम् । पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्वरोगनिवारणम् ॥ ९ ॥ त्रिसन्ध्यं यः पठेद्विद्वान् सर्वान् कामानवाप्नुयात्

सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः स भवेद्वेदवित्तमः ॥१०॥ सर्वयज्ञफलं प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात् । प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थांश्चतुर्विधान् ॥११॥

श्री विश्वामित्र संहितोक्तं कवचं समाप्तम् ॥

गायत्री-तर्पणम् । (केवल प्रातः सन्ध्यामें करे) ।

ॐ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः सविता देवता गायत्री छन्दः गायत्रीतर्पणे विनियोगः ॥ ॐ भूः ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि । ॐ भुवः यजुर्वेदपुरुषं त० । ॐ स्वः सामवेदपुरुषं त० । ॐ महः अथर्ववेदपुरुषं त० । ॐ जनः इतिहासपुराणपुरुषं त० । ॐ तपः सर्वागमपुरुषं त० । ॐ सत्यं सत्यलोकपुरुषं त० । ॐ भूः भूर्लोकपुरुषं त० । ॐ भुवः भुवर्लोकपुरुषं त० । ॐ स्वः स्वर्लोकपुरुषं त० । ॐ भूः एकपदां गायत्रीं त० । ॐ भुवः द्विपदां गायत्रीं त० । ॐ स्वः त्रिपदां गायत्रीं त० । ॐ भूर्भुवःस्वः चतुष्पदां गायत्रीं त० । ॐ उषसीं त० । ॐ गायत्रीं त० । ॐ सावित्रीं त० । ॐ सरस्वतीं त० । ॐ वेदमातरं त० । ॐ पृथिवीं त० । ॐ अजां त० । ॐ कौशिकीं त० । ॐ सांकृतिं त० । ॐ सर्वजितां त० ॥ ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

प्रदक्षिणा-मन्त्रः ।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

क्षमा—प्रार्थना ।

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥

विसर्जनम् ।

ॐ उत्तमे शिखरे देवि ! भूम्यां पर्वतमूर्द्धनि ।
गायत्रिच्छन्दसां मातर्गच्छ देवि ! यथासुखम् ॥

पृथ्वीपर सुमेरु पर्वतके उत्तम शिखरपर बसनेवाली, हे वेदमाता गायत्री देवि ! आप सुखसे पधारिये । सन्ध्याके पश्चात् बचे हुए जलको फेंक देवे । जपादि समाप्त होनेके बाद आसनके नीचे जल छोड़कर उस जलको ललाटमें लगावे।

अवशिष्ट—जलम् ।

पादशेषं पीतशेषं सन्ध्याशेषं तथैव च ।
शुनोमूत्रसमं तोयं पीत्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

पैर धोनेसे, पीनेसे और सन्ध्या करनेसे बचा हुआ जल श्वानमूत्रके तुल्य हो जाता है । उसके पीनेसे चान्द्रायण व्रत करनेसे पवित्र होता है । इसलिये बचे हुए जलको फेंक देवे ।

मध्याह्न-सन्ध्या ।

मध्याह्नमें करना उत्तम है । यदि उस समय नहीं कर सके तो प्रातःकृत्यके पश्चात् भी कर सकता है । प्राणायाम मन्त्रके बाद "ॐ सूर्यश्चमेति"के

विनियोग तथा आचमनमन्त्रके स्थानपर नीचे लिखे मन्त्र पढ़े। अन्यकृत्य प्रातःसन्ध्याके अनुसार करे और चित्र देखकर विष्णुरूपा गायत्रीका ध्यान करे।

विनियोगः ।

ॐ आपः पुनन्त्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

आचमनम् ।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनातु मां पुनन्तु ब्रह्मणस्पति र्ब्रह्मपूता पुनातु मां यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम । सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहं ँ स्वाहा ।

सायं-सन्ध्या ।

प्राणायाम मन्त्रके बाद "ॐ सूर्यश्चमेति"के विनियोग तथा आचमन मन्त्रके स्थान पर नीचे लिखे मन्त्र पढ़े। अन्यकृत्य प्रातः सन्ध्याके अनुसार करे और चित्र देखकर शिवरूपा गायत्रीका ध्यान करे।

विनियोगः ।

ॐ अग्निश्चमेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

आचमनम् ।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् यदह्ना पापमकार्षं मनसा

वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलु-म्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

पञ्चमहा-यज्ञाः ।

पञ्चसूना गृहस्थस्य चुल्लीपेषण्युपस्कराः । कण्डनी चोदकु-म्भश्च बध्यते यास्तु वाहयन् ॥ तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महर्षिभिः । पञ्च क्लृप्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम् ॥ अध्या-पनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् । होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञो-ऽतिथिपूजनम् ॥ मनु० ॥

चूल्हा (अग्नि जलानेसे) । चक्की (पीसनेसे) । बुहारी (बुहारनेसे)। ओखली (कूटनेसे) । और जलके स्थानमें (जलपात्रके नीचे जीवोंके दबने से) । जो पाप होते हैं, उन पापोंके नाशके लिये ब्रह्मयज्ञ—वेद वेदाङ्ग तथा पुराणादिका पढ़ना और पढ़ाना । पितृयज्ञ—श्राद्ध तथा तर्पण । देवयज्ञ—देवताओंका पूजन और हवन । भूतयज्ञ—बलि वैश्वदेव । मनुष्ययज्ञ—अतिथिसत्कार । इन पञ्चयज्ञोंको नित्य अवश्य करना चाहिये ।

तर्पण-विधिः ।

तर्पणका जल सूर्योदयसे आधे पहर तक अमृत, एक पहरतक मधु, ड़ेढ़ पहरतक दूध और साढ़े तीन पहर तक जलरूपसे पितरोंको प्राप्त होता है। इसके उपरान्तका दिया हुआ जल राक्षसोंको प्राप्त होता है। किन्तु सूर्य और चन्द्रग्रहणमें सभी समय कर सकता है। तिल तथा कुशासे तर्पण करे। किन्तु घरमें रवि,मंगल

तथा शुक्रवार, प्रतिपदा, षष्ठी, सप्तमी, एकादशी तथा त्रयोदशी, भरणी, कृत्तिका, मघा और अपने जन्म नक्षत्रके दिन तिलसे तर्पण करना निषिद्ध है। इसलिये नित्य तर्पण करनेवाला घरमें केवल पितृपक्ष, अमावास्या तथा श्राद्धके दिन ही तिलसे करे। अन्य दिनोंमें चांदीके अर्घसे या अनामिका अंगुलीमें सुवर्णकी अथवा तर्जनीमें चाँदीकी अंगूठी धारण कर जल तथा कुशासे करे। तर्पणके पहिले स्नानकी धोती नहीं निचोड़े।

नास्तिक्यादथवा लौल्यान्न तर्पयति वै सुतः।
पिबन्ति देहिनः स्रावं पितरोऽस्य जलार्थिनः॥ याज्ञ०स्मृ०॥

जो मनुष्य नास्तिकता तथा चञ्चलतासे तर्पण नहीं करता है, उसके पितर पिपासित होकर उसका पसीना पीते हैं।

विना तिलैश्च दर्भैश्च पितॄणां नोपतिष्ठति। तिलाभावे निषिद्धाहे सुवर्णरजतान्विते। तदभावे निषिद्धे तु दर्भैर्मन्त्रेण वा पुनः॥ गोभिल०॥

तिल और कुशाके बिना तर्पण करनेसे पितरोंको नहीं मिलता। तिलके अभावमें तथा निषिद्ध दिनोंमें सोना या चाँदीसे करे। और उसके भी अभाव में कुशासे या केवल मन्त्र बोलकर जलसे करे।

कनिष्ठादेशिन्यंगुष्ठ, मूलान्यग्रं करस्य च।
प्रजापतिपितृब्रह्मदेवतीर्थान्यनुक्रमात्॥ आचारादर्श॥

प्रजापतितीर्थ या कायतीर्थ—कनिष्ठाका मूल। पितृतीर्थ—तर्जनीका मूल। ब्रह्मतीर्थ—अंगुष्ठका मूल और देवतीर्थ—अंगुलियोंका अग्रभाग है।

तीर्थे तिथिविशेषे च गयायां प्रेतपक्षके।

निषिद्धेऽपि दिने कुर्यात्तर्पणं तिलमिश्रितम् ॥ पृथ्वी चन्द्र० ॥
गयादि तीर्थस्थान, पितृपक्ष और विशेष तिथि (श्राद्ध) में निषिद्ध दिनोंमें भी तिलसे तर्पण करे ।

तर्पणम् ।

पूर्वाभिमुख होकर बायें कन्धेपर गमछा रखकर दो कुशाकी पवित्री दाहिने और तीनकी बायें हाथकी अनामिका अंगुलीकी जड़में तथा बायीं कटिमें मोटक धारण करे, और हाथमें कुशा लेकर संकल्प वाक्यके अन्तमें "देवर्षि-पितृतर्पणङ्करिष्ये" कहकर संकल्प छोड़े ।

आवाहनम् । (तीर्थोंमें नहीं करे) ।

ब्रह्मादयः सुराः सर्वे ऋषयः सनकादयः ।
आगच्छन्तु महाभागा ब्रह्माण्डोदरवर्तिनः ॥

देव-तर्पणम् ।

देवतीर्थ अर्थात् अंगुलियोंके अग्रभाग तथा कुशाके अग्रभागसे चावल सहित एक-एक अंजलि देवे ।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् । ॐ विष्णुस्तृप्यताम् । ॐ रुद्रस्तृप्यताम् । ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् । ॐ देवास्तृप्यन्ताम् । ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् । ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् । ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् । ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् । ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम् । ॐ

देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्। ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्॥

ऋषि-तर्पणम्।

ऋषियोंको भी उसी प्रकार एक-एक अञ्जलि देवे।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐभृगुस्तृप्यताम्। ॐनारदस्तृप्यताम्॥ ततः उत्तराभिमुखः कण्ठी कृत्वा॥

मनुष्य-तर्पणम्।

"उत्तराभिमुख" होकर जनेऊ तथा अंगोछेको कण्ठी करके प्रजापति (काय) तीर्थ अर्थात् कनिष्ठाके मूल (हथेलीका मध्य) और कुशाके मध्यसे जौ सहित दो-दो अञ्जलि देवे।

ॐ सनकस्तृप्यताम् २। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् २। ॐ सनातनस्तृप्यताम् २। ॐ कपिलस्तृप्यताम् २। ॐ आसुरिस्तृप्यताम् २। ॐ बोढुस्तृप्यताम् २। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् २॥ ततोऽपसव्यं दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः॥

पितृ-तर्पणम्।

"दक्षिणाभिमुख" होकर बायें घुटनेको मोड़कर अपसव्य अर्थात् जनेऊ और अंगोछेको दाहिने कन्धे पर और मोटक दाहिनी कटिमें करके कुशाको मोड़कर (दोहरा करके) मूल तथा अग्रभागसे तिलसहित पितृतीर्थ अर्थात तर्जनीके मूल (हथेलीका मध्य) से तीन-तीन अञ्जलि दक्षिणमें देवे। यदि तिल नहीं हो तो "तिलोदकं तस्मै स्वधा" की जगह "जलं तस्मै स्वधा" कहे।

ॐ कव्यवाट् तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ॐ नलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ॐ सोमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ॐ यमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ॐ अर्यमा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३। ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३। ॐ सोमपास्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३। ॐ बर्हिषदस्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा ३॥

१४ यमोंको भी उसी प्रकार तीन-तीन अञ्जलि देवे।

ॐ यमाय नमः ३। ॐ धर्मराजाय नमः ३। ॐ मृत्यवे नमः ३। ॐ अन्तकाय नमः ३। ॐ वैवस्वताय नमः ३। ॐ कालाय नमः ३। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ३। ॐ औदुम्बराय नमः ३। ॐ दध्नाय नमः ३। ॐ नीलाय नमः ३। ॐ परमेष्ठिने नमः ३। ॐवृकोदराय नमः३। ॐ चित्राय नमः ३। ॐ चित्रगुप्ताय नमः ३॥

नीचे लिखे वाक्यसे पितरोंका आवाहन करे।

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्त्वपोऽञ्जलिम् ॥

नीचे लिखे वैदिक मन्त्रोंसे पिता, पितामह (दादा) और प्रपितामह (परदादा) को अञ्जलि देवे। यदि वैदिकमन्त्र शुद्ध उच्चारण नहीं कर सके तो केवल "ॐ अद्य......गोत्रः" लिखा है, वहांसे बोलकर प्रत्येकको तीन अञ्जलि देवे।

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंय्य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ ॐ अद्य.........गोत्रः अस्मत्पिता ....वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (पहली अञ्जलि देवे)।

ॐ अङ्गिरसो नः पितरो न वग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयᳪंसुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ ॐअद्य.........गोत्रः अस्मत्

पिता .... वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (दूसरी अञ्जलि देवे) ।

ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ ॐ अद्य .... गोत्रः अस्मत्पिता .... वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (तीसरी अञ्जलि देवे) ।

ॐ ऊर्ज्जं वहन्ती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥ ॐ अद्य .... गोत्रः अस्मत्पितामहः .... रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (पहली अञ्जलि देवे) ।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्न पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ अद्य .... गोत्रः अस्मत्पितामहः .... रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (दूसरी अञ्जलि देवे)

ॐ ये चेह पितरो ये च नेह यांश्च विद्मयाँ उ च न प्रविद्म । त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतञ्जुषस्व । ॐ अद्य .... गोत्रः अस्मत्

पितामहः.........................रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (तीसरी अञ्जलि देवे)।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ ॐ अद्य.........गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः..............आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (पहली अञ्जलि देवे)।

ॐ मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिवँ रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ ॐ अद्य.........गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः..........आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (दूसरी अञ्जलि देवे)।

ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधु माँ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ॐ अद्य.........गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः..........................आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ॥ (तीसरी अञ्जलि देवे)।

नीचे लिखा प्रत्येक बार बोलकर एक एक अंजलि देवे ।

ॐ तृप्यध्वम् । ॐ तृप्यध्वम् । ॐ तृप्यध्वम् ॥

माता, दादी और परदादीको तीन तीन अंजलि देवे ।

ॐ अद्य........................गोत्रास्मन्माता........................ देवी गायत्रीस्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (माता)।

ॐ अद्य.........गोत्रास्मत्पितामही..........
देवी सावित्रीस्वरूपिणीतृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै
स्वधा ३ ॥ (दादी)।

ॐ अद्य.........गोत्रास्मत्प्रपितामही..........
देवी सरस्वतीस्वरूपिणी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै
स्वधा ३ ॥ (वृद्धदादी)।

मातामह (नाना), प्रमातामह (परनाना) और वृद्धप्रमातामह (वृद्ध परनाना) को नीचे लिखे मन्त्रसे तीन तीन अंजलि देवे। यदि वैदिक मन्त्र शुद्ध उच्चारण नहीं कर सके तो केवल "ॐ अद्य...गोत्रः" लिखा है वहीं बोलकर प्रत्येकको तीन अंजलि देवे।

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय
नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै
नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो
वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त स-
तो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त॥
ॐ अद्य.........गोत्रोऽस्मन्मातामहः..........
अग्निस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकंतस्मै स्वधा ३॥नाना
ॐ नमो वः पितरो० ॐअद्य.........गोत्रोऽस्मत्प्र-
मातामहः.........वरुणस्वरूपस्तृप्यतामिदं
तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ ॥ (परनाना)।

ॐ नमो वः पितरो० ॐ अद्य.....................गोत्रोऽस्मद्वृद्धप्रमातामहः.....................प्रजापतिस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा ३ ॥ (वृद्ध परनाना)।

मातामही (नानी), प्रमातामही (परनानी) और वृद्ध प्रमातामही (वृद्ध परनानी) को तीन तीन अञ्जलि देवे ।

ॐ अद्य.....................गोत्राऽस्मन्मातामही.....................देवी गंगारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकंतस्यैस्वधा ३॥नानी

ॐ अद्य.....................गोत्राऽस्मत्प्रमातामही.....................देवी यमुनारूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (परनानी)।

ॐ अद्य.....................गोत्राऽस्मद्वृद्धप्रमातामही.....................देवी सरस्वतीरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा ३ ॥ (वृद्ध परनानी)।

स्वर्गीय गुरु, दादा, वृद्धदादा, ताऊ, चाचा, भ्राता, पुत्र, श्वसुर, मामा और फूफा आदि तथा उन लोगोंकी पत्नी, अपनी पत्नी, मौसी, बहिन और पुत्री आदिको अञ्जलि देवे । पश्चात् "सव्य तथा पूर्वाभिमुख" होकर नीचे लिखे मन्त्रको बोलता हुआ कुशाके अग्रभागसे जल छोड़ता जावे ।

नोट ____________________

____

____

____

ॐ देवाः सुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्व राक्षसाः।
पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः।
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः ।
तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाऽम्बुनाखिलाः ॥

"अपसव्य और दक्षिणाभिमुख" होकर नीचे लिखे मन्त्र बोल हुआ कुशाके मूल तथा अग्रभागसे तिलसहित जल छोड़ता जावे ।

ॐ नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः ।
तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया ॥
ॐ ये बान्धवाऽबान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः ।
तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम् ॥
आ ब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥
ॐ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आ ब्रह्म-भुवनाल्लोका दिदमस्तु तिलोदकम् ॥

"अङ्गोछेकी" चार तह करके उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखे मन्त्रसे जलके बाहर उस वस्त्रको बायीं ओर पृथ्वीपर निचोड़े ।

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्राः गोत्रिणो मृताः।
ते तृप्यन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीड़नोदकम् ॥

हाथकी खुली कुशाको त्याग देवे। पश्चात् "सव्य तथा पूर्वाभिमुख" होकर नीचे लिखे मन्त्रसे भीष्मपितामहको एक अञ्जलि देवे।

भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
अद्भिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्॥

आचमन करके प्रत्येकको अर्घ्य देवे।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ दिग्भ्यो नमः। ॐ दिग्देवताभ्यो नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपां-पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।

नीचे लिखी प्रार्थना करके तर्पणके जलको नेत्रोंमें लगावे।

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने॥

नीचे लिखे मन्त्रसे विसर्जन करे, किन्तु तीर्थोंमें नहीं करे।

ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वागातुमित। मनसस्पत इमं देवयज्ञᳬ स्वाहा वातेधाः॥ कृतेनानेन तर्पणेन पितृरूपी जनार्दनः प्रीयताम्॥

जिनके पिता वर्तमान हैं वे स्वपित्रादि तर्पण और वस्त्र-निष्पीड़न नहीं करे।

ब्रह्म-यज्ञः ।

आचमन (श्रौताचमन) तथा प्राणायाम करके संकल्पवाक्यके अन्तमें "ब्रह्मयज्ञेनाहं यक्ष्ये" कहकर सङ्कल्प छोड़े । पश्चात् अनुवाक, पुरुषसूक्त, शिवसंकल्प, मंडलब्राह्मण तथा उपनिषदादि श्रुति पाठ करे । यदि इनका संपूर्ण पाठ नहीं कर सके तो अनुवाक आदिके नीचे लिखे मन्त्रोंका पाठ करे ।

"अनुवाकम्"—ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यम्मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् । वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति ॥ "पुरुषसूक्तम्"—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमिꣳसर्वतःस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ "शिवसंकल्पः"—ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ "मण्डल ब्राह्मणम्"—ॐ यदेतन्मण्डलं तपति तन्महदुक्थन्ता ऋचः स ऋचां लोकोथ यदेतदर्चिर्दीप्यते तन्महाव्रतं तानि सामानि स साम्नां लोकोथ य एष एतस्मिन् मण्डले पुरुषः सोऽग्निस्तानि यजूꣳषि स यजुषां लोकः ॥ "यजुर्वेदः"—ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागम्प्रजावती रनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशꣳ

स्रो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ "ऋग्वेदः"—ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ "सामवेदः"—ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ॥ "अथर्ववेदः"—ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्रवन्तु नः ॥ अनेन ब्रह्मयज्ञाख्येन कर्मणा श्रीभगवान् परमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥

नित्य-होमः ।

तिलसे आधा चावल उससे आधा यव उससे आधी चीनी और घृत तथा मेवा मिलाकर साकल्य बनावे । आसनपर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन प्राणायाम करनेके पश्चात् सङ्कल्पवाक्यके अन्तमें **"नित्यहोमङ्करिष्ये"** कह कर सङ्कल्प छोड़े । अनन्तर वेदीपर पञ्च भूसंस्कार करे । **"दर्भैः परिसमुह्य—"** तीन कुशाओंसे वेदी साफ करके कुशा ईशानकोणमें फेंके १। **"गोमयोदकेनोपलिप्य—"** गोबर और जलसे लेपन करे २। **"स्रुवमूलेन त्रिरुल्लिख्य—"** स्रुवाके मूलसे पूर्वकी ओर उत्तरोत्तर क्रमसे प्रादेशमात्र परिमाणकी तीन लकीर खींचे ३। **"अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य—"** अनामिका और अंगूठेसे उन लकीरोंमेंसे किञ्चित मिट्टी लेकर फेंके ४। **"उदकेनाभ्युक्ष्य—"** वेदीपर जल छिड़के ५। पश्चात् अग्निकोणसे अग्नि लाकर अपनी दाहिनी ओर रखकर कुशा प्रज्वलित करके नीचे लिखा मन्त्र बोलता हुआ उस कुशाको नर्ऋतकोणमें छोड़े ।

ॐ क्रव्यादमग्निमिति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवताऽग्निसंस्कारे विनियोगः ॥मन्त्रः॥
ॐ क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः । इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥ पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रसे अग्निस्थापन करे।

अयन्ते योनिरिति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता अग्न्युपस्थापने विनियोगः ॥ मन्त्रः।
ॐ अयन्ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः। तञ्जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्द्धया रयिम् ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे वेदीके पूर्वमें उत्तरकी ओर अग्रभाग करके कुशा रखे।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे वेदीके दक्षिणमें पूर्वकी ओर अग्रभाग करके कुशा रखे।

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥

नीचे लिखे मन्त्रसे वेदीके पश्चिममें उत्तरकी ओर अग्रभाग करके कुशा रखे।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये

निहोता सत्सि बर्हिषि॥

नीचे लिखे मन्त्रसे वेदीके उत्तरमें पूर्वकी ओर अग्रभाग करके कुशा रखे।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः॥

बाँसकी फूकनी या दाहिनी हथेली मुखके सामने रखकर फूँकसे अग्नि प्रज्वलित करे। पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रसे अग्निका ध्यान करे।

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २॥ आविवेश॥ ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक्कव्यभुक् तथा। पितॄणां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने॥ पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रसे प्रार्थना करे।

ॐ अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषध्वज! प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव॥

"ॐ पावकाग्नये नमः" इस मन्त्रसे अग्निका पूजन करे और जलसे प्रोक्षण करके नमकरहित हविष्यान्न अथवा साकल्यसे तर्जनी और कनिष्ठाको अलग रखते हुए सीधे हाथसे आहुति देवे।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम १। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम २। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम ३। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम ४। ॐ धन्वन्तरये स्वाहा इदं धन्वन्तरये न

मम ५ । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम ६। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम ७ । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ८। ॐ देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये न मम ९। ॐ मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये न मम १०। ॐ पितृ कृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये न मम ११। ॐ आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये न मम १२। ॐ एनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये न मम १३। ॐ यच्चाहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वाँस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा इदमग्नये न मम १४ ॥

पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि । सप्त होत्राः सप्त धात्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥ अनेन होमेन श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां न मम ॥ ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥

स्रुवासे भस्म लेकर मन्त्रसे लगावे और वेदीके चारों तरफ रखी कुशाओंको अग्निमें डाल दे ।

देव-पूजा-विधिः ।

पूजन सामग्रीको शुद्ध करके यथास्थान रखकर विधिपूर्वक पूजन करे ।

नाङ्गुष्ठैर्मर्दयेद्देवं नाधःपुष्पैः समर्चयेत् ।
कुशाग्रैर्नक्षिपेत्तोयं वज्रपातसमं भवेत् ।। आचारमयूख ।।

देवताओंको अंगूठेसे नहीं मले और पुष्प अधोमुख करके नहीं चढ़ावे तथा कुशाके अग्रभागसे देवताओं पर जल नहीं छिड़के ऐसा करना वज्रपातके तुल्य है

त्रिर्देवेभ्यः प्रक्षालयेत् सकृत्पितृभ्यः ।। आपस्तम्ब ।।

अक्षतादि देवताओंको तीन बार और पितरोंको एक बार धोकर चढ़ावे ।

नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम् ।
न दूर्वया यजेद्दुर्गां विल्वपत्रैश्च भास्करम् ।
दिवाकरं वृन्तहीनैर्विल्वपत्रैः समर्चयेत् ।। आह्निक ।।

विष्णुको चावल, गणेशको तुलसी, दुर्गाको दूर्वा और सूर्यनारायणको विल्पपत्र नहीं चढ़ावे । किन्तु डंडी तोड़कर सूर्यनारायणको चढ़ा सकते हैं ।

अधोवस्त्रधृतं चैव जलेऽन्तःक्षालितं च यत् ।
देवतास्तन्न गृह्णन्ति पुष्पं निर्माल्यतां गतम् ।। आह्निक ।।

धोतीमें रखा हुआ और जलमें डुबोया हुआ पुष्प निर्माल्य हो जाता है । इसलिये देवता उसे ग्रहण नहीं करते हैं ।

शिवे विवर्जयेत् कुन्दमुन्मत्तं च तथा हरौ ।
देवीनामर्कमन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा ।।

शिवजीको कुन्द, विष्णुको धतूरा, देवीको आक तथा मदार और सूर्यको तगरका पुष्प नहीं चढ़ावे ।

मध्यमानामिकामध्ये पुष्पं संगृह्य पूजयेत् ।
अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां तु निर्माल्यमपनोदयेत् ॥ आह्निक—कालिकापुराणे ॥

दाहिने हाथकी मध्यमा तथा अनामिका अंगुलीके मध्यमें पुष्प लेकर देवताओं पर चढ़ाना और अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे पुष्पादि निर्माल्य उतारना चाहिये।

पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम् ।
यथोत्पन्नं तथा देयं विल्वपत्रमधोमुखम् ॥ आह्निक ॥

पत्र, पुष्प तथा फलका मुख नीचे करके नहीं चढ़ावे । वे जैसे उत्पन्न होते हैं, वैसे ही चढ़ाना चाहिये । किन्तु विल्वपत्र उल्टा करके चढ़ावे।

पर्णमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसम्भवः ।
जीर्णपत्रं हरत्यायुः शिरा बुद्धिविनाशिनी ॥ आचारार्क ॥

पानकी डंडीसे व्याधि और अग्रभागसे पाप होता है । सड़ा पान आयु और शिरा बुद्धिको नष्ट करती है। इसलिये डंडी, अगूभाग और शिरा निकाल देवे।

वृक्षसे तुलसीग्रहण मन्त्र ।

तुलस्यमृतजन्मासि सदा त्वं केशवप्रिया ।
केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने ॥

संक्रान्ति, द्वादशी अमावास्या, पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्याके समय तुलसी तोड़ना निषिद्ध है । यदि विशेष आवश्यक हो तो नीचे लिखे मन्त्रसे तोड़ सकता है।

त्वदङ्गसम्भवेन त्वां पूजयामि यथा हरिम् ।
तथा नाशय विघ्नं मे ततो यान्ति पराङ्गतिम् ॥

देव-पूजनम्।

आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर वायीं ओर घण्टा और दाहिनी ओर शंख तथा पूजनकी सामग्री रखकर आचमन-प्राणायाम करके संकल्पवाक्यके अन्तमें "शालग्रामपूजनं तदङ्गत्वेन गणपत्यादिदेवानाम्मण्डले स्थापनं पूजनञ्च करिष्ये" कहकर संकल्प छोड़े।

दीपक-प्रार्थना।

घृतका दीपक वायीं ओर तथा तैलका दाहिनी ओर पूर्व या उत्तरमुख करके चावल आदि पर रखकर प्रज्वलित करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षि ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

शङ्ख तथा घण्टा-पूजनम्।

घण्टा वजाकर शंखमें जल भर शंख-मुद्रा दिखावे। पश्चात् शंख तथा घण्टाका पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते॥

स्वस्तिवाचनम्।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः १। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः २। उमामहेश्वराभ्यां नमः ३। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः ४। शचीपुरन्दराभ्यां नमः ५।

मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः ६। इष्टदेवताभ्यो नमः ७। कुलदेवताभ्यो नमः ८। ग्रामदेवताभ्यो नमः ९। वास्तुदेवताभ्यो नमः १०। स्थानदेवताभ्यो नमः ११। एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः १२। सर्वेभ्योदेवेभ्यो नमः १३। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः १४। अविघ्नमस्तु १५। ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु १६। पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् १७। विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा १८। अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता १९। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि २०। ॐ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अ

जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह २१। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः २२। शतमिन्नु शरदो अन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः २३। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् २४। यतोयतः समीहसे ततो नो अभयङ्कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः २५। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव २६। ॐ एतन्ते देव सवितर्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव २७। मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ २८। एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति २९। ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम।

आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ३०। ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्राते-भ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्स-पतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ३१। सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्ण-कः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशै-तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि । विद्यारम्भे वि-वाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।संग्रामे सङ्कटे चैव वि-घ्नस्तस्य न जायते ३२॥

पुण्याहवाचनम् ।

तत्रादौ ब्राह्मण करे । शिवा आपः सन्तु । ब्राह्मण-वचनम् । सौमनस्यमस्तु । एवम् अक्षताः पान्तु । मांगल्यमस्तु । पुष्पाणि पान्तु । श्रीरस्तु । ताम्बू-लानि पान्तु । ऐश्वर्यमस्तु । दक्षिणाः पान्तु । आ-रोग्यमस्तु । दीर्घायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्य-शो विद्या विनयो बहुपुत्रं बहुधनं चास्तु । यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियारंभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमों-कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुःसामाथर्वणाशीर्वचनं बह्व-षिसमनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वा-

यिष्ये। वाच्यतामिति ब्राह्मणवचनम्। पुनः यजमानो ब्रूयात्। व्रतनियमतपस्स्वाध्यायक्रतुदमदानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्। (ब्राह्मणाः) समाहितमनसः स्मः। यजमानो ब्रूयात्। प्रसीदन्तु भवंतः। (ब्राह्मणाः)प्रसन्नाः स्मः। ततो यजमानः। अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना जलपूर्णं सुवर्णकलशं धारयित्वा भूमौ स्थापिते पात्रद्वये प्रथमपात्रे किंचिदुदकं पातयेत्। तत्र ब्राह्मणा वदेयुः ॐ शान्तिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। ऋद्धिरस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। शिवमस्तु। शिवं कर्मास्तु। कर्मसमृद्धिरस्तु। पुत्रसमृद्धिरस्तु। वेदसमृद्धिरस्तु। शास्त्रसमृद्धिरस्तु। धनधान्यसमृद्धिरस्तु। इष्टसंपदस्तु। अरिष्टनिरसनमस्तु। यच्छ्रेयस्तदस्तु। ततः द्वितीयपात्रे पातयेत्। यत्पापमकल्याणं तद्दूरेप्रतिहतमस्तु। पुनः प्रथमपात्रे पातयेत्। उत्तरोत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्ताम्। तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। तिथिकरणेसुमुहू-

तें सुनक्षत्रे सुग्रहे सुदैवते प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । माहेश्वरीपुरोगा मातरः प्रीयन्ताम् । वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् । ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् । विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् । ऋषयश्छन्दांस्याचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम् । ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । अम्बिकासरस्वत्यौ प्रीयेताम् । श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम् । भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् । सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् । पुनः द्वितीयपात्रे पातयेत् । हताश्च ब्रह्मद्विषः । हताश्च परिपन्थिनः । हताश्च विघ्नकर्तारः । शत्रवः पराभवं यान्तु । शाम्यन्तुघोराणि । शाम्यन्तु पापानि । शाम्यन्त्वीतयः । पुनः प्रथमपात्रे पातयेत् । शुभानि वर्द्धन्ताम् । शिवा आपः

सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु। शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा वनस्पतयः सन्तु। शिवा अतिथयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्। शुक्रांगारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमादित्यरूपाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। भगवान्नारायणः प्रीयताम्। भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम्। भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। ततो यजमानः सुवर्णकलशं भूमौ निधाय प्रथमपात्रपातितजलेन शिरः संमृज्य सपरिवारगृहांश्चाभिषेचयेत्। द्वितीयपात्रजलमेकान्ते पातयेत्। यजमानो ब्रूयात्। ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्। वेदवृक्षोद्भवं पुण्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मणाः) ॐ पुण्याहं ३॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥(यजमानः) पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्या-

णं ब्रुवन्तु नः। भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मणाः) ॐ कल्याणम् ३॥ यथेमांवाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याᳪ शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियोदेवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपमादो नमतु॥ (यजमानः) सागरस्य च या लक्ष्मीर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता। संपूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मणाः) ॐ ऋद्ध्यताम् ३॥ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अद्ध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥ (यजमानः) स्वस्त्यस्तु ह्यविनाशाख्या नित्यं मंगलदायिनी। विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥ भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मणाः) ॐ स्वस्ति ३॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ (यजमानः) समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका। हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः

भो ब्राह्मणाः मम सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मणाः) ॐ अस्तु श्रीः ३॥ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण॥ ततस्तिलकाशीर्वादः। अथ दक्षिणादानम्॥ ॐ अद्य पुण्याहवाचनसांगतासिद्ध्यर्थं पुण्याहवाचकेभ्यो नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां यथाशक्ति हिरण्यदक्षिणां संप्रददे॥ इतिपुण्याहवाचनम्॥

अङ्गन्यासः।

नीचे लिखे अङ्गन्यास अपने अंगोंमें करे। पूरे मन्त्र शालग्रामपूजनमें लिखे हैं।

ॐ सहस्रशीर्षा०—वामकरे। ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्वं—दक्षिणकरे। ॐ एतावानस्य महिमा०—वामपादे। ॐ त्रिपादूर्ध्व०—दक्षिणपादे। ॐ ततो विराड०—वाम जानुनि। ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत०—दक्षिणजानुनि। ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः०—वामकट्याम्। ॐ तस्मादश्वा०—दक्षिणकट्याम्। ॐ तं यज्ञम्०—नाभौ। ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः०—हृदि। ॐ ब्राह्मणोस्य०—कण्ठे। ॐ चन्द्रमा मनसो०—वाम बाहौ। ॐ नाभ्या आसी०—दक्षिणबाहौ। ॐ यत्पुरुषेण०—मुखे। ॐ सप्तास्या०—

अक्ष्णोः। ॐ यज्ञेन यज्ञ०—मूर्ध्नि।

पञ्चाङ्गन्यासः।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः०—हृदये। ॐ वेदाहमेतम्०-शिरसि। ॐप्रजापतिश्च०—शिखायाम्। ॐयो देवेभ्य आ-तपति०—कवचाय हुम्। ॐ रुचं ब्राह्मम्०—अस्त्राय फट्।

करन्यासः।

ॐ ब्राह्मणोस्य०—अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चन्द्रमा०-तर्जनीभ्यां नमः। ॐ नाभ्या०—मध्यमाभ्यां नमः। ॐ यत्पुरुषेण०—अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सप्तास्यासन्०—कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ यज्ञेन०—करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥

गणपति-पूजनम्।

सुपारीके मोली लपेटकर चावलपर स्थापित करके आवाहनमन्त्रसे अक्षत छोड़े। स्थापित की हुई मूर्ति हो तो पुष्प छोड़े।

ध्यान—गजाननम्भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफल-चारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

आवाहन-आगच्छ भगवन्देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव॥

प्रतिष्ठा-अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामेहति च कश्चन॥

आसन-रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ आ० समर्पयामि॥
पाद्य-उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥ पा० स०॥
अर्घ्य-अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥ अ० स०॥
आचमन-सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर॥ आ० स०॥
मधुपर्क-कांस्ये कांस्येन पिहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः। मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ म० स०॥
स्नान-गङ्गासरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे॥ स्ना० स०॥
दुग्धस्नान-कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥ दुग्धस्नानं समर्पयामि। पुनर्जल स्नानं समर्पयामि॥
दधिस्नान-पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ द० पु०॥
घृतस्नान-नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ घृ० पु०॥
मधुस्नान-तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः-

पुष्टिकरं दिव्यं स्नानाथ प्रतिगृह्यताम् ॥ म० पु० ॥

शर्करास्नान-इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श० पु० ॥

पञ्चामृतस्नान-पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् । पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पं० स० ॥

शुद्धोदकस्नान-मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि पुनराचमनं समर्पयामि ॥

वस्त्र-सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे । मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ व० पु० ॥

यज्ञोपवीत-नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ य० पु० ॥

गन्ध-श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ग० स० ॥

रक्तचन्दन-ॐ रक्तचन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम् । मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम् ॥ र० स० ॥

रोली-कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामनाकामसम्भवम् । कुङ्कुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर ॥ कु० स० ॥

अक्षत-अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥ अ० स० ॥

पुष्प-पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः । पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ पु० स० ॥

पुष्पमाला-माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥ पु० स० ॥

बिल्वपत्र-त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः । तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥ बि० स० ॥

दूर्वा-त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि । सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकार्यकरी भव ॥ दू० स० ॥

शमीपत्र-शमी शमय मे पापं शमी लोहितकण्टका । धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी ॥ श० स० ॥

सिन्दूर-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम् । शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥ सि० स० ॥

आभूषण-अलङ्कारान्महादिव्यान्नानारत्नविनिर्मितान् । गृहाण देवदेवेश प्रसीद परमेश्वर ॥ आ० स० ॥

अबीरगुलाल-अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च । अबीरेणार्चितो देव अतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥अ०स० ॥

सुगन्ध तैल-चम्पकाशोकवकुलमालतीमोगरादिभिः । वासितं स्निग्धताहेतु तैलं चारु प्रगृह्यताम् ॥सु०स० ॥

धूप-वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ धूपमा-

घ्रापयामि ॥

दीप-आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह ॥ दीपं दर्शयामि

हस्तप्रक्षालनम् ॥

नैवेद्य-शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् । उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ नै० निवेदयामि ॥

मध्ये पानीय-अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धि च पिबेच्छया। त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्ते महात्मनि ॥म०स०

ऋतुफल-नारीकेलफलं जम्बूफलं नारङ्गमुत्तमम् । कूष्माण्डं पुरतो भक्त्या कल्पितं प्रतिगृह्यताम् ॥ ऋ०स०।

आचमन-गङ्गाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्। आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम् ॥ आ०स०।

अखण्ड ऋतुफल-इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ अ०स०।

ताम्बूल-पूगीफल-पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ता०स०।

दक्षिणा-हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ द०स० ॥

आरती-चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥आ०

पुष्पाञ्जलि-नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥ पु० स० ॥

प्रार्थना-रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्त्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥

नीचे लिखे वाक्यसे अक्षत छोड़े।

अनया पूजया गणपतिः प्रीयतां न मम ॥

कलश-पूजनम्।

कलशस्थापनके स्थानमें पूजनके पहिले गन्धादिसे अष्टदल कमल बनाकर उस पर कलश स्थापित करना चाहिये।

भूमिस्पर्श-ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं मा हिꣳसीः ॥

सप्तधान्य-स्थापन-ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ॥

कलश-स्थापन-ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः। सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः ॥

जल-ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्ज-

नीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसद-
नमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

गन्ध-ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

सर्वौषधी-ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुग-
म्पुरा। मनैनु बभ्रूणामहꣳ शतन्धामानि सप्त च॥

दूर्वा-ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

पञ्च-पल्लव-ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृ-
ता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥

सप्तमृत्तिका-ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेश-
नी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥

पूगीफल-ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च
पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥

पञ्चरत्न-ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्।
दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

स्वर्ण-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः प-
तिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाङ्कस्मै
देवाय हविषा विधेम ॥

वस्त्र-ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रम-

सि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

पूर्णपात्र-ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं शतक्रतो ॥

श्रीफल-ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ॥

वरुणावाहन-ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः ॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ। स्थापयामि पूजयामि ॥

देवावाहन-सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पु-

ष्टिकरी तथा ॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्ष-यकारकाः ॥

प्रतिष्ठा-ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳪ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ ॥ कलशे वरुणाद्यावाहिता देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ प्रसन्नो भव ॥ वरदो भव ॥

नीचे लिखे वाक्यसे अक्षत छोड़े।

अनया पूजया वरुणाद्यावाहिता देवताः प्रीयन्तां न मम॥

नवग्रह-पूजनम्।

बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे प्रत्येक मन्त्रसे अक्षत छोड़े।

सूर्य-मण्डलके मध्यमें (गोलाकार, लाल)।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यंञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ। सूर्याय नमः॥

चन्द्र-अग्निकोणमें (अर्धचन्द्र,सफेद)।

ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममसुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। सोमाय नमः॥

मङ्गल-दक्षिणमें (त्रिकोण, लाल)।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भौम इहागच्छ इह तिष्ठ। भौमाय नमः॥

बुध-ईशान कोणमें (धनुष, हरा)।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्तौ सꣳसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इह तिष्ठ। बुधाय नमः॥

बृहस्पति-उत्तरमें (अष्टदल, पीला)।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतु-मज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इ-हागच्छ इह तिष्ठ। बृहस्पतये नमः॥

शुक्र-पूर्वमें (चतुष्कोण, सफेद)।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं प-यः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्ध स इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ। शुक्राय नमः॥

शनि-पश्चिममें (मनुष्य, काला)।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इ-हागच्छ इह तिष्ठ। शनैश्चराय नमः॥

राहु-नैर्ऋत्य कोणमें (मकर,काला)।

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इ-हागच्छ इह तिष्ठ। राहवे नमः॥

केतु-वायव्य कोणमें (ध्वजा, काली)।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेशसे। स-

सुषद्भिरजायथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ इह तिष्ठ। केतवे नमः। ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यो नमः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

नीचे लिखे वाक्यसे अक्षत छोड़े।

अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम॥

पञ्चलोकपाल-पूजनम्।

बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे प्रत्येक मन्त्रसे अक्षत छोड़े।

गणपति-ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ। गणपतये नमः॥

देवी-ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ। दुर्गायै नमः॥

वायु-ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रि-

णीभिरुपयाहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्सवने मादय-स्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ । वायवे नमः ॥

आकाश-ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छ इह तिष्ठ । आकाशाय नमः ॥

अश्विनी-ॐ या वाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञम्मिमिक्षतम् ॥ उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यान्त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरश्विना इहागच्छतम् इह तिष्ठतम् । अश्विभ्यां नमः । इत्यावाह्य ॥ ॐ गणपत्यादि-पञ्चलोकपालेभ्यो नमः ॥

पूजन करके नीचे लिखे वाक्यसे अक्षत छोड़े ।

अनया पूजया गणपत्यादि-पञ्चलोकपालाः प्रीयन्तां न मम ।

दशदिक्पाल-पूजनम् ।

बायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे प्रत्येक मन्त्रसे अक्षत छोड़े ।

इन्द्र-(पूर्वमें) ।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ

शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ इन्द्राय नमः ॥ इन्द्रं आ० स्था० ॥

अग्नि-(अग्निकोणमें)।

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवाँ२ आसादयादिह ॥ अग्नये नमः । अग्निं आ० स्था० ॥

यम-(दक्षिणमें) ।

ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥ यमाय नमः । यमं आ०स्था०

नैर्ऋत-(नैर्ऋत्य कोणमें) ।

ॐ एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्यः स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा विश्वेदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्यः उत्तरासद्भ्यः स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्यः उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः स्वाहा ॥ नैर्ऋताय नमः ॥ नैर्ऋतं आ० स्था० ॥

वरुण-(पश्चिममें) ।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥ वरुणाय नमः । वरुणं आ० स्था० ॥

वायु-(वायुकोणमें)।

ॐ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम् । शिवोनियुद्भिः शिवाभिः । वायवे नमः। वायुं आ० स्था० ॥

कुबेर- (उत्तरमें)।

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय । इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥ कुबेराय नमः । कुबेरं आ० स्था० ॥

ईशान-(ईशानकोणमें)।

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ईशानाय नमः । ईशानं आ० स्था०

ब्रह्मा-(ईशानपूर्वके मध्यमें)।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणं आ०स्था० ॥

अनन्त-(नैर्ॠत पश्चिमके मध्यमें)।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ अनन्ताय नमः । अनन्तं आ० स्था० ॥

ॐ इन्द्रादि दश दिक्पालेभ्यो नमः ॥

पूजन करके नीचे लिखे वाक्यसे अक्षत छोड़े।

अनया पूजया दशदिक्पालदेवताः प्रीयन्ताम् ॥ प्रसन्ना भवन्तु वरदा भवन्तु ॥

षोडशमातृका-पूजनम्।

वायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे प्रत्येक नाम पर अक्षत छोड़े।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः। गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मातृकाभ्यो नमः इहागच्छत इह तिष्ठत ॥ ॐ गौर्यादिषोडशमातृकाभ्यो नमः ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥

नीचे लिखे वाक्यसे अक्षत छोड़े।

अनया पूजया गौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्तां न मम ॥

चतुःषष्टियोगिनी-पूजनम्।

वायें हाथमें अक्षत लेकर दाहिने हाथसे नीचे लिखे मन्त्रसे छोड़ता जावे।

आवाहयाम्यहं देवी योगिनीः परमेश्वरीः।
योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यानसमन्विताः ॥

चतुःषष्टिः समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः ।
ॐ चतुःषष्टियोगिनीमातृकाभ्यो नमः ॥

पूजन करके नीचे लिखे वाक्यसे अक्षत छोड़े ।

अनया पूजया चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्तां न मम ॥

रक्षा-विधानम् ।

बायें हाथमें पीली सरसों, चावल, पुष्प, सुपारी और तीन तारकी मोली लेकर दाहिने हाथसे ढक कर नीचे लिखे मन्त्र बोले ।

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम् ।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान् ।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् ।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥
विद्याधिका ये मुनयः आचार्याश्च तपोधनाः ।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा ॥

नीचे लिखे मन्त्रोंसे दशों दिशाओंमे पीली सरसों छोड़े ।

पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेयां गरुड़ध्वजः ।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः ॥
पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः ।
उत्तरे श्रीपती रक्षेत् ईशाने तु महेश्वरः ॥
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु ।
एवं दशदिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः ॥
रक्षाहीनन्तु यत्स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक् ।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ॥
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।
अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूतले स्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

पश्चात् मोली गणेशजीके सम्मुख रख देवे। फिर उस मोलीमेंसे गणपत्यादि समस्त देवताओंको चढ़ा कर रक्षा-बन्धन करे।

ब्राह्मण-रक्षाबन्धन-मन्त्रः ।

ब्राह्मणके हाथमें दक्षिणा देकर रक्षा बांधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणाश्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

ब्राह्मण-तिलक-मन्त्रः ।

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

यजमान-रक्षाबन्धन-मन्त्रः ।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

यजमान-तिलक-मन्त्रः ।

शतमानं भवति शतायुर्वै पुरुषः । शतेन्द्रिय आयुरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन्धत्ते ॥

शालग्राम-पूजनम् ।

शालग्राम और प्रतिष्ठाकी हुई मूर्त्तियोंमें आवाहन नहीं करे । केवलपुष्प छोड़े ।

आवाहन—ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र-पात् । स भूमिꣳ सर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

आसन—ॐ पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ आ० स० ॥

पाद्य—ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ पा० स० ॥

अर्घ्य—ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ अ० स० ॥

आचमन-ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ आ० स०

स्नान—ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् । पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्चये ॥

दुग्धस्नान—ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

दुग्धस्नानं समर्पयामि । पुनर्जलस्नानं समर्पयामि ।

दधि—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत्प्रण आयूᳪंषितारिषत् ॥

घृत—ॐ घृतङ्घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः । पिबतान्तरिक्षस्यहविरसि स्वाहा दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ घृ० पु० ॥

मधु—ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवᳪं रजः । मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँअस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

शर्करा—ॐ अपाᳪं रसमुद्वयसᳪं सूर्ये सन्तᳪं समाहितम् । अपाᳪं रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ श० पु० ॥

पञ्चामृतस्नान-ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥

शुद्धोदकस्नान-कावेरी नर्मदा वेणी तुंगभद्रा सरस्वती। गङ्गा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ॥ गृहाण त्वं रमाकान्त स्नानाय श्रद्धया जलम् ॥ शु० स०॥

वस्त्र—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥

यज्ञोपवीत-ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥

गन्ध-ॐ तं यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ग० स० ॥

अक्षत (श्वेत तिल)—ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ अ० स० ॥

पुष्प—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ पु० स० ॥

पुष्पमाला-ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

तुलसीपत्र—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥१॥ तु०स० ॥ तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपाञ्च मञ्जरीम् । भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥२॥ तु० स०॥

ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥३॥ तु० स० ॥

बिल्वपत्र-तुलसी बिल्वनिम्बैश्च जंबीरैरामलैः शुभैः।
पञ्चबिल्वमिति ख्यातं प्रसीद परमेश्वर ॥ बि० स० ॥

दूर्वा—विष्णवादिसर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदा सदा।
क्षीरसागरसंभूते वंशवृद्धिकरी भव ॥ दू० स० ॥

शमीपत्र-शमी शमयते पापं शमी शत्रुविनाशिनी।
धारिण्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी ॥ श० स० ॥

आभूषण-ॐ रत्नकङ्कणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च। सु-
प्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व भोः ॥ आ० स० ॥

अबीर-गुलाल-अबीरं च गुलालं च०—अबीर० स० ॥

सुगन्ध तैल—ॐ तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि वि-
विधानि च। मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

धूप-ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत ।१।
ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान् धूर्वति तं
धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नि-
तमं पप्रितमं जुष्टतमन्देव हूतमम् ॥२॥ धूपमाघ्रापयामि।

दीप—ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजा-
यत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥

दीपं दर्शयामि । हस्तप्रक्षालनम् ।

नैवेद्य अर्पणमुद्रा ।

नैवेद्यमें तुलसी छोड़कर नीचे लिखी मुद्राओंको क्रमसे दिखावे ।

प्राणाय स्वाहा—कनिष्ठा, अनामिका और अंगूठा मिलावे ॥१॥

अपानाय स्वाहा—अनामिका, मध्यमा और अंगूठा मिलावे ॥२॥

व्यानाय स्वाहा—मध्यमा, तर्जनी और अंगूठा मिलावे ॥ ३ ॥

उदानाय स्वाहा—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलावे ॥४॥

समानाय स्वाहा—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका; कनिष्ठा और अंगूठा मिलावे ॥ ५ ॥

नैवेद्य ।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः सम-वर्त्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अ-कल्पयन् ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ स-प्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवा य-द्यज्ञन्तन्वाना अबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ यज्ञेन यज्ञमय-जन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह ना-कम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः स-मवर्त्तताग्रे । तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य

देवत्वमाजानमग्रे ॥ वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्य वर्णन्तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते। तस्य योनिम्प-रिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा ॥ यो देवेभ्य आतपति यो देवानाम्पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये ॥ रुचम्ब्रा-ह्मञ्जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवम्ब्राह्म-णो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे ॥ श्रीश्च ते लक्ष्मी-श्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकम्म इषाण ॥ नैवेद्यं निवेदयामि ॥

मध्ये पानीय—एलोशीरलवङ्गादि कर्पूरपरिवासितम्।
प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण परमेश्वर ॥ म०स०॥

ऋतुफल—बीजपूराम्रपनसखर्जूरीकदलीफलम्।
नारिकेलफलं दिव्यं गृहाण परमेश्वर ॥ ऋ० स० ॥

आचमन-कर्पूरवासितं तोयं मन्दाकिन्याः समाहृतम्।
आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः ॥ आ०स०॥

अखण्डऋतुफल-फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥ अ०स०॥

ताम्बूलपूगीफल—ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्व-त । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥

दक्षिणा—पूजाफलसमृद्ध्यर्थं दक्षिणा च तवाग्रतः । स्थापिता तेन मे प्रीतः पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥ द०स०।

आरती ।

प्रथम चरणोंकी चारबार, नाभिकी दोवार, मुखारविन्दकी एकवार या तीनवार और समस्त अङ्गोंकी सातवार आरती करे ।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरन्तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव ॥

श्री सत्यनारायणजीकी आरती ।

जय लक्ष्मीरमणा श्री लक्ष्मीरमणा । सत्यनारा-यण स्वामी जनपातक हरणा ॥ जय०॥ टेर ॥ रत्न जड़ित—सिंहासन अद्भुत छवि राजै । नारद करत निराजन घण्टाध्वनि बाजै ॥ जय० ॥ प्रगट भये कलिकारण द्विजको दरश दिया । बूढ़ो ब्राह्मण बन के कञ्चनमहल किया ॥ जय० ॥ दुर्बल भील कठा-रो जिनपर कृपा करी । चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपति हरी ॥ जय० ॥ वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी । सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी ॥ जय० ॥ भाव भक्तिके कारण छिन छिन

रूप धर्या । श्रद्धा धारण कीनी जिनका काज सर्या ॥ जय० ॥ ग्वालबालसंग राजा बनमें भक्ति करी। मनवाञ्छित फल दीन्यो दीनदयाल हरी ॥ जय०॥ चढ़त प्रसाद सवायो कदलीफल मेवा । धूप दीप तुलसीसे राजी सत्यदेवा ॥ जय० ॥ श्री सत्यनारायणजीकी आरति जो कोई नर गावे । भणत शिवानन्दस्वामी सुख सम्पति मनवाञ्छित फल पावे ॥ जय० ॥

शंखजलमाहात्म्यम् ।

शंखमें जल भर कर भगवानके सम्मुख घुमावे और दोनों तरफ थोड़ा २ जल छोड़े । पश्चात् शेष जल भक्तोंके ऊपर छिड़क देवे ।

शंखमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि ।
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यादिकं हरेत् ॥

भगवानके सामने भ्रमण कराया हुआ शंखजल शरीर पर पड़नेसे ब्रह्म-हत्यादि पाप दूर होते हैं । इसलिये शंखजल अवश्य लेना चाहिये ।

विष्णु-स्तुतिः ।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं । विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥ लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं । वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥१॥ आदौ रामतपोव-

नादिगमनं हत्वा मृगङ्कांचनम् । वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ॥ बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम् । पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम् ॥२॥ आदौ देवकीदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनम् । मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम् ॥ कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनम् । एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥३॥ कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम् । नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कङ्कणम् ॥ सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली । गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥४॥ फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियम् । श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ॥ गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतम् । गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥५॥ यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैःस्तवै. वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः॥ ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो । यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥६॥ आदौ पाण्डवधार्तराष्ट्रजननं ला-

क्षागृहे दाहनम् । द्यूतस्त्रीहरणं वने विचरणं मत्स्यालयावेधनम् ॥ लीला गोहरणं रणे विचरणं सन्ध्याक्रियावर्द्धनम् । पश्चाद्भीष्मसुयोधनादिहननमेतन्महाभारतम् ॥७॥ श्रियः पतिर्यज्ञपतिः प्रजापतिर्धियां पतिर्लोकपतिर्धरापतिः ॥ पतिर्गतिश्चान्धकवृष्णिसात्वतां प्रसीदतां मे भगवान् सतां पतिः ॥८॥ मत्स्याश्वकच्छपनृसिंहवराहहंस - राजन्यविप्रविबुधेषु कृतावतारः ॥ त्वं पासि नस्त्रिभुवनञ्च यथाधुनेश । भारं भुवो हर यदूत्तम वन्दनं ते ॥९॥ सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितञ्च सत्ये ॥ सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः ॥१०॥ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥११॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥१२॥ आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् । सर्वदेवनमस्कारः केशवंप्रतिगच्छति ॥१३॥ मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लंघयते गिरिम् ॥ यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम् ॥ १४ ॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ॥ त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ १५ ॥ पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ॥ त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव ॥१६॥ कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च ॥ नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ॥१७॥ ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं । तीर्थास्पदं शिवविरंचिनुतं शरण्यम् ॥ भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं । वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१८॥ त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं । धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम् ॥ मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावन् । वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१९॥ अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे । अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु ॥ २० ॥ एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः ॥ दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥ २१ ॥

पुष्पाञ्जलि ।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे

साध्याः सन्ति देवाः ॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ॥ स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदः ॥ पुष्पांजलिं समर्पयामि ॥ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत् ॥

प्रदक्षिणा ।

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाᳬ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

साष्टाङ्ग-प्रणामः ।

उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा ।
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाङ्ग उच्यते ॥

पैर,हाथ, घुटना, छाती और मस्तकका जमीनसे स्पर्श करके मनमें स्मरण,

नेत्रोंसे दर्शन और वाणीसे नामोच्चारण करता हुआ प्रणाम करे ।

क्षमा-प्रार्थना ।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥

विसर्जन—गच्छन्तु च सुरश्रेष्ठाः स्वस्थानं परमेश्वराः ।
यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च ॥

यजमान-आशीर्वाद-मन्त्रः (अक्षत देवे)।

अक्षतान् विप्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः । चत्वारि तेषां वर्धन्ते आयुः कीर्तिर्यशो बलम् ॥ श्रीर्वर्चस्व मायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते । धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥

चरणामृत-ग्रहण-विधिः ।

चरणामृत हाथमें लेना निषिद्ध है । इसलिये पात्रमें लेकर लेना चाहिये । यदि पात्र नहीं हो तो नीचे लिखे अनुसार लेवे ।

वस्त्रन्तु द्विगुणं कृत्वा पाणौ पाणिं निवेशयेत् ।
तस्मिन् तीर्थं प्रतिष्ठाप्य त्रिः पिबेद्बिन्दुवर्जितम् ॥ वैष्णवधर्मे ॥

बायें हाथ पर दोहरा वस्त्र रखकर दाहिना हाथ रखे और चरणामृत लेकर पान करे । जमीन पर नहीं गिरने दे ।

तुलसी-ग्रहण-मन्त्रः ।

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम् ।
भक्षये देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम् ॥

चरणामृत-ग्रहण-मन्त्रः ।

नीचे लिखी प्रार्थना करके हाथमें चरणामृत लेना चाहिये ।

कृष्ण कृष्ण महाबाहो भक्तानामार्तिनाशन ।
सर्वपापप्रशमनं पादोदकं प्रयच्छ मे ॥

पश्चात् नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए चरणामृत पान करे ।

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ।
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

पञ्चामृत-ग्रहण-मन्त्रः ।

दुःखदौर्भाग्यनाशाय सर्वपापक्षयाय च ।
विष्णोः पञ्चामृतं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

नैवेद्य-ग्रहण-मन्त्रः ।

नैवेद्यमन्नं तुलसीविमिश्रितं, विशेषतः पादजलेन विष्णोः । योऽश्नाति नित्यं पुरतो मुरारेः प्राप्नोति यज्ञायुतकोटिपुण्यम् ॥

शिव-पूजनम् ।

पवित्र होकर आचमन-प्राणायाम करके सङ्कल्पवाक्यके अन्तमें "श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं गणपत्यादिसकलदेवतापूजनपूर्वकं श्रीभवानीशङ्करपूजनङ्करिष्ये" कह कर सङ्कल्प छोड़े। नीचे लिखे आवाहनमन्त्रोंसे मूर्तियोंके समीप पुष्प छोड़े। यदि मूर्ति न हो तो शिवके समीप अक्षतसे आवाहन करके पूजन करना चाहिये।

गणपति-पूजनम् ।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः ।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजायागं च रक्ष मे ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

पार्वती-पूजनम् ।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

नन्दीश्वर-पूजनम् ।

आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः । पितर-

ञ्च प्रयन्त्स्वः ॥ पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा । भरन्नग्निम्पुरीष्यम्मा पाद्यायुषः पुरा ॥

वीरभद्र-पूजनम् ।

भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬंसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः ॥

स्वामिकार्तिक-पूजनम् ।

यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यम्महि जातन्ते अर्वन् ॥ पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव । तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥

कुबेर-पूजनम् ।

कुविदङ्ग यवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय । इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति ॥ पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

कीर्तिमुख-पूजनम् ।

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहामलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा ॥ पूजन करके प्रार्थना करे ।

ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

जलहरीमें सर्पका आकार हो तो उसका पूजन करके नीचे लिखे मन्त्रोंसे शिवपूजन करे ।

पाद्य—ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो ये अस्य सत्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः ॥ पा०स०॥

अर्घ्य—ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पंक्त्या सह बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा ॥ अ०स०॥

आचमन—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

स्नान—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भस-र्ज्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसद्न्यसि वरुणस्य ऋतस-दनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ स्ना० स० ॥

दुग्धस्नान—गोक्षीरधामन्देवेश गोक्षीरेण मया कृत-म् । स्नपनं देवदेवेश गृहाण शिवशङ्कर ॥ दुग्धस्नानं समर्पयामि । पुनर्जलस्नानं समर्पयामि ॥

दधि—दध्ना चैव मया देव स्नपनं क्रियते तव । गृ-हाण भक्त्या दत्तं मे सुप्रसन्नो भवाव्यय ॥ द०पु०॥

घृत—सर्पिषा देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया । उमा-कान्त गृहाणेदं श्रद्धया सुरसत्तम ॥ घृ० पु० ॥

मधु—इदं मधु मया दत्तं तव तुष्ट्यर्थमेव च । गृहा-ण शम्भो त्वं भक्त्या मम शान्तिप्रदो भव ॥ म०पु०

शर्करा—सितया देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया। गृहा-ण शम्भो मे भक्त्या सुप्रसन्नो भव प्रभो ॥ श०पु०॥

पञ्चामृतस्नान—पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधि समन्वित-म् । घृतं मधु शर्करया स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥पं०॥

शुद्धोदकस्नान—ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवा-लस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशु-पतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

अभिषेकः—(जलधारा छोड़े) ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः । बाहु-भ्यामुत ते नमः ॥१॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा-ऽपापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिश-न्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बि-भर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्र तां कुरु मा हिॅंसीः पुरु-षञ्जगत् ॥३॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदा-मसि । यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मॅं सुमना अस-त् ॥४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् । अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुव ॥५॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सु-मङ्गलः । ये चैनॅं रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सह-स्रशोऽवैषाॅं हेड ईमहे ॥६॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः । उतैनङ्गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नु-दहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥ नमोऽस्तु नी-ल ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो ये अस्य स-त्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमु-भयोरार्त्न्योर्ज्याम् । याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥९॥ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत । अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य

निषङ्गधिः ॥१०॥ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥११॥ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः । अथो य इषुधिस्तवारे अस्मिन्निधेहि तम् ॥१२॥ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य शल्याना-म्मुखा शिवो नः सुमना भव ॥१३॥ नमस्त आयु-धायानातताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहु-भ्यान्तव धन्वने ॥१४॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकम्मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् । मा नो वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥१५॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मा नो वीरा-न्रुद्र भामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥१६॥

विजया—ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत । अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ॥

वस्त्र—ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्याम् । याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप ॥ व० पु० ॥

यज्ञोपवीत—ॐ ब्रह्म जज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ य० पु० ॥

गन्ध–ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः । शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥ ग० स० ॥

अक्षत–ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ अ० स० ॥

पुष्प–ॐ नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥ पु० स० ॥

पुष्पमाला–नानापङ्कजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि । बिल्वपत्रयुतां मालां गृहाण सुमनोहराम् ॥ पु० स० ॥

बिल्वपत्र–ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे ॥१॥ वि० स० ॥ काशीवास निवासी च कालभैरवपूजनम् । प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥ दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् । अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् । त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥ ४ ॥ अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च

पूजये शिवशङ्करम् । कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५॥ गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर । सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय ॥ ६ ॥ बि० स० ॥

तुलसीपत्र—ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः । मा द्यावापृथिवी अभि शोचीर्मान्तरिक्षम्मा वनस्पतीन् ॥ तु० स० ॥

दूर्वा—ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥दू० स० ॥

शमीपत्र-अमङ्गलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च । दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम् ॥

आभूषण-वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् । पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ आ० स० ॥

सुगन्ध तैल-(अतर फुलेल)-अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः । हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाꣳ सम्परिपातु विश्वतः ॥सु०स० ।

धूप-ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ॥

दीप—ॐ नम आशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय

च शीभ्याय च नम ऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥ दीपं दर्शयामि । (हस्तप्रक्षालनम्) ।

नैवेद्य-ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ॥ नै० निवेदयामि ॥

मध्ये पानीय-ॐ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च ॥ म० स० ॥

ऋतुफल-फलानीमानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ ऋ०स० ॥

आचमन-त्रिपुरान्तक दीनार्तिनाश श्रीकण्ठ शाश्वत । गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदककल्पितम् ॥ आ०स० ॥

अखण्ड ऋतुफल—कूष्माण्डं मातुलुङ्गञ्च नारिकेलफलानि च । रम्याणि पार्वतीकान्त सोमेश प्रतिगृह्यताम् ॥

ताम्बूल-पूगीफल—ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः । यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ तां० स० ॥

दक्षिणा—न्यूनातिरिक्तपूजायां सम्पूर्णफलहेतवे । दक्षिणां काञ्चनीं देव स्थापयामि तवाग्रतः ॥ द० स० ॥

आरती।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

शिवजीकी आरती।

जै शिव ओंकारा, हो शिव पार्वतीप्यारा, हो शिव ऊपर जलधारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ॥१॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥ टेर ॥ एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै। हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजै ॥ २ ॥ ॐ हर हर० ॥ दोय भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै। तीनों रूप निरखता त्रिभुवनजन मोहै ॥३॥ ॐ हर हर०॥ अक्षमाला वनमाला रुण्डमालाधारी। चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥४॥ ॐ हर हर० ॥ श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अङ्गे। सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे ॥५॥ ॐ हर हर० ॥ करमध्ये कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता। सुखकर्त्ता दुखहर्त्ता जगपालनकर्त्ता ॥६॥ ॐ हर हर० ॥ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका। प्रणव अक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥७॥ ॐ हर हर० ॥ त्रिगुण स्वामीकी आरति जो कोई नर गावे। भणत

शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै ॥८॥ ॐ हर हर० ॥ जै शिव ओंकारा, हो मन भज शिव ओंकारा, हो मन रट शिव ओंकारा, हो शिव गल रुण्डनमाला, हो शिव ओढ़त मृगछाला, हो शिव रहते मतवाला, हो शिव पार्वती प्यारा, हो शिव ऊपर जलधारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ॥९॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

शिवस्तुतिः (पुष्पाञ्जलि)।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखिनीपत्रमूर्वी ॥ लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥१॥ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्-कारणं वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम् बन्दे सूर्य्यशशांक-वह्नियनम् वन्दे मुकुन्दप्रिय ॥ वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ २ ॥ शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ॥ नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥३॥ श्मशानेष्वाक्रीड़ा स्मरहरपि-

शाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी-परिकरः ॥ अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ ४ ॥ त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ॥ त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥५॥ पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः ॥ त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव ॥६॥ कालहर कण्टकहर दुःखहर दारिद्र्यहर ॥

नीचे लिखे मंत्रसे गाल बजाते हुए बम् बम् बोलकर जलहरीका जल लगावे।

निरावलम्बस्य ममावलम्बं विपाटिताशेषविपत्कदम्बम्। मदीयपापाचलपातशम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम् बम् ॥

पंचाङ्ग-प्रणामः।

वाहुभ्यां चैव मनसा शिरसा वचसा दृशा।
पञ्चाङ्गोऽयं प्रणामः स्यात् पूजासु प्रवराविमौ ॥

मनमें स्मरण, नेत्रोंसे दर्शन और वाणीसे नामोच्चारण करते हुए दोनों हाथ जोड़कर तथा मस्तकको झुकाकर प्रणाम करे।

प्रदक्षिणा (अर्ध प्रदक्षिणा करे)।

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे-पदे ॥

क्षमा-प्रार्थना।

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ॥ ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर ॥ अनेन पूजनेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयताम् ॥

पार्थिव-शिव-पूजनम्।

पवित्र होकर संकल्पवाक्यके अन्तमें "पार्थिवलिङ्गपूजनं करिष्ये" कहकर सङ्कल्प छोड़े। सूर्यको अर्घ्य देकर नीचे लिखे मंत्रसे भूमिकी प्रार्थना करे।

ॐ सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम्। ग्रहिष्यामि प्रसन्ना त्वं लिङ्गार्थं भव सुप्रभे ॥

ॐ ह्राँ पृथिव्यै नमः ॥ नीचे लिखे मन्त्रसे मृत्तिका ग्रहण करे।

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके त्वां च गृह्णामि प्रजया च धनेन च ॥ ॐ हराय नमः॥ "ॐ वं" जलको अभिमन्त्रित करे। "ॐ महेश्वराय नमः" मूर्त्ति बनावे। "ॐ शूलपाणये नमः" मूर्त्ति स्थापित करे।

ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीसदाशिवो देवता। ॐ बीजं, नमः शक्तिः, शिवाय कीलकं, मम साम्बसदाशिव

प्रीत्यर्थं न्यासे पूजने जपे च विनियोगः॥

अङ्गन्यासः—ॐ वामदेवाय ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। ॐ सदाशिवदेवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः। ॐ शिवाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ नं तत्पुरुषाय नमो हृदये। ॐ मं अघोराय नमः पादयोः। ॐ शिं सद्योजाताय नमो गुह्ये। ॐ वां वामदेवाय नमो मूर्ध्नि। ॐ यं ईशानाय नमो मुखे। ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ मं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ शिं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ वां कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। ॐ ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिरसे स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचायहुं। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्॥

विनियोगः—ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुःसामानिच्छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं, देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥

प्रतिष्ठा—ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुःसामच्छन्दोभ्यो नमो मुखे। प्राणाख्यदेव-

तायै नमः हृदि। आं बीजाय नमो गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। इति कृत्वा । ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं० शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं० शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि। वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ नीचे लिखे मन्त्रसे पुष्प समर्पण करे । ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि । ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि । ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि । इत्यावाहयेत् । ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् । तावत्त्वम्प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

पूजन करके नीचे लिखे मन्त्रसे विसर्जन करे ।

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक् ।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव बिसर्जनम् ॥

दुर्गा-पूजनम् ।

कलश स्थापनके लिये शुद्धमृत्तिकामें यव अथवा गेहूं रोपण करके वेदी बनावे । पश्चात् आचमन प्राणायाम करके संकल्पवाक्यके अन्तमें "ममेहजन्मनि दुर्गाप्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं दीर्घायुर्विपुलधनपुत्र-

पौत्रा ह्यविच्छिन्नसन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मीकीर्तिलाभ-शत्रुपराजयप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं दुर्गापूजनं तत्र निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचनम्, पुण्याहवाचनम्, गणपत्यादिपूजनं च करिष्ये" कहकर संकल्प छोड़े। पश्चात् नीचे लिखे संकल्पसे ब्राह्मणका वरण करे।

अद्य दुर्गापूजनपूर्वकमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतचण्डीसप्तशतीपाठकरणार्थं अमुक * गोत्रं अमुक * शर्माणं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे॥ पश्चात् ब्राह्मण "वृतोस्मि" कहे।

पूर्वोक्त विधिसे स्वस्तिवाचन, पुण्याहवाचन, गणपतिपूजन, कलशस्थापन, नवग्रह, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल, षोडशमातृका तथा चतुःषष्टियोगिनीका पूजन करके भगवतीवाहन तथा भैरववाहन और ध्वजा आदिका पूजन करे।

भैरवपूजनम्। पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिरनीलो व्यालयज्ञोपवीती। क्रतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतुर्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

देवीध्यानम्।

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्। हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

आवाहन—आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि।

पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये ॥

आसन-अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् । कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ आ० स० ॥

पाद्य-गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् । तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ पा० स० ॥

अर्घ्य—गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया । गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥ अ० स० ॥

आचमन—आचम्यतां त्वया देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु । ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥

स्नान —जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम् । स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम् ॥ स्ना० स० ॥

दुग्ध, दधि, घृत, मधु शर्करास्नान पृष्ठ—९१, १०६, १२५ ॥

पञ्चामृतस्नान—पयो दधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम् । पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे ॥

शुद्धोदकस्नान-ॐ परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये । सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीशि ते ॥

वस्त्र—वस्त्रञ्च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् । मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥ व० पु० ।

उपवस्त्र-ॐ यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा । तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥

मधु पर्क-दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने ॥ म० स० ॥
गन्ध—परमानन्दसौभाग्यपरिपूर्णदिगन्तरे । गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि ॥ ग० स० ॥
कुङ्कुम—कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ कुं० स० ॥
आभूषण—हारकङ्कणकेयूरमेखलाकुण्डलादिभिः। रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ आ० स० ॥
सिन्दूर—सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् । पूजितासि मया देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥ सिं० स० ॥
कज्जल—चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे ! शान्तिकारिके ! । कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥
सौभाग्यद्रव्य—सौभाग्यसूत्रं वरदे ! सुवर्णमणिसंयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ॥
सुगन्धतैल (अतर)-चन्दनागरुकर्पूरकुङ्कुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धाँश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम् ॥ सु०स० ॥
परिमलद्रव्य-हरिद्रारञ्जिते देवि सुखसौभाग्यदायिनि ।
तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र दुःखशान्तिं प्रयच्छ मे ॥
अक्षत—रञ्जिताः कुङ्कुमौघेन अक्षताश्चातिशोभनाः ।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव शोभने ॥ अ० स० ॥

पुष्प—मन्दारपारिजातादि पाटलीकेतकानि च । जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ॥ पु० स० ॥

पुष्पमाला—सुरभिपुष्पनिचयैः ग्रथितां शुभमालिकाम्। ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥ पु० स० ॥

बिल्वपत्र—अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवि ! प्रियः सदा । बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥

धूप—दशांगगुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम् । समर्पितं मया भक्त्या महादेवि ! प्रगृह्यताम् ॥ धूपमाघ्रापयामि

दीप—घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्वलम् । दीपं दास्यामि देवेशि ! सुप्रीता भव सर्वदा ॥ दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्य—अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् । नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु। नैवेद्यं निवेदयामि । मध्ये पानीयम् ॥ पृष्ठ—६४, ११३, १३० ॥

ऋतुफल—द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम् । नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥ ऋ० पु० ।

आचमन—कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमंबिके । निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके ॥ आ० स० ॥

अखण्ड ऋतुफल—नारिकेलं च नारिंगं कलिंगं मञ्जिरं तथा । उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम् ॥

ताम्बूलपूगीफल—एलालवंगकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासिताम् । वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ॥

दक्षिणा—पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णभीश्वरि।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥द० स०॥

पुस्तकपूजनम्। (जलसे नहीं करे)।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

ज्योतिः पूजनम्। (पूजन करके प्रार्थना करे)।

शुभं भवतु कल्याण मारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम्।
आत्मतत्वप्रबोधाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

कुमारीपूजनम्।

कन्याका पूजन तथा भोजन कराके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

सर्वस्वरूपे! सर्वेशे सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥

आरती—नीराजनं सुमंगल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि! नमोऽस्तु ते ॥

दुर्गाजीकी आरती।

जै अम्बे गौरी! मैया जै मंगलमूरती! मैया जै आनन्दकरणी। तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री! ॥टेर॥ जै अम्बे० ॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको। उज्वलसे दोऊ नैना

चन्द्रवदन नीको ॥ जै अम्बे० ॥ कनकसमानकलेवर रक्ताम्बर राजै । रक्तपुष्प बनमाला कण्ठन पर साजै ॥ जै अम्बे०॥ केहरिवाहन राजत खड्ग खप्परधारी। सुरनरमुनिजनसेवत तिनके दुःखहारी ॥ जै अम्बे० ॥ काननकुण्डलशोभित नासाग्रे मोती । कोटिकचन्द्रदिवाकर राजतसमज्योती ॥ जै अम्बे०॥ शुम्भनिशुम्भ विड़ारे महिषासुरघाती । धूम्रविलोचननाशिनि निशिदिनमदमाती ॥ जै अम्बे०॥ चौंसठयोगिनि गावत नृत्य करत भैरूँ । बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ जै अम्बे०॥ भुजा चार अतिशोभित खड्गखप्परधारी मनवांछित फलपावत सेवत नरनारी ॥ जै अम्बे० ॥ कञ्चनथाल विराजत अगरकपूरबाती । श्री मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥ जै अम्बे० ॥ या अम्बेजीकी आरति जो कोई नर गावै । भणत शिवानन्दस्वामी सुखसम्पति पावै ॥ जै अम्बे गौरी ॥

पुष्पाञ्जलि ।

दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोःस्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

प्रदक्षिणा ।

नमस्ते देवि देवेशि नमस्त ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ॥

दण्डवत्-प्रणाम ।

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे ।
साष्टांगोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृतः ।

क्षमा-प्रार्थना ।

पुत्रान्देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि मंगले ।
अन्यांश्च सर्वकामांश्च देहि देवि नमोऽस्तु ते ॥

विसर्जन—इमांपूजांमयादेवि यथाशक्त्योपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्थानमनुत्तमम् ॥

श्रीमहालक्ष्मी-पूजनम् ।

आचमन प्राणायाम करके सङ्कल्प वाक्यके अन्तमें "स्थिर-लक्ष्मीप्राप्त्यर्थं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं सर्वारिष्टनिवृत्तिपूर्वकसर्वाभीष्टफलप्राप्त्यर्थं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं व्यापारे लाभार्थं च गणपतिनवग्रहकलशादिपूजनपूर्वकं श्रीमहालक्ष्मी-महाकाली-महासरस्वती-लेखनी-कुवेरादीनां च पूजनं करिष्ये" कहकर सङ्कल्प छोड़े । पश्चात् गणपति, कलश और नवग्रहादिका पूर्वोक्त विधिसे पूजन करके महालक्ष्मीका पूजन करे ।

ध्यान—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी। गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्र-

वस्त्रोत्तरीया ॥ या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिताहेमकुम्भैः । सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ।

आवाहन—ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनाम् । सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ॥

आसन—ॐ तप्तकांचनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम् । अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥ आ० स० ॥

पाद्य—ॐ गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् । पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तुते ॥ पा० स० ॥

अर्घ्य—ॐ अष्टगंधसमायुक्तं स्वर्णपात्रप्रपूरितम् । अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्म्यैनमोऽस्तुते ॥

आचमन—ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णवादिभिःस्तुता । ददाम्याचमनं तस्यैमहालक्ष्म्यै मनोहरम्॥

स्नान—मन्दाकिन्याः समानीतैर्हेमांभोरुहवासितैः । स्नानं कुरुष्वदेवेशि ! सलिलैश्चसुगन्धिभिः

दुग्ध, दधि, घृत, मधु, और शर्कराके मन्त्र पृष्ठ—९१, १०९,१२५ में देखो ।

पञ्चामृतस्नान—ॐ पंचामृतसमायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम् । गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले ॥

शुद्धोदकस्नान-तोयं तव महादेवि ! कर्पूरागरुवासितम् तीर्थेभ्यः सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥शु०स०॥

वस्त्र—ॐ दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम् । दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ॥

उपवस्त्र—कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम् । गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि ॥उ० स०॥

मधुपर्क—कापिलं दधिकुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम् । स्वर्णपात्रस्थितं देवि ! मधुपर्कं गृहाण भोः ॥म०स०पु०॥

आभूषण—ॐ स्वभावसुन्दराङ्गायै नानादेवाश्रये शुभे । भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥आ० स०॥

गन्ध—श्रीखण्डागरुकर्पूरमृगनाभिसमन्वितम् । विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले ॥ ग०स० ॥

चन्दन—केशरागरुकर्पूरचन्दनादिसमन्वितम् । विलेपनं महादेवि तुभ्यं दास्यामि भक्तितः ॥चं० स०॥

सिन्दूर—ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलकप्रिये । भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥सिं०स०॥

कुङ्कुम—ॐ कुङ्कुमं कामदं दिव्यं कुङ्कुमं कामरूपिणम् । अखण्डकामसौभाग्यं कुङ्कुमं प्रतिगृह्यताम् ॥कुं०स०॥

अक्षत—अक्षतान्निर्मलाञ्शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान् । गृहाणेमान्महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ॥

पुष्प—ॐ मन्दारपारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा । मरुवामोगरंचैव गृहाणाशु नमोनमः ॥ पु० स० ॥

पुष्पमाला—पद्मशंखजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रिताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ॥पु० स०॥

दूर्वा—ॐ विष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभना-
म् । क्षीरसागरसम्भूतां दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा॥दु०स०॥

सुगन्ध तैल (अतर)—ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि !
दयानिधे । सर्वलोकस्य जननि ! ददामि स्नेहमुत्तमम्॥

धूप—ॐ वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥धू०आ०॥

दीप—ॐ कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ॥ दी०द०ह०प्र० ॥

नैवेद्य—ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वित-
म् । षड्सैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥
नैवेद्यं निवेदयामि ॥ मध्येपानीयम् । पृष्ठ ९४, ११३, १३० में देखो ।

ऋतुफल—ॐ फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराच-
रम् । तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥

आचमन—ॐ शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवा-
सितम् । आचम्यतामिदं देवि ! प्रसीद त्वं महेश्वरि॥

अखण्ड ऋतुफल—इदं फलं मयाऽऽनीतं सरसं च निवे-
दितम् । गृहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम् ॥

ताम्बूल पूगीफल—ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागपत्रादिभिर्युतम्। पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

दक्षिणां समर्पयामि। पृष्ठ ९४, ९६, ११४, १३०, १४१ में देखो।

प्रार्थना—ॐ सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तवपादपङ्कजम्। परावरं पातु वरं सुमङ्गलं नमामि भक्त्या तव कामसिद्धये॥ भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनि। सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते॥ नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्॥

श्रीमहाकाली-पूजनम्।

दवातके मोली बांधकर तथा साथिया करके नीचे लिखा ध्यान करे।

ॐ मषि त्वं लेखनीयुक्ता चित्रगुप्ताशयस्थिता। सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम॥ या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्डविमर्दिनी। सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव॥ ॐ श्रीमहाकाल्यै नमः॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

या कालिका रोगहरा सुवंद्या वैश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः। जनैर्जनानां भयहारिणी च सा देवमाता मयि सौख्यदात्री॥

लेखिनी-पूजनम् ।

कलमके मोली लपेटकर नीचे लिखा ध्यान करे ।

ॐ शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् । हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने-संस्थितां वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥ लेखिन्यै नमः ॥ पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्तकरस्थिते ।
सदक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ॥

श्रीमहासरस्वती-पूजनम् ।

बही, बसना और थैली आदिके रोलीसे साथिया करके नीचे लिखा ध्यान करे ।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना । या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥ ॐ वीणापुस्तकधारिण्यै नमः ॥ पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे ।

ॐ शारदाशारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥

कुबेर-पूजनम् ।

निधिस्थान (सन्दूकादि) में सिन्दूरसे साथिया करके आवाहन करे ।

आवाहयामि देव त्व,—मिहायाहि कृपां कुरु ।

कोशं वर्द्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर॥

पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने॥

तुला तथा मान-पूजनम्।

सिन्दूरसे साथिया करके पूजन करे। पश्चात् नीचे लिखी प्रार्थना करे।

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना॥

दीपावली-पूजनम्।

दीपक चासकर, पात्रमें रखकर, पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

भो दीप त्वं ब्रह्मरूप अन्धकारनिवारक। इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय॥ ॐ दीपेभ्योनमः॥

आरती—ॐ चक्षुर्दं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम्। आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

श्रीलक्ष्मीजीकी आरती।

जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता। तुमकूं निशिदिन सेवत हर विष्णु धाता॥टेर॥ ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तुहि है जगमाता। सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता॥जय०॥ दुर्गारूप निर-

ञ्जनि सुख सम्पति दाता। जो कोई तुमको ध्यावत ऋधिसिधि धन पाता ॥जय०॥ तूही है पाताल बसन्ती तूही है शुभदाता। कर्मप्रभाव-प्रकाशक जगनिधिसे त्राता ॥ जय० ॥ जिस घर थारो बासो जाहिमें गुण आता। कर न सकै सोई करले मन नहिं धड़काता ॥जय०॥ तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता। खान पानको विभवै तुम बिन कुण दाता ॥ जय० ॥ शुभगुण सुन्दरयुक्ता क्षीरनिधी-जाता। रत्न चतुर्दश तोकूं कोई भी नहिं पाता ॥ जय० ॥ या आरति लक्ष्मीजीकी जो कोई नर गाता। उर आनन्द अति उमँगे पाप उतर जाता ॥जय०॥ स्थिरचर जगत बचावै कर्म प्रेरल्याता। राम प्रताप मैयाकी शुभ दृष्टी चाता ॥ जय लक्ष्मी माता ॥

श्रीसंकटनाशन-गणेश-स्तोत्रम्।

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्। भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुष्कामार्थसिद्धये ॥१॥ प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्। तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥ लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च। सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥ नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु

विनायकम् । एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥ ४ ॥ द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः । न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिश्च जायते ॥५॥ विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् । पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥ ६ ॥ जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् । संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥७॥ अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् । तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

श्रीनारदपुराणे संकटनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीसत्यनारायणाष्टकम् ।

आदिदेवं जगत्कारणं श्रीधरं, लोकनाथं विभुं व्यापकं शङ्करम् । सर्वभक्तेष्टदं मुक्तिदं माधवं, सत्यनारायणं विष्णुमीशम्भजे ॥१॥ सर्वदा लोककल्याणपारायणं, देवगोविप्ररक्षार्थसद्विग्रहम् । दीनहीनात्मभक्ताश्रयं सुन्दरं, सत्य० ॥२॥ दक्षिणे यस्य गङ्गा शुभा शोभते, राजते सा रमा यस्य वामे सदा । यः प्रसन्नाननो भाति भव्यश्च तं, सत्य० ॥३॥ सङ्कटे सङ्गरे यं जनः सर्वदा, स्वात्मभीनाशनाय स्मरेत् पीड़ितः । पूर्णकृत्यो भवेद् यत्प्रसादाच्च तं,

सत्य० ॥ ४ ॥ वाञ्छितं दुर्लभं यो ददाति प्रभुः, साधवे स्वात्मभक्ताय भक्तिप्रियः । सर्वभूताश्रयं तं हि विश्वम्भरं, सत्य० ॥५॥ ब्राह्मणः साधु वैश्यश्च तुङ्गध्वजो, येऽभवन् विश्रुता यस्य भक्त्याऽमराः । लीलया यस्य विश्वं ततं तं विभुं, सत्य० ॥६॥ येन चाब्रह्मबालतृणं धार्यते, सृज्यते पाल्यते सर्वमेतज्जगत् । भक्तभावप्रियं श्री दयासागरं, सत्य० ॥ ॥७॥ सर्वकामप्रदं सर्वदा सत्प्रियं, वन्दितं देववृन्दैर्मुनीन्द्रार्चितम् । पुत्रपौत्रादिसर्वेष्टदं शाश्वतं, सत्य० ॥ ८॥ अष्टकं सत्यदेवस्य भक्त्या नरः, भावयुक्तो मुदा यस्त्रिसन्ध्यं पठेत् । तस्य नश्यन्ति पापानि तेनाग्निना, इन्धनानीव शुष्काणि सर्वाणि वै ॥६॥

श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम् ।

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते । शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥१॥ नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयंकरि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि० ॥२॥ सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि । सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि० ॥३॥ सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि० ॥४॥ आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्व-

रि । योगजे योगसंभूते महालक्ष्मि० ॥५॥ स्थूलसू-क्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे । महापापहरे देवि महालक्ष्मि० ॥६॥ पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्व-रूपिणि । परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि० ॥७॥ श्वे-ताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते । जगत्स्थिते जग-न्मातर्महालक्ष्मि० ॥८॥ महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठे-द्भक्तिमान्नरः । सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यमाप्नोति सर्वदा ॥९॥ एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाश-नम् । द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥१०॥ त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् । महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

इन्द्रकृतः श्रीमहालक्ष्म्यष्टकस्तवः सम्पूर्णः ॥

श्रीगङ्गाष्टकम् ।

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि स्व-र्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये । त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खतस्त्वन्नाम स्म-रतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ॥१॥ त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं त्वन्नीरे नरका-न्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः । नैवान्यत्र म-दान्धसिन्धुरघटासंघट्टघण्टारणत्कारत्रस्तसमस्तवैरि-

वनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥ २ ॥ उक्षा पक्षी तुरग
उरगः कोऽपि वा वारणो वा वारणस्यां जननम-
रणक्लेशदुःखासहिष्णुः । न त्वन्यत्र प्रविरलरण-
त्कङ्कणक्वाणमिश्रं वारस्त्रीभिश्चमरमरुतावीजितो
भूमिपालः ॥३॥ काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं
गोमायुभिर्लुण्ठितं स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलि-
तं वीचीभिरान्दोलितम्। दिव्यस्त्रीकरचारुचामरम-
रुत्सम्वीज्यमानः कदा द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे
भागीरथि स्वं वपुः ॥४॥ अभिनवबिसवल्ली पाद-
पद्मस्य विष्णोर्मदनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला। ज-
यति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः क्षपितक-
लिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ॥५॥ एतत्तालतमाल-
सालसरलव्यालोलवल्लीलताच्छन्नं सूर्यकरप्रताप-
रहितं शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम् । गन्धर्वामरसिद्धकि-
न्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं स्नानाय प्रतिवासरं भवतु
मे गाङ्गं जलं निर्मलम् ॥६॥ गाङ्गं वारि मनोहारि
मुरारिचरणच्युतम् । त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि
पुनातु माम्॥७॥पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि शै
लप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि । झङ्कारकारि हरि-
पादरजोपहारि गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि

॥८॥ गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः । प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु मोक्षंलभेत् पतति नैव नरो भवाब्धौ॥९॥

श्रीवाल्मीकिविरचितं गंगाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीराधाकृष्णयुगलस्तोत्रम् ।

अनादिमाद्यं पुरुषोत्तमोत्तमं, श्रीकृष्णचन्द्रं निजभक्तवत्सलम् । स्वयं त्वसङ्ख्याण्डपतिं परात्परं, राधापतिं त्वां शरणं व्रजाम्यहम् ॥१॥ गोलोकनाथस्त्वमतीवलीलो, लीलावतीयं निजलोकलीला । वैकुण्ठनाथोऽसि यदा त्वमेव, लक्ष्मीस्तदेयं वृषभानुजा हि ॥२॥ त्वं रामचन्द्रो जनकात्मजेयं,भूमौ हरिस्त्वं कमलालयेयम् । यज्ञावतारोऽसि यदा तदेयं, श्रीदक्षिणास्त्रीप्रतिपत्निमुख्याः ॥३॥ त्वं नारसिंहोऽसि रमा हृदीयं, नारायणस्त्वञ्च नरेण युक्तः। तदात्वियं शान्तिरतीव साक्षा,च्छायेव याता च तवानुरूपा ॥४॥ त्वं ब्रह्म चेयं प्रकृतिस्तटस्था, कालो यदेमां च विदुः प्रधानम् । महान्यदा त्वं जगदंकुरोऽसि, राधा तदेयं सगुणा च माया॥५॥ यदान्तरात्मा विदितश्चतुर्भि,स्तदा त्वियं लक्षणरूपवृत्तिः। यदा विराड्देहधरस्त्वमेव, तदाखिलं वा भुवि धारणेयम्॥६॥

श्यामञ्च गौरं विदितं द्विधा मह,स्तवैव साक्षात्पुरुषोत्तमोत्तम !। गोलोकधामाधिपतिं परेशं,परात्परं त्वां शरणं व्रजाम्यहम्॥७॥ सदा पठेद्यो युगलस्तवं परं, गोलोकधामं परमं प्रयाति सः। इहैव सौन्दर्यसमृद्धसिद्धयो, भवन्ति तस्यापि निसर्गतः पुनः ॥८॥

श्रीविष्णुसहस्रनाम-स्तोत्रम् ।

अथ मङ्गलाचरणम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसत्यनारायणाय नमः ॥ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥१॥ नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥२॥ व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम् । पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥ ३ ॥ व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे । नमो वै ब्रह्मविधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥४॥ अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः । अभाललोचनः शम्भुर्भगवान् बादरायणः ॥५॥ अथ विष्णुसहस्रनाम प्रारम्भः ॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥ यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्। विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥१॥ नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते । अ-

नेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥२॥ वैशम्पायन उवाच ॥ श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः । युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥३॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ किमेकं दैवतं लोके किम्वाप्येकं परायणम् । स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥४॥ को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः । किं जपन् मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ ॥५॥ भीष्म उवाच ॥ जगत्प्रभुं देवदेव,—मनन्तं पुरुषोत्तमम् । स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ।६। तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् । ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥७॥ अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् । लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥८॥ ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् । लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥९॥ एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः । यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥१०॥ परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः । परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥११॥ पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानाञ्च मङ्गलम् । दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१२॥ यतः स-

र्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे । यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥१३॥ तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते। विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥ १४ ॥ यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः । ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१५॥ ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः। छन्दोनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥१६॥ विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् । अनेकरूपं दैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥१७॥ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य भगवान्वेदव्यास ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः। श्रीकृष्णः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता । अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्। देवकीनन्दनः स्रष्टेतिशक्तिः । त्रिसामा सामगः सामेति हृदयम् । शंखभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्। शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् । रथांगपाणिरक्षोभ्य इति कवचम् । उद्भवःक्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः । श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे सहस्रनामस्तोत्रजपे विनियोगः ॥

अथ करन्यासः ॥ ॐ उद्भवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ देवाय मध्यमाभ्यां

नमः । ॐ उद्भवाय अनामिकाभ्यां नमः । ॐ क्षोभणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ देवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति करन्यासः ॥ अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः ॥ सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः ज्ञानाय हृदयाय नमः। सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः शक्त्यै शिखायै वषट् । त्रिसामा सामगः साम बलाय कवचाय हुम्। रथांगपाणिरक्षोभ्यः तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् । शार्ङ्गधन्वा गदाधरः वीर्याय अस्त्राय फट् । ऋतुः सुदर्शनः कालः भूर्भुवस्स्वरोम् । दिग्बंधः ॥ इति हृदयादिन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतैर्मौक्तिकानां मालाक्लृप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः। शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरि विरचितैर्मुक्तपीयूषवर्षैरानंदी नः पुनीयादरिनलिनगदाशङ्खपाणिर्मुकुन्दः ॥१॥ भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमब्धिः। अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगंधर्वदैत्यैश्चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि ॥२॥ शान्ताकारं

भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् । लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥३॥ मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्साङ्कं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम् । पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम् ॥४॥ सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् । सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥५॥ ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः । भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१॥ पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः। अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥२॥ योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः । नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥३॥ सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः । सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥४॥ स्वयंभूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥५॥ अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः । विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥६॥ अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः

प्रतर्दनः । प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलम्परम् ॥
॥७॥ ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजा-
पतिः । हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः॥८॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः । अनु-
त्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥९॥ सुरेशः
शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः । अहः संवत्सरो
व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥१०॥ अजः सर्वेश्वरः
सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः । वृषाकपिरमेयात्मा
सर्वयोगविनिःसृतः ॥११॥ वसुर्वसुमनाः सत्यः स-
मात्मा सम्मितः समः। अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृष-
कर्मा वृषाकृतिः॥१२॥रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयो-
निः शुचिश्रवाः।अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहो महा-
तपाः॥१३॥ सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्द-
नः। वेदो वेदविद्व्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः॥१४॥लो-
काध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः । चतुरात्मा
चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥१५॥ भ्राजिष्णुर्भो-
जनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः। अनघो विजयो
जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः॥१६॥उपेन्द्रो वामनः प्रां-
शुरमोघः शुचिरूर्जितः। अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृता-
त्मा नियमो यमः॥१७॥वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा

माधवो मधुः। अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥१८॥ महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः। अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥१९॥ महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतांगतिः। अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदाम्पतिः॥२०॥ मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः। हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः॥२१॥ अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः। अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा॥२२॥ गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः। निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः॥२३॥ अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः। सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्॥२४॥ आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः। अहःसंवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः॥२५॥ सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः। सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः॥२६॥ असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः। सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥२७॥ वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः। वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः॥२८॥ सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो

वसुः । नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥२९॥
ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः । ऋद्धः
स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥३०॥ अमृ-
तांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः । औषधं जग-
तः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः॥३१॥भूतभव्यभवन्नाथः
पवनः पावनोऽनलः । कामहा कामकृत्कान्तः कामः
कामप्रदः प्रभुः ॥३२॥ युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो
महाशनः । अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजि-
त् ॥३३॥इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो
वृषः । क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः॥३४॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः। अपांनि-
धिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः॥३५॥स्कन्दः स्कन्द-
धरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः । वासुदेवो बृहद्भानु-
रादिदेवः पुरन्दरः॥३६॥ अशोकस्तारणस्तारः शूरः
शौरिर्जनेश्वरः । अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनि-
भेक्षणः ॥३७॥ पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः श-
रीरभृत् । महर्द्धिरृद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः
॥३८॥अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः । स-
र्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः॥३९॥ वि-
क्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः । महीधरो

महाभागो वेगवानमिताशनः॥४०॥उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः। करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥४१॥ व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः। परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः॥४२॥रामो विरामो विरतो मार्गो नेयो नयोऽनयः॥ वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः॥४३॥ वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः। हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः॥४४॥ ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः। उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः॥४५॥ विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम्। अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः॥४६॥अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः। नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः॥४७॥यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतांगतिः। सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्॥४८॥सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्। मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः॥४९॥स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्। वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः॥५०॥धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम्। अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः

॥५१॥ गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः। आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः॥५२॥ उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः। शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः॥५३॥सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः। विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतांपतिः॥५४॥जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः। अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः॥५५॥अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः। आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः॥५६॥महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः। त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत्॥५७॥महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी। गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः॥५८॥ वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः। वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः॥५९॥भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः। आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः॥६०॥ सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः। दिवःस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥६१॥त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्। संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परा-

यणम्॥६२॥शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः। गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः॥६३॥ अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः। श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः॥६४॥ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः। श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः॥६५॥स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः। विजितात्मा-विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः॥६६॥उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः। भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥६७॥अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः। अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः॥६८॥ कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः। त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः॥६९॥कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः। अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥७०॥ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः। ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥७१॥ महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः। महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥७२॥ स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः। पूर्णः पूरयिता पुण्यः

पुण्यकीर्त्तिरनामयः॥७३॥मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः। वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः॥७४॥ सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः। शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः॥७५॥भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः। दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः॥७६॥ विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्। अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः॥७७॥ एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम्। लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः॥७८॥ सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी। वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः॥७९॥ अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्। सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥८०॥ तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतांवरः। प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः॥८१॥ चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहु-श्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः। चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात्॥ ८२॥ समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः। दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा॥८३॥ शुभाङ्गो लोकसारंगः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः। इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः

॥८४॥ उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः । अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥८५॥ सुवर्णबिंदुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः । महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥८६॥ कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः । अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥८७॥ सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः। न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः॥८८॥ सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः । अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद् भयनाशनः ॥८९॥ अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् । अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥९०॥ भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः। आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥९१॥ धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः । अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमोऽयमः ॥९२॥ सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः । अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ॥९३॥ विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः । रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥९४॥ अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।

अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥९५॥ सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः । स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ॥९६॥ अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः । शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥९७॥ अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः । विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥९८॥ उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः । वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥९९॥ अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः । चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥१००॥ अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः । जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥१०१॥ आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः । ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥१०२॥ प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः । तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥१०३॥ भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः । यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥१०४॥ यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः । यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥१०५॥ आत्मयोनिः स्वयंजातो

वैखानः सामगायनः । देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥१०६॥ शंखभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः । रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः॥१०७॥ सर्वप्रहरणायुध ओं नमः । इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः । नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥१०८॥ य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् । नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित् सोऽमुत्रेह च मानवः ॥१०९॥ वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् । वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥११०॥ धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् । कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥१११॥ भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत् ॥११२॥ यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च । अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥११३॥ न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति । भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः॥११४॥ रोगार्तो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात् । भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः॥११५॥ दुर्गाण्यतितरत्या-

शु पुरुषः पुरुषोत्तमम् । स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥११६॥ वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः । सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम्॥११७॥ न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् । जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥११८॥ इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः । युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः॥११९॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः । भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१२०॥ द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः । वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः॥१२१॥ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् । जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥१२२॥ इन्द्रियाणि मनोबुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः । वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥१२३॥ सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते । आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१२४॥ ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः । जङ्गमाजङ्गमं चेदञ्जगन्नारायणोद्भवम्॥१२५॥योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादिकर्म च । वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत् सर्वं जनार्दनात् ॥१२६॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः । त्रीन्लो-
कान् व्याप्य भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः॥१२७॥
इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् । पठे-
द्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥१२८॥
विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् । भजन्ति
ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥१२९॥ अर्जुन
उवाच॥ पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम ।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥१३०॥
श्रीभगवानुवाच । यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छ-
ति पाण्डव । सोहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न सं-
शयः॥१३१॥ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्र-
पादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते
सहस्रकोटियुगधारिणेनमः ॥१३२॥ नमः कमलना-
भाय नमस्ते जलशायिने । नमस्ते केशवानन्त वा-
सुदेव नमोऽस्तु ते ॥१३३॥ वासनाद्वासुदेवस्य वा-
सितं भुवनत्रयम् । सर्वभूतनिवासोसि वासुदेव
नमोस्तु ते ॥१३४॥ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण-
हिताय च । जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो
नमः ॥१३५॥ आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति
सागरम् । सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति

॥१३६॥एष निष्कण्टकः पन्था यत्र संपूज्यते हरिः। कुपथं तं विजानीयाद् गोविन्दरहितागमम् ॥१३७॥ सर्वदेवेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम्। तत्फलं समवाप्नोति स्तुत्वा देवं जनार्दनम्॥१३८॥ यो नरः पठते नित्यं त्रिकालं केशवालये। द्विकालमेककालं वा क्रूरं सर्वं व्यपोहति ॥१३९॥ दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्याः सर्वे सदा ग्रहाः। विलीयन्ते च पापानि स्तवे ह्यस्मिन्प्रकीर्तिते ॥१४०॥ येन ध्यातःश्रुतो येन येनायं पठितः स्तवः। दत्तानि सर्वदानानि सुराः सर्वे समर्चिताः ॥१४१॥ इह लोके परे वापि न भयं विद्यते क्वचित्। नाम्नां सहस्रं योऽधीते द्वादश्यां मम सन्निधौ ॥१४२॥ स निर्दहति पापानि कल्पकोटिशतानि च। अश्वत्थसन्निधौ पार्थ तुलसीसन्निधौ तथा ॥१४३॥ पठेन्नामसहस्रन्तु गवां कोटिफलं लभेत्। शिवालये पठेन्नित्यं तुलसीवनसंस्थितः॥१४४॥नरो मुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणेर्वचोयथा। ब्रह्महत्यादिकं घोरं सर्वपापं विनश्यति॥१४५॥ इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि दानधर्मे भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम्॥

श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्।

श्रीगणेशायनमः ॥ पुष्पदन्त उवाच ॥ महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तद्वसन्नास्त्वयि गिरः। अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥ अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि। स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥ मधुस्फीता वाचः परममम़ृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्। मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥ तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु। अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जड़धियः ॥४॥ किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च। अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥ ५ ॥ अजन्मानो

लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति। अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥ त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च। रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥ महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्। सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥ ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये। समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥ तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः परिच्छेत्तुं याता वनलमनलस्कंधवपुषः। ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥ अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैर व्यतिकरं दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्। शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः

स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥ अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः। अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥ यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः । न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥ अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः । स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥ असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः । स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥ मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्। मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥१६॥वियद्व्यापीतारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः

पृषत्लघुदृष्टः शिरसि ते। जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः॥१७॥रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति। दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥१८॥हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पद्योर्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् । गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥१९॥क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते। अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥२०॥ क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः । क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुषु फलदानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥ प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा । धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥२२॥स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृण-

वत्पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि। यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनादवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥२३॥ श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः। अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि॥२४॥ मनः प्रत्यक्चित्ते स विधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः। यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्॥२५॥त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च। परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरं न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह हि यत्त्वं न भवसि॥२६॥ त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकाराद्यैर्वर्णै-स्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति। तुरीयं ते धामध्वनि-भिरवरुन्धानमणुभिः समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम्॥२७॥ भवश्शर्वो रुद्रः पशुपतिर-थोग्रः सहमहांस्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्ट-कमिदम्। अमुस्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदवदविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः। नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नमःसर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥२६॥बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः। जनसुखकृते सत्त्वोत्पत्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥३०॥कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः। इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥३१॥ असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखिनी पत्रमुर्वी। लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥३२॥ असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य। सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥३३॥ अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः। स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च॥३४॥ महेशान्नापरो देवो महिम्नोनापरास्तुतिः। अघोरान्ना-

परो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३५ ॥ दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः । महिम्न-स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३६॥ कुसुम-दशननामा सर्वगन्धर्वराजः शिशुशशधरमौलेर्देव-देवस्य दासः । स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥ सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः । व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः-स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥३८॥ श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्बिषह-रेण हरप्रियेण । कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ३९ ॥ इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः । अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥

श्रीपुष्पदन्तगन्धर्वराजविरचितं श्रीशिवमहिम्नस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीशिव-मानसपूजा-स्तोत्रम् ।

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् । जातीचम्पकबिल्वपत्रसहितं पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्॥१॥सौवर्णे

नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् । शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥ छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा । साष्टाङ्गप्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥३॥आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः । सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥५॥

श्रीशिवमानसपूजा समाप्ता ॥

श्रीआदित्यहृदयस्तोत्रम् ।

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तयास्थितम् । रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥१॥ दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् । उपागम्याब्रवीद्रा-

ममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥२॥ राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम् । येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥ ३ ॥ आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रु-विनाशनम् । जयावहं जपन्नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥४॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् । चिन्ता-शोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥५॥ रश्मिमन्तं समु-द्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् । पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥६॥ सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मि-भावनः । एष देवासुरगणाँल्लोकान्पाति गभस्तिभिः ॥७॥ एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः । महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपांपतिः ॥ ८ ॥ पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः । वायु-र्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ ९ ॥ आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् । सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ॥१०॥ हरिदश्वः सहस्रा-र्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् । तिमिरोन्मथनः शम्भु-स्त्वष्टा मार्तण्डकोऽशुमान् ॥ ११ ॥ हिरण्यगर्भः शिशि-रस्तपनोऽहस्करो रविः । अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शंखः शिशिरनाशनः ॥ १२ ॥ व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः । घनवृष्टिरपां मित्रो विंध्यवीथीप्लवंगमः

॥१३॥ आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः। कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ १४ ॥ नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः। तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तु ते ॥१५॥ नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः। ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥१६॥ जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः। नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥१७॥ नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः। नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते॥१८॥ ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे। भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥१९॥ तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने। कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥ २० ॥ तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे। नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥२१॥ नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः। पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥२२॥ एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः। एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥२३॥ देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च। यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ॥२४॥ एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कांता-

रेषु भयेषु च । कीर्तयन्पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥२५॥ पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् । एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यति ॥ २६ ॥ अस्मिन्क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि । एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥ २७ ॥ एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा । धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥२८॥ आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् । त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥२९॥रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् । सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्॥३०॥ अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः । निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥३१॥

वाल्मीकीयरामायणोक्तं आदित्यहृदयम् समाप्तम् ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१॥ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये

श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पद्मनेमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥ ५ ॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या आन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥८॥गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं

जातवेदो म आ वह ॥ १३ ॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१४॥ तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥ १५॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥ पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे। तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥ १७॥ अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥१८॥ पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम्। प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥१९॥ धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विना ॥२०॥ वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा। सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥ २१ ॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः। भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥ २२॥ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ २३ ॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्। विष्णोः प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥२४॥ महालक्ष्मीं च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२५॥ पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं हृदि सन्निधत्स्व ॥२६॥ आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इव विश्रुताः। ऋषयः श्रियपुत्राश्च श्रीर्देवीदेवता श्रिया ॥२७॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते। धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥ २८ ॥ ऋणरोगादि दारिद्र्यं पापक्षुदपमृत्यवः। भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२९॥

ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं समाप्तम् ॥

श्रीनवग्रह-स्तोत्रम्।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥ दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥२॥ धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥३॥ प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं

बुधम् । सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥४॥ देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५ ॥ हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्र-प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥६॥ नीलाञ्जनसमा-भासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥७॥ अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रा-दित्यविमर्दनम् । सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रण-माम्यहम् ॥८॥ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्त-कम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥९॥ इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः। दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥१०॥ नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्। ऐश्वर्य-मतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥११॥

श्री व्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीहनुमान चालीसा ।

श्रीगुरुचरणसरोजरज निजमनमुकुर सुधार । बरणौं रघुवर-बिमलयश जो दायक फलचार ॥ बुद्धिहीन-तनु जानिकै सुमिरौं पवनकुमार । बलबुद्धिविद्या देहुमोहि हरहु कलेश विकार॥ जय हनुमान ज्ञान-

गुणसागर। जय कपीश तिहुंलोक उजागर ॥ राम-दूत अतुलितबलधामा। अञ्जनिपुत्र पवनसुत नामा॥ महावीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमतिके संगी॥ कंचनबरण बिराज सुवेशा। कानन कुंडल कुंचितकेशा॥ हाथ वज्र अरु ध्वजा विराजै। कांधे मूंजजनेऊ साजै॥ शंकरसुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जगवंदन॥ विद्यावान गुणी अति-चातुर। राम-काज करिबेको आतुर॥ प्रभुचरित्र सुनिबेको रसिया। राम लषण सीता मनबसिया॥ सूक्ष्मरूप धरि सियहिं दिखावा। विकटरूप धरि लंक जरावा॥ भीमरूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्रके काज संवारे॥ लाय सजीवन लषण जिवाये। श्रीरघु-बीर हरषि उर लाये॥ रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। कहा भरतसम तुम प्रिय भाई॥ सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। असकहि श्रीपति कंठ लगावैं॥ सनका-दिक ब्रह्मादिमुनीशा। नारद शारद सहसअहीशा॥ यम कुबेर दिगपाल जहांते। कविकोविद कहिसकैं कहांते॥ तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा॥ तुम्हरो मंत्र बिभीषण माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना॥ युग सहस्र

योजन जो भानू। लील्यो ताहि मधुरफल जानू॥ प्रभुमुद्रिका मेलि मुखमाहीं। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं॥ दुर्गम काज जगतके जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ रामदुवारे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिन पैसारे॥ सब सुख लहैं तुम्हारी शरना। तुम रक्षक काहूको डर ना॥ आपन तेज सम्हारौ आपै। तीनों लोक हाँकते काँपै॥ भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥ नाशै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥ संकटसे हनुमान छुड़ावैं। मन क्रम बचन ध्यान जो लावैं॥ सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा॥ और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन फल पावै॥ चारोंयुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥ साधु संतके तुम रखवारे। असुर निकंदन रामदुलारे॥ अष्टसिद्धि नवनिधिके दाता। अस बर दीन जानकी माता॥ रामरसायन तुम्हरे पासा। सादर तुम रघुपतिके दासा॥ तुम्हरो भजन रामको भावै। जन्म जन्मके दुख बिसरावै॥ अन्तकाल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई॥ और देवता चित्त न धरई। हनुमत

सेय सर्व सुख करई ॥ संकट हरै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बल बीरा ॥ जै जै जै हनुमान गोसाँई। कृपा करो गुरुदेवकी नाँई ॥ यह शतबार पाठ कर जोई। छूटहिं बन्दि महा सुख होई ॥ जो यह पढ़ै हनुमानचालीसा। होय सिद्धि साखी गौरी-शा ॥ तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै दास हृदय महँ डेरा ॥ दोहा—पवनतनय संकटहरन, मंगलमूरति-रूप। रामलषन सीतासहित, हृदय बसहु सुरभूप ॥

श्रीसंकटमोचन-हनुमानाष्टकम्।

बालसमय रवि लीललियो तब तीनहुं लोक भयो अँधियारो। ताहि सो त्रास भई जगको यह संकट काहु सो जात न टारो ॥ देवन आनि करी विनती तब छांड़ि दियो रवि कष्ट निवारो। को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ॥१॥ बालिकि त्रास कपीस बसे गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो। चौंकि महामुनि शाप दियो तब चाहिये कौन उपाय बिचारौ ॥ कै द्विजरूप लिवाय महाप्रभु सो तुम तासुके संकट टारो। को० ॥ २ ॥ अंगदके संग लेन गये सिय खोज कपीश यह बैन उचारो। जीवत ना बचि-हौ हमसो जु विना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ॥ हेरि

थके तटसिन्धुसबै तब लाय सियासुधि प्राण उबारो। को० ॥३॥ रावण त्रास दई सियको सब राक्षसि सों कहि शोकनिवारो। ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो॥ चाहत सीय अशोक सो आगि सु दै प्रभुमुद्रिका शोकनिवारो। को०॥४॥ बाण लग्यो उर लक्ष्मणके तब प्राण तजो सुत रावण मारो। लै गृह वैद्य सुषेन समेत तबै गिरिद्रोण सुवीर उपारो॥ आनिसजीवन हाथ दई तब लक्ष्मणके तुम प्राण उबारो।को०॥५॥ रावण युद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो। श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो॥ आनि खगेश तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो। को० ॥६॥ बन्धुसमेत जबै अहिरावण लै रघुनाथ पताल सिधारो। देविहिं पूजि भलीबिधिसो बलिदेउँ सबै मिलि मन्त्र विचारो॥ जाय सहाय भये तबही अहिरावण सैन्यसमेत संहारो। को० ॥७॥ काज किये बड़ देवनके तुम बीरमहाप्रभु देखि बिचारो। कौन सो संकट मोर गरीबको जो तुमसो नहिं जात है टारो॥ बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो। को० ॥ ८ ॥ दोहा—लाल देह

लाली लसै, अरुधरि लाल लंगूर। बज्रदेह दानव-दलन, जय जय जय कपिसूर॥

सप्तश्लोकी गीता।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥१॥ स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः॥२॥ सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥३॥ कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः। सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥४॥ ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्। छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥५॥ सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च। वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्॥६॥ मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः॥७॥

श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सप्तश्लोकीगीता समाप्ता ॥

चतुःश्लोकी भागवतम्।

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम्। सरहस्यं

तदङ्गञ्च गृहाण गदितं मया ॥ यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः । तथैव तत्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ॥ अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत् सदसत्परम् । पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥ इति मांहात्म्यम् ।। ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि । तद्विद्यादात्मनो मायां यथाभासो यथातमः ॥ १ ॥ यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु । प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ॥२॥ एतावदेव जिज्ञास्यं तत्वजिज्ञासुनाऽत्मनः । अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा ॥३॥ एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना । भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित् ॥४॥

श्रीमद्भागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां द्वितीयस्कन्धे भगवद्ब्रह्मसंवादे चतुःश्लोकी भागवतम् समाप्तम् ॥

एकश्लोकी रामायण ।

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम् ।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ॥
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम् ।
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धिरामायणम् ॥१॥

गरुड़-स्तुतिः ।

श्रीविष्णुवाहं प्रणमामि भक्त्या सर्पाशनं दुःखहरं

खगेशम् । मनोहरं वायुसमानवेगं छन्दोमयं ज्ञान-
घनं प्रशान्तं ॥ विष्णुपत्राय शान्ताय बलबुद्धियुताय
च । पक्षीन्द्रायातिवेगाय गरुड़ाय नमोनमः ॥

श्रीहनुमत्स्तुतिः ।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरि-
ष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा
नमामि ॥ उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः
शोकवह्निं जनकात्मजायाः । आदाय तेनैव ददाह
लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

बलिवैश्वदेव ।

एक साथ जिनकी रसोई होती है उसमें बलिवैश्वदेव प्रथम एक बार करे। पृथ्वीपर जलसे नीचे लिखे आकारका एक वित्तेका मण्डल बनावे। पश्चात् संकल्पवाक्यके अन्तमें "मम गृहे पंचसूनाजनितसकलदोषपरिहारपूर्वक-नित्यकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं वैश्वदेवाख्यं पंच महायज्ञं करिष्ये" कह कर सङ्कल्प छोड़े। पश्चात् अग्निपात्रमें ७, जलपात्र के समीप ३ और मण्डलमें २० आहुति अङ्कोके स्थानपर रखे।

अग्निपात्रमें (नमक रहित दे)।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम । ॐ प्रजापतये
स्वाहा इदं प्र० । ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा इदं गृ० । ॐ
कश्यपाय स्वाहा इदं क० । ॐ अनुमतये स्वाहा इदं
अ० । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा इदं वि० । ॐ

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अ० ॥ जलपात्रके समीप।
ॐ पर्जन्याय नमः इदं पर्जन्याय न मम। ॐ अद्भ्यो
नमः इदं अ०। ॐ पृथिव्यै नमः इदं पृ० ॥

मण्डलमें।

ॐ धात्रे नमः इदं धात्रे न मम १। ॐ विधात्रे नमः
इदं वि० २। ॐ वायवे नमः इदं वा० ३। ॐ वायवे
नमः इदं वा० ४। ॐ वायवे नमः इदं वा० ५। ॐ
वायवे नमः इदं वा० ६। ॐ प्राच्यै नमः इदं प्रा०
७। ॐ अवाच्यै नमः इदं अ० ८। ॐ प्रतीच्यै नमः
इदं प्र० ९। ॐ उदीच्यै नमः इदं उ० १०। ॐ ब्रह्मणे
नमः इदं ब्र० ११। ॐ अन्तरिक्षाय नमः इदं अ०
१२। ॐ सूर्य्याय नमः इदं सू० १३। ॐ विश्वेभ्यो
देवेभ्यो नमः इदं वि० १४। ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो
नमः इदं वि० १५। ॐ उषसे नमः इदं उ० १६।
ॐ भूतानांपतये नमः इदं भू० १७। (कण्ठी कृत्वा) ॐ
हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो नमः इदं हन्त० १८।
(अपसव्य) ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः इदं पि० १९।
(सव्य होकर बचे हुए अन्नसे) ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः
इदं य० २०॥

मण्डलम् ।

ईशानकोण — पूर्व — अग्निकोण

अग्नि पात्र O

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ॐ प्रजापतये स्वाहा ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा ॐ कश्यपाय स्वाहा ॐ अनुमतये स्वाहा ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा

७ प्राच्यै नमः

३ वायवे नमः

विधात्रे नमः २

(कण्ठी कृत्वा)

१८ हन्तते सनकादि-
मनुष्येभ्यो नमः

भूतानांपतये नमः १७

उषसे नमः १६

६ वायवे नमः

१० उदीच्यैनमः

(सव्य) २०. यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः

१ धात्रे नमः

१३ सूर्याय नमः

१२ अन्तरिक्षाय नमः

११ ब्रह्मणे नमः

१५ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः

१४ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः

वायवे नमः ४

अव।च्यै नमः ८

(अपसव्य) पितृभ्यः स्वधा नमः १९

५ वायवे नमः

९ प्रतीच्यै नमः

उत्तर — वायव्यकोण

दक्षिण — नैऋत्यकोण

पर्जन्याय नमः १ O जलपात्र

अद्भ्यो नमः २

पृथिव्यै नमः ३

गोग्रास, श्वान, काक, अतिथि, पिपीलिकादि पञ्चबलि दे ।

पश्चिम

पञ्चबलि। (सव्यसे करे)।

गोग्रास (पत्तेपर)— सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः । प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥ इदमन्नं गोभ्यो नमः ॥

श्वानबलि (पत्तेपर)— द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥इदमन्नं श्वभ्यां नमः ॥

काकबलि (पृथ्वीपर)— ऐन्द्रवारुणवायव्याः सौम्या वै नैर्ऋतास्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमावन्नं मयार्पितम् ॥ इदमन्नं वायसेभ्यो नमः ॥

अतिथिबलि (पत्तेपर)— देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाश्च यक्षोरगदैत्यसंघाः । प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् ॥ इदमन्नं देवादिभ्यो नमः ॥

पिपीलिका, कीट, पतङ्ग-बलि । (पत्तेपर) ।

पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः । तृप्त्यर्थमन्नं हि मया प्रदत्तं तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु ॥ इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो नमः ॥

श्राद्ध-विधिः ।

श्राद्धकर्त्ता श्राद्धके उपयुक्त ब्राह्मणोंको पहले दिन निमन्त्रित करे । वार्षिक

तिथिको एकोदिष्ट और महालय पक्षमें पार्वणादि श्राद्ध करे। यदि इस प्रकार नहीं कर सके तो पितृतृप्तिके लिये साङ्कल्पिक श्राद्ध तथा तर्पण अवश्य करे।

न जातीकुसुमैर्विद्वान् बिल्वपत्रैश्च नार्चयेत्।
सुरभिनागकर्णाद्यै र्हयारिकांचनारकैः॥
बिल्वपत्रैर्नार्चयेत्तान् पितॄन् श्राद्धविगर्हितैः।
तद् भुञ्जन्त्यसुराः श्राद्धं निराशैः पितृभिर्गतम्॥
सर्वाणि रक्तपुष्पाणि निषिद्धान्यपराणि तु।
वर्जयेत् पितृश्राद्धेषु केतकीकुसुमानि च॥ वृ० पा० स्मृ०॥

श्राद्धमें बिल्वपत्र, मालती, चम्पा, नागकेशर, कर्ण, जवा, कनेर, कचनार, केतकी और समस्त रक्तपुष्प वर्जित हैं। इन पुष्पोंसे पूजन करनेसे पितरोंको नहीं मिलता है उसे राक्षस ग्रहण करते हैं।

खञ्जो वा यदि वा काणो दातुः प्रेष्योऽपि वा भवेत्।
हीनातिरिक्तगात्रो वा तमप्यपनयेत् पुनः॥ मनुस्मृ०॥

लङ्गड़ा, काना, दाताका दास, अङ्गहीन और अधिक अङ्ग वाला निषिद्ध है।

अस्रुं गमयति प्रेतान् कोपोऽरीननृतं शुनः।
पादस्पर्शस्तु रक्षांसि दुष्कृतीनवधूननम्॥ मनु०॥

श्राद्धके समय आंसू आनेसे पाक प्रेतोंको, क्रोधसे शत्रुओंको, झूठ बोलनेसे कुत्तोंको, पैरसे छूनेसे राक्षसोंको और पाक उछालनेसे पापियोंको मिलता है।

यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे।
तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ विप्राणां पादशौचने॥

हे पाण्डवश्रेष्ठ! कार्तिकी पूर्णिमाको पुष्करतीर्थमें कपिला गौके दानका जो फल होता है वही फल ब्राह्मणोंके पैर धोनेसे होता है।

श्राद्धम्।

कुशाके आसनपर पूर्वाभिमुख बैठकर बायीं कटिमें मोटक तथा बायीं अना-

मिका अंगुलीकी जड़में तीन और दाहिनीमें दो कुशाकी पवित्री धारण कर आचमन प्राणायाम करके कुशा लेकर नीचे लिखे मन्त्रसे सामग्रीको पवित्र करे।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ दृष्टि-स्पर्शनदोषात् पाकादीनां पवित्रतास्तु ॥

यव पुष्पसे **ॐ भूम्यै नमः** बोलते हुए तीनबार पृथ्वीका पूजन करे।

पिताके श्राद्धका प्रतिज्ञा सङ्कल्प ।

ॐ अद्य विक्रमसंवत्सरे (अमुक) **संख्यके** (अमुक) **मासे** (अमुक) **पक्षे** (अमुक) **तिथौ** (अमुक) **वासरे** (अमुक) **गोत्रस्य अस्मत्पितुः** (अमुक—शर्मणः, वर्मणः, गुप्तस्य) **साङ्कल्पिकश्राद्धं तदङ्गत्वेन बलिवैश्वदेवाख्यं पंचबलिकर्म च करिष्ये ।**

पितुः की जगह दादाको पितामहस्य परदादाको प्रपितामहस्य कहे।

माताके श्राद्धका प्रतिज्ञा सङ्कल्प ।

ॐ अद्य विक्रमसंवत्सरे(अमुक) **संख्यके** (अमुक)**मासे** (अमुक) **पक्षे** (अमुक) **तिथौ** (अमुक) **वासरे** (अमुक) **गोत्रायाः मातुः** (अमुकी) **देव्याः साङ्कल्पिकश्राद्धं तदङ्गत्वेन बलिवैश्वदेवाख्यं पञ्चबलिकर्म च करिष्ये ।**

मातुः की जगह दादीको पितामह्याः परदादीको प्रपितामह्याः कहे ।

पश्चात् "बलिवैश्वदेव तथा पंचबलि" पूर्वोक्त विधिसे करके

"अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख" होकर बायां घुटना मोड़कर नीचे लिखे मन्त्रसे दशों दिशाओंमें तिल छोड़े ।

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम ।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥

पिताके आसनका सङ्कल्प ।

ॐ अद्य (अमुक) गोत्रस्य पितुः (अमुक -शर्मणः, वर्मणः, गुप्तस्य) **साङ्कल्पिकश्राद्धे इदमासनं ते स्वधा ॥**

पितुः की जगह दादाको पितामहस्यं परदादाको प्रपितामहस्य कहे ।

माताके आसनका सङ्कल्प ।

ॐ अद्य (अमुक) **गोत्रायाः मातुः** (अमुकी)**देव्याः साङ्कल्पिकश्राद्धे इदमासनं ते स्वधा ॥**

मातुः की जगह दादीको पितामह्याः परदादीको प्रपितामह्याः कहे ।

पितृ-सङ्कल्प ।

आसनपर गन्ध, पुष्प, ताम्बूल, पूगीफल, यज्ञोपवीत और वस्त्रादि रखे ।

ॐ अद्य(अमुक) **गोत्र पितः** (अमुक–शर्मन्, वर्मन्, गुप्त) **एतानि गन्धपुष्पताम्बूलपूगीफलयज्ञोपवीतवासांसि तेस्वधा॥**

"पितः" की जगह दादाको "पितामह" परदादाको "प्रपितामह" कहे ।

मातृ-सङ्कल्प ।

आसनपर गन्ध, पुष्प, ताम्बूल, पूगीफल, सिन्दूर और वस्त्रादि रखे ।

ॐ अद्य (अमुक) **गोत्रे मातः** (अमुकी) **देवि एतानि गन्ध-पुष्प-ताम्बूलपूगीफल-सिन्दूर-वासांसि ते स्वधा ॥**

मातः की जगह दादीको पितामहि परदादीको प्रपितामहि कहे ।

पश्चात् पत्तेपर पाक लेकर नीचे लिखे वाक्यसे बायीं ओर पृथ्वीपर रखे ।

ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः ।

पात्रमें पाक परोस कर पितृ आसनके सम्मुख रखे । उस पात्रके पूर्वमें जलपात्रादि तथा पत्तेपर घृत रखे । पश्चात् पितृ-आसन तथा अन्नपात्रादिके चारों ओर जलसे मण्डल करे । फिर अन्नपात्रका स्पर्श करते हुए बायें हाथको पृथ्वीपर पात्रके बायीं तरफ उलटा तथा उसपर दाहिने हाथको दाहिनी तरफ उलटा रखकर नीचे लिखा मन्त्र बोले ।

ॐ पृथ्वी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाᳬसुरे ॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम् ॥

बायें हाथको वैसे ही रखते हुए दाहिने हाथके अंगूठेसे अन्नादिका स्पर्श करे ।

इदमन्नम्-(अन्नस्पर्श) । **इमा आपः**-(जलस्पर्श) । **इदमाज्यम्**-(घृतस्पर्श) । **इदं कविः**-(फिर पाक स्पर्श करे) ॥

नीचे लिखे वाक्यसे अन्नपात्रके चारों ओर रक्षाके लिये तिल छोड़े ।

ॐ अपहता असुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः ।

पितृ-सङ्कल्प ।

ॐ अद्य (अमुक) **गोत्राय पित्रे** (अमुक-शर्मणे, वर्मणे, गुप्ताय) **इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा ॥**

पित्रे की जगह दादाको पितामहाय परदादाको प्रपितामहाय कहे ।

मातृ-सङ्कल्प।

ॐ अद्य (अमुक) गोत्रायै मात्रे (अमुकी) देव्यै इदमन्नं सोपस्करं ते स्वधा ॥

मात्रे की जगह दादीको पितामह्यै परदादीको प्रपितामह्यै कहे। पश्चात् "सव्य तथा पूर्वाभिमुख" होकर आशीर्वादके लिये प्रार्थना करे।

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥

"अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख" होकर नीचे लिखे सङ्कल्पसे दक्षिणा देवे।

ॐ कृतैतत् श्राद्धप्रतिष्ठार्थं दक्षिणाद्रव्यं यथानाम-गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥

"सव्य तथा पूर्वाभिमुख" होकर नीचे लिखी प्रार्थना करे।

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु पित्रादीनां प्रसादतः ॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

काक और श्वानबलि छोड़कर बाकी सभी बलि गोको दे। पश्चात् ब्राह्मणोंके पैर धोकर तथा आसनपर बैठाकर पाक परोसकर उनसे भोजन करनेकी प्रार्थना करे। श्राद्धकर्ता पाकका गुण वर्णन करते हुए नम्रतापूर्वक बार बार परोसे।

ब्राह्मण पाककी प्रशंसा नहीं करें। भोजनके पश्चात् ब्राह्मणोंके चन्दनसे तिलक करके दक्षिणा देकर उनसे पूछे "शेषान्नं किं कर्तव्यम्" ब्राह्मण "इष्टैः सह भोक्तव्यम्" कहें। पश्चात् पितृतृप्तिके लिये तर्पण करके काकबलि कौवेको और श्वानबलि कुत्तेको देकर इष्टमित्रों सहित भोजन करे।

भोजन-विधिः ।

भोजनके पहले भगवद्-दर्शन कर तुलसी चरणामृतादि लेना चाहिये। दूसरा वस्त्र लेकर बलिवैश्वदेव करके भोजनपात्रके चारों ओर जलसे ब्राह्मण चौकोण, क्षत्रिय त्रिकोण और वैश्य गोल मण्डल बनावे। बायें हाथसे भोजन तथा जल पान नहीं करे। यदि नीचे लिखी समस्त विधि नहीं कर सके तो "आपोशानके" तीन ग्रास अवश्य देने चाहिये।

आपोशान ।

नीचे लिखे प्रत्येक मन्त्रसे एक एक ग्रास देकर जल छोड़े।

ॐ भूपतये स्वाहा १। ॐ भुवनपतये स्वाहा २। ॐ भूतानांपतये स्वाहा ३॥ पश्चात् **"अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥"** बोलकर आचमन करे।

नीचे लिखे प्रत्येक मन्त्रसे ग्रास लेकर आचमन करके भोजन करे।

ॐ प्राणाय स्वाहा १। ॐ अपानाय स्वाहा २। ॐ व्यानाय स्वाहा ३। ॐ उदानाय स्वाहा ४। ॐ समानाय स्वाहा ॥५॥

भोजनके अन्तमें **"ॐ अमृतपिधानमसि स्वाहा।"** बोलकर आचमन करके उच्छिष्ट अन्नको नीचे लिखे मन्त्रसे दक्षिणमें फेंक दे।

मद्भुक्तोच्छिष्टशेषं ये भुञ्जते पितरोऽधमाः ।
तेषामन्नं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥

मुख-शुद्धिके लिये सोलह कुल्ले करके नीचे लिखे मन्त्र बोले ।

अगस्त्यं कुम्भकर्णञ्च शनिञ्च बड़वानलम् ।
आहारपरिपाकाय संस्मरामि वृकोदरम् ॥
आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः ।
समुद्रः शोषितो येन समेऽगस्त्यः प्रसीदतु ॥

सायं-दीपस्तुतिः ।

जिसके घरमें सूर्यास्तसे सूर्योदय तक दीपक जलता है, उसके घरमें दरिद्रता नहीं रहती है । दीपक जलाकर नीचे लिखी प्रार्थना करके भजनादि करे ।

दीपो ज्योतिः परंब्रह्म दीपो ज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं सन्ध्यादीप नमोऽस्तु ते ॥
शुभं करोतु कल्याणं आरोग्यं सुखसम्पदाम् ।
मम बुद्धिप्रकाशश्च दीपज्योति र्नमोऽस्तु ते ॥

शयन-विधिः ।

रात्रिमें शयन करनेके समय दिनमें जो कार्य किये हों उनको स्मरण करे । यदि कोई त्रुटि हो गयी हो तो उसके निमित्त यथाशक्ति भगवानका नाम लेकर क्षमा प्रार्थना करे और मनमें दृढ़ सङ्कल्प करे जिससे फिर त्रुटि न हो । नीचे लिखा स्मरण करके पूर्व या दक्षिणकी ओर शिर करके भगवानका नाम लेते हुए निद्रा ले ।

जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः । अटव्यां नारसिंहश्च सर्वतः पातु केशवः ॥ अगस्तिर्माधव-श्चैव मुचुकुन्दो महाबलः । कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः॥ सर्पापसर्प भद्रं ते दूरं गच्छ महाविष । जनमेजयस्य यज्ञान्ते आस्तीकवचनं स्मर ॥ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्। निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती । तासां स्मरण-मात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः ॥ कफल्लम् ३॥

तीर्थ सूची ।

तीर्थका अर्थ है "तरति पापादिकं यस्मात्" जिससे पापादिकोंसे छुटकारा हो जाय । तीर्थ तीन प्रकारके हैं । जङ्गम, मानस और स्थावर । ब्राह्मण तथा सज्जन गण ही जङ्गम तीर्थ हैं। गोस्वामी तुलसीदासजीने इस तीर्थका वर्णन बड़े ही सुन्दर शब्दोंमें किया है ।

मुदमंगलमय सन्त समाजू, जो जग जङ्गम तीरथराजू ।
रामभगति जहँ सुरसरि धारा, सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा ॥
विधि निषेध मय कलिमल हरनी, करम कथा रविनन्दिनी बरनी । हरिहरकथा बिराजति वेनी,सुनत सकल मुदमंगलदेनी॥

बट विश्वास अचल निजधर्मा, तीरथराज समाज सुकर्मा ।
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ, देइ सद्यफल प्रगट प्रभाऊ ॥

सत्य, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, दया, दान, स्वाध्याय, मनको वशमें रखना तथा सन्तोष आदि मानस तीर्थ हैं। स्थावर तीर्थोंकी जितेन्द्रिय तथा शुद्धचित्त होकर यात्रा करनेसे उपर्युक्त जङ्गम तथा मानस तीर्थ भी सुलभ हो जाते हैं। यों तो भारतवर्ष में अनेक तीर्थ हैं परन्तु उनमें विशेष महत्व इनका है।

चारधाम—(बद्रीनारायण, द्वारिका, रामेश्वर, जगन्नाथ)। द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग—(सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ममलेश्वर, केदारनाथ, भीमशंकर, विश्वनाथ, अम्बकेश्वर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, घुष्मेश्वर)। सप्तपुरी—(अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, उज्जैन, द्वारिका)। सप्तप्रयाग—(प्रयागराज, देवप्रयाग, विष्णुप्रयाग, कर्णप्रयाग, शोणप्रयाग, राघवप्रयाग)। सप्तगंगा—(भागीरथी, वृद्धगंगा, कालिन्दी, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा, वेणी)। सप्तक्षेत्र—(कुरुक्षेत्र, हरिहरक्षेत्र, प्रभासक्षेत्र, रेणुकाक्षेत्र, भृगुक्षेत्र, वाराहक्षेत्र, पुरुषोत्तमक्षेत्र)। नदी—गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी, तुङ्गभद्रा, ब्रह्मपुत्र, वसुधारा, गण्डकी, यमुना, गोमती, सरयू, ताम्रवर्णी, कृष्णगङ्गा, गढ़गंगा, गंगासागर, गोदावरी, रेवा, तापती, क्षिप्रा, चन्द्रभागा, सिन्धु, पयोष्णी, मन्दाकिनी, वज्रा, त्रिजटेश्वरी। सिद्धपीठ—लक्ष्मी, तुलजापुरी, हिङ्गला, ज्वालाजी, शाकम्भरी, विन्ध्यवासिनी, चन्द्रला, कौशिकी, सुन्दरी, योगेश्वरी, कामाख्या, स्थूला,

चण्डमुण्डी, नकुलेश्वरी, त्रिशूला, सूक्ष्मा, स्वायम्भुवी, विश्वेशा, भीमेश्वरी उत्पलाक्षी, काली, चिन्तपूर्णिनी, महाभागा, चण्डी, कात्यायिनी, दिक्करवासिनी, पूर्णेश्वरी। गुल्टाजी, योगमाया, जीर्णमाता, जयन्ती, मुम्बादेवी, खैराभवानी, चामुण्डी, वाणे-श्वरी, उलयचण्डी, मसानींमाता, पशुपतिनाथ, अमरकंटक, अमरनाथ, पुष्करराज, कालाहस्ती, नाथद्वार, वृन्दावन, नैमि-षारण्य, गया, गिरिनार, नवद्वीप, राजगिरि, लोहार्गल, चित्र-कूट, तृप्तबालाजी, डाकोरजी, जनकपुर, पन्नारसिंह, ताड़के-श्वर, भुवनेश्वर, साक्षीगोपाल, धनुष्कोटि, श्रीरंगम्, ऋषिकेश, गढ़मुक्तेश्वर, चिदम्बरम्, त्रिचनापल्ली, गुप्तकाशी, मदुरा, मुंगेर, कन्याकुमारी, वशिष्ठाश्रम, शिवडोल, परशुराम, ओंका-रेश्वर, सांभर, ढ़ोसी, श्रृंगरामपुर, शुक्रतीर्थ, वद्ताल, अरेराज, कुशीनगर, कुशेश्वर, गोरखनाथ, गौतमक्षेत्र, वंकेश्वर, वाराह अवतार, वैशाली, अश्वक्रान्त, कान्तानगर, जसरेश्वर, विदुर-कुटी, उमरखेड, महाबलेश्वरम्, कालिञ्जर, करला, कौंडिन्यपुर, चरणतीर्थ, पद्मतीर्थ, मंत्रालया, सज्जनगढ़, अमरावती, कि-ष्किन्धा, गोकर्ण, गौतमेश्वर, घण्डी, इलौरा, भद्राचलम्, राम-पुर, सुखदेवाश्रम, ततापनी, प्राणनाथ, महाभैरव।

सूचना—मेरी इच्छा तीर्थोंकी विषद तालिका बनानेकी है पुस्तक मंगानेवाले तीर्थवासी तथा अन्य अनुरागी सज्जनोंसे प्रार्थना है कि वे उपर्युक्त तथा अन्य प्रसिद्ध तीर्थों का विशेष विवरण भेजनेकी कृपा करें।
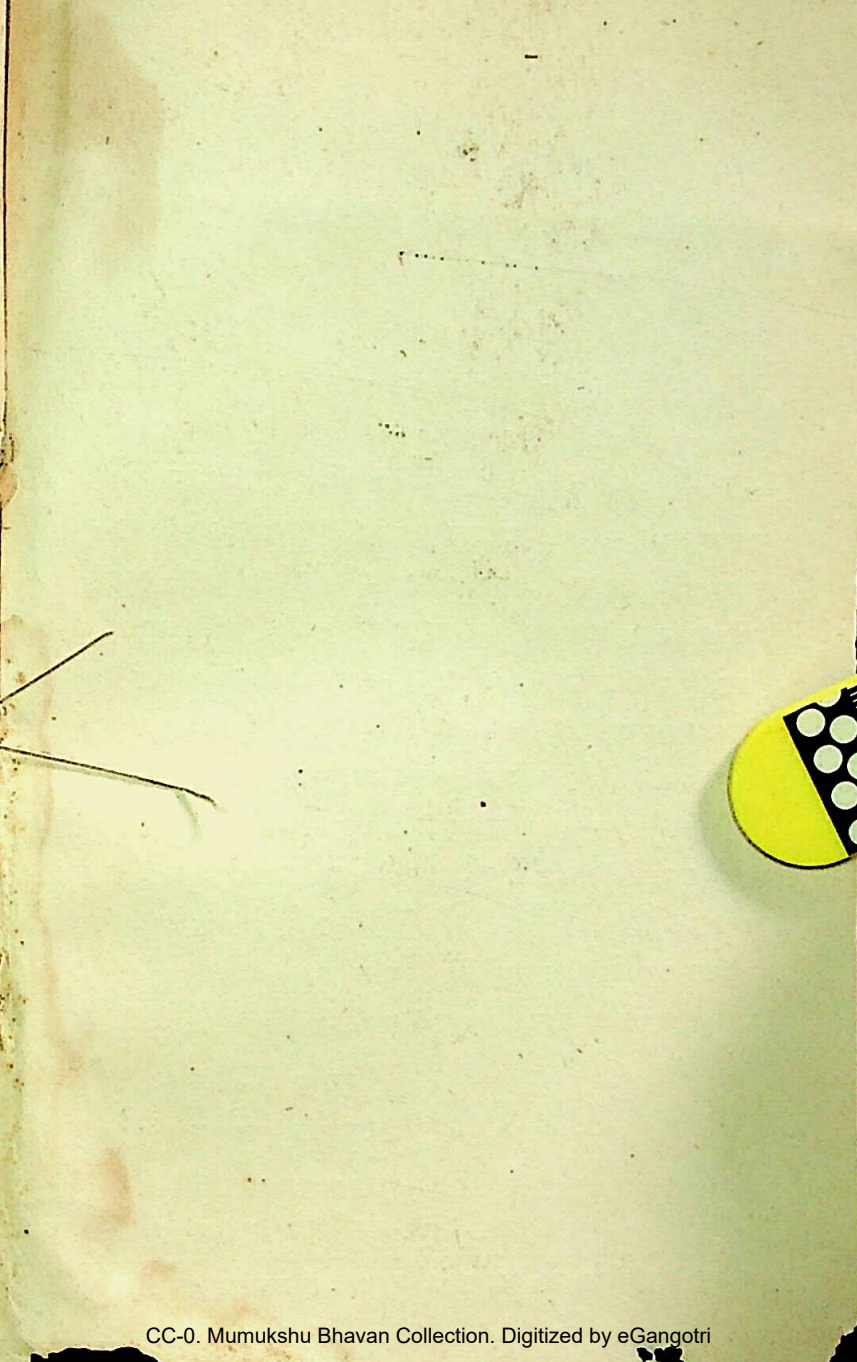
पाठकों से निवेदन ।

पाठकोंसे प्रार्थना है कि वे इस पुस्तकको आदिसे अन्त तक पढ़कर यथा शक्ति कर्म करें जिससे पुस्तक भी उपयोगमें आवे और पोस्टेजके दो आने भी सार्थक हों। इस पुस्तकके सभी विषय प्रायः वृद्धमनु, मनु, याज्ञवल्क्य, पराशर, बौधायन, भृगु, अत्रि आदि स्मृतियों तथा आह्निकसूत्र, कात्यायन, सांख्यायन आदि गृह्यसूत्र, स्कन्द, विष्णु, नारद, पद्म, शिव तथा मार्कण्डेय आदि पुराण और आचारमयूख, नित्याचार प्रदीप, रत्नावली, वाराहीसंहिता आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों से लिये गये हैं । इन विषयोंको विस्तार पूर्वक अध्ययन करनेके लिये उपर्युक्त ग्रन्थोंकी सहायता लें । २५००० प्रतियां छपनेसे कुछ पुस्तकोंमें प्रयत्न करने पर भी कुछ मात्रायें टूट गयी हैं पाठक उन्हें सुधार कर पढ़ें । यदि और कोई त्रुटि रह गयी हो तो उसके लिये क्षमा करते हुए सूचित करनेकी कृपा करें, जिससे अगले संस्करणमें सुधारनेका प्रयत्न किया जाय ।

प्रकाशक—

ठाकुरदास सुरेका ।

हरदयाल बाबू लेन,

सलकिया (हवड़ा) ।

मुद्रक—दुलीचंद परवार, जवाहर प्रेस, १६।१, हरीसन रोड, कलकत्ता ।